हीरक जयंती समारोह

1963-2023

संस्मरण MEMOIR

पं. जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय,

रायपुर (छत्तीसगढ़)

Pt. JAWAHAR LAL NEHRU MEMORIAL MEDICAL COLLEGE,

Raipur (Chhattisgarh)

हीरक जयंती समारोह
1963-2023

Organizing Committee Diamond Jubilee 1963 - 2023

Pandit Jawahar Lal Nehru Memorial Medical College, Raipur (Chhattisgarh)

Organizing Chairman	Dr Tripti Nagaria
Co Chairman	1. Dr Lalit Shah
	2. Dr Manik Chatterjee
	3. Dr Mahesh Sinha
Organizing Secretary	Dr Rakesh Gupta
Organizing Treasurer	Dr Anil Jain
Catering committee	Dr Kamleshwar Agrawal, Dr Ashok Bajaj
Registration	Dr Lalit Shah, Dr Rajesh Sharma,
	Dr Shailendra Kesharwani, Dr Anil Jain
Venue Incharge	Dr Satish Rathi, Dr Vikas Agrawal, Dr O P Lekhwani
Website & E communication	Dr Asha Jain, Dr Digvijay Singh
Cultural Committee	Dr Javed Ali Khan, Dr Subhash Agrawal
Sports Committee	Dr Ajay Pathak, Dr Rajesh Kalda, Dr Harish Rathore,
	Dr Ashok Agrawal
Literary committee	Dr Ajay Mohan Sahay,Dr Arvind Saxena
Fine Arts	Dr Tripti Nagaria, Dr Dilip Verma,
	Dr Kalyan Swaroop Mishra

हीरक जयंती समारोह

1963-2023

प्रधान संपादक

संजय शर्मा दिनेश मिश्रा

संपादक - मंडल

मानिक चटर्जी
सांवर अग्रवाल
महेश सिन्हा
विजय मखीजा
कल्याण स्वरूप मिश्रा (ग्राफिक्स)
अनूप वर्मा
प्रकाश चौहान
संदीप पांडे
दिव्या मल्होत्रा
प्रणिता शर्मा
विनया मायस्कर
स्मित श्रीवास्तव

कवर पेज ग्राफिक- अनुमेहा नंदा

विश्वभूषण हरिचंदन
Biswabhusan Harichandan

राज्यपाल, छत्तीसगढ़
Governor, Chhattisgarh

राजभवन, रायपुर
Rajbhavan, Raipur

No./149/PRO/RS/2023
Raipur, 13 Oct 2023

Message

I am extremely happy to know that 'Pandit Jawaharlal Nehru Medical College, Raipur' has completed 60 years of establishment and celebrating Diamond Jubilee on 23rd and 24th December 2023.

Pt. Jawahar Lal Nehru Medical College Raipur is the first medical college of Chhattisgarh. This college has created a unique identity in the field of medicine by continuously setting the steps of success. I hope that this medical college will bring glory to the country and the state with its achievements in future also.

My heartiest congratulations for the publication of the Souvenir on the occasion of Diamond Jubilee.

(Biswabhusan Harichandan)

Dr. A. K. Chandrakar
M.S. (Ophthalmology)

Vice Chancellor
Pt. Deendayal Upadhayay Memorial Health Sciences & Ayush University of Chhattisgarh
Atal Nagar, Sector-40, Raipur (C.G.)
Tel.: 0771 - 2973001

No./DUSH/2023/8246 **Raipur, Dated: 05/10/2023**

Message

Dear Faculty, Alumni, Staff, and Students,

Warm greetings to you all!

It is with immense pride and joy that the institution is celebrating the Diamond jubilee. Sixty years ago, this institution was founded with a vision of excellence in medical education, research, and healthcare, and over the decades, we have upheld and surpassed that vision.

Sixty years of commitment, dedication, and tireless efforts have made us who we are today - a renowned center of medical education and innovation. This milestone is a testament to the hard work and perseverance of generations of students, faculty, and staff who have contributed to the growth and success of this institution. I Feel proud and thankful to be a part of this College as a Faculty and Dean

As we look back on our journey, we are filled with gratitude for all the support, wisdom, and inspiration we have received from our esteemed alumni, our outstanding faculty, our dedicated staff, and our brilliant students. Together, we have achieved remarkable milestones, and together, we will continue to push the boundaries of medical knowledge and service to humanity.

The Diamond jubilee is not just a celebration of the past; it is also a pledge for the future. We are committed to maintaining the highest standards of medical education and healthcare, to fostering innovation and research, and to serving our community with compassion and excellence.

On this auspicious occasion, let us come together, renew our commitment to the values and principles that have guided us for Sixty years and look forward to a future filled with even greater achievements and contributions to the field of medicine.

I extend my heartfelt thanks to all of you for being a part of this incredible journey.

(Dr. A.K. Chandrakar)
Vice-Chancellor
Pt. Deendayal Upadhayay Memorial Health Sciences & Ayush University of Chhattisgarh

DR. VISHNU DUTT
M.D. (Radiodiagnosis)
Director Medical Education

DIRECTORATE OF MEDICAL EDUCATION
NORTH BLOCK, SEC-19, HEALTH BUILDING,
2ND FLLOR, ATAL NAGAR, NAVA RAIPUR,
CHHATTISGARH- 492002
E-mail : cgdmc@rediffmail.com

D.O Letter No. 10140

Nava Raipur, Dated 13/10/2023

संदेश

पंडित जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर इस वर्ष अपनी ''हीरक जयंती'' मना रहा है। इस महाविद्यालय को प्रदेश के सबसे पुराने चिकित्सा महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है, जहॉ से अनेक प्रतिभाशाली चिकित्सक देश विदेश में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान कर रहें है। किसी भी महाविद्यालय के लिए ''हीरक जयंती'' अत्यंत गर्व का विषय है। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका निश्चित रूप से नए आयाम स्थापित करेगी तथा सुधिजनो को महाविद्यालय के गौरवशाली इतिहास एवं परंपराओं से अवगत करायेगी।

महाविद्यालय के ''हीरक जयंती'' आयोजन एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. विष्णुदत्त
संचालक चिकित्सा शिक्षा
छत्तीसगढ़

तृप्ति नागरिया
अध्यक्ष
महाविद्यालय,
हीरक जयंती समारोह
1963–2023

अधिष्ठाता,
पं ज.ने स्मृति चिकित्सा

रायपुर (छ.ग.)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि पं. जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय अपने स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण कर हीरक जयंती वर्ष मना रहा है। इस गौरवमयी अवसर पर इस महाविद्यालय के सभी पूर्व एवं वर्तमान में अध्ययनरत छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

अपने इन 60 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में यह चिकित्सा महाविद्यालय लगातार उन्नति एवं प्रगति की ओर अग्रसर रहा है, जिसमें न सिर्फ प्रवेशित छात्रों की संख्या वरन भवन निर्माण एवं विस्तार तथा चिकित्सकीय सुविधाएँ शामिल है। विगत वर्षों की अनेक मधुर स्मृतियों को संकलित कर स्मारिका के रूप में प्रस्तुत करना उन पुराने क्षणों को जीवंत करने का एक प्रयास है, उम्मीद है। सभी एक बार पुनः स्मारिका के माध्यम से उन सुनहरे यादों एवं क्षणों को लम्बे समय तक स्मरण करेंगे ।

महाविद्यालय के स्थापना के हीरक जयंती के अवसर पर पुनः आप सभी का हार्दिक अभिनंदन एवं बधाई ।

Nagaria
31/x/23
अधिष्ठाता
पं.ज.ने. स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

Dr Rakesh Gupta
Hon Secretary
Organising committee
Diamond Jubilee Celebrations

It gives me immense pleasure to welcome you all on Diamond Jubilee of Pt JNM Medical College.
The town of Raipur has adopted vibrant new colours and is one of the fastest-growing smart cities in the country. Many new blocks have also propped up in the Medical College campus. Still,the campus evokes the same feelings of our era. Time moves fast and many events of college time linger in our memories .These memories are timeless treasures of our hearts. The students and Faculty teachers share a special bond . We learned the fundamental principles of medicine in the same lecture theatres.Our Almamater is a source of inspiration to all of us in pursuit of higher aims.

The organising committee is endeavouring hard to ensure that the event is a grand success. I request you all to grace the occasion and celebrate the Diamond Jubilee festival.

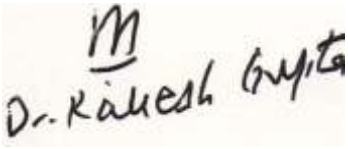

Hon Secretary
Organising committee
Diamond Jubilee Celebrations

अपनी बात

अविभाजित मध्यप्रदेश के जमाने में, 9 सितम्बर सन् 1963 को स्थापित, पंडित जवाहर लाल नेहरू स्मृति शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के 60 वर्ष पूरे होने के अवसर पर हीरक जयंती मनाना सिर्फ छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि मध्यप्रदेश और देश–विदेश के अनेक स्थानों में बसे चिकित्सकों के लिए बड़े ही गर्व का विषय है। किसी भी शैक्षणिक संस्थान के लिए 60 वर्ष का सफर पूर्ण करना एक विशेष महत्व रखता है। प्रदेश के सबसे बड़े और पुराने चिकित्सा महाविद्यालय की शुरुआत एम.बी.बी.एस. की 60 सीटों से हुई थी। वर्तमान में इस कॉलेज में स्नातक की 180 सीटें और हर विषय में स्नातकोत्तर की 130 सीटें हैं। यह वास्तव में गुणवत्ता और विश्वसनीयता का विस्तार है।

यादों का यह कारवां कई मोड़ों से गुजरता है,आयुर्वेदिक कॉलेज की एक बिल्डिंग से शुरू होकर नए भवन में तथा पुराने डी.के. अस्पताल से लेकर वर्तमान भवन में प्रवेश की लंबी कहानी है.महाविद्यालय के लिए 700 बिस्तरों वाले अस्पताल के संघर्षों में तो हमारी पीढ़ी भी भागीदार बनी थी। सन् 1995 में 700 बिस्तरों वाले बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर अस्पताल तक हुए परिवर्तनों की सुखद श्रृंखला है.

पिछले 60 वर्षों में शिक्षा प्राप्त हजारों छात्र–छात्राएं अपनी सेवाओं से अपना तथा महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। महाविद्यालय के एक छोटे से कालखंड में मैं भी एक विद्यार्थी के रूप में जुड़ा था, जिसकी स्मृतियां आज भी मन में अंकित हैं। यहां के क्लासरूम, ऑडिटोरियम, छात्रावास, विशाल मैदान जिसका उपयोग किसी न किसी रूप में किया जाता रहा। कॉलेज के एडमिशन से लेकर, पढ़ाई का तनाव, छात्रसंघ चुनावों की बातें, चुनावी एजेंडे, स्नेह सम्मेलन के दौरान रिहर्सल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गूंजती तालियां, आपसी कानाफूसियाँ, बनती–बिगड़ती जोड़ियां... सभी कुछ अभी भी वैसे ही यादों में है। पिछले 60 वर्षों में इस महाविद्यालय में देश को न जाने कितने अनमोल रत्न दिए हैं, जिन्होंने न केवल चिकित्सा बल्कि महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों, समाजसेवा, राजनीति, सेना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायीं तथा महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है। उन के योगदान, उनकी भूमिका, उनके संस्मरण को समेटे हुए यह स्मारिका आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर मिला है। उसे मैं बहुत सम्मान का विषय मानता हूं।

मैं अपने महाविद्यालय के प्रतीक चिन्ह में उद्धरित उक्ति का उल्लेख करना चाहूंगा 'सेवा, साधना, त्याग'। एक चिकित्सा छात्र के जीवन में पीड़ितों की निस्वार्थ सेवा, एक साधक की तरह अनवरत पढ़ाई और हर प्रकार के भौतिक सुखों का त्याग करते हुए लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास, यह उक्ति चिकित्सा छात्रों के लिए सार्थक और शतप्रतिशत सत्य साबित हुई है।

इस महाविद्यालय के विद्यार्थी न केवल शिक्षा में बल्कि सामाजिक जागरूकता एवं जिम्मेदारी के प्रति भी हमेशा सजग और संवेदनशील रहे हैं। चाहे भोपाल गैस कांड के समय भोपाल जाकर पीड़ितों की सेवा करनी हो, चाहे भूकंप–बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में मदद करनी हो, चाहे अपने ही 700 बिस्तरों के अस्पताल के लिए लम्बी लड़ाई लड़नी हो अथवा कोविड–19 जैसी विश्वव्यापी महामारी का कठिन काल हो, महाविद्यालय के विद्यार्थियों, चिकित्सकों ने समय– समय पर अपनी अविस्मरणीय भूमिका निभाई। कोविड–19 काल में तो अनेक चिकित्सकों ने अपनी जान की बाजी लगा कर भी उपचार में भूमिका अदा की।

एक बात और, अभी देश के अनेक हिस्सों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी होने से,जानकारी न होने से बीमारियों के कारण, उनसे बचाव तथा उनके उपचार के संबंध में अनेक प्रकार के अंधविश्वास एवं भ्रामक परम्पराएं मौजूद हैं, जिनके कारण सूदूर अंचल में कुछ लोगों को सही समय पर सही जानकारी, सही उपचार नहीं उपलब्ध हो पाता, इस हेतु स्वास्थ्य–शिक्षा, स्वास्थ्य–जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है, ताकि अंधविश्वास निर्मूलन हो सके, सामाजिक कुरीतियां दूर हों, और सभी को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो सके।

अंत में अपनी बात वृहदारण्यक उपनिषद के इस श्लोक के साथ पूरी करना चाहूंगा–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत।।''

अर्थात सभी सुखी होएं, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

डॉ. दिनेश मिश्र
नेत्र विशेषज्ञ, चिकित्सा छात्र (बैच 1981)

EDITORIAL

New Year greetings from all of us on the editorial board. Batch after batch of Pt JNM medical college students became successful doctors across the globe. As we move forward, the withered leaves of our college days are scattered on both sides like sticky collagen fibres.

Just opposite the jail campus, memories of a bygone era still chase us. Those white dresses, 90° wish, college canteen, regular classes and ward postings can never be wiped out from our temporal gyri. Memories play a paradox in our lives. It makes us laugh when we think about the times we cried together and cry when we think about the times we laughed together. A few decades ago, we entered the dissection hall of the Department of Anatomy. Beginning a long journey of learning from those anonymous bodies, we worked hard with increased devotion and became physicians and surgeons. We faced arduous days. At times, our interest in medical sciences was in grave dark. Our whole life has been nothing but a long struggle to save the lives of others. We fought and defeated the first pandemic of COVID and survived. We have a noble cause and a gracious god on our side.

Commercial interests sometimes eroded the strongest bonds between us, the patients, and their relatives. But we have faith in the righteousness of our chosen path to heal everyone. Join the profession with faith and devotion. Let's stand by the Hippocratic oath more relevant today.

Dr. Sanjay Sharma
1982

ऐतिहासिक रायपुर

– आशीष सिंह (पत्रकार)

अठारहवीं शताब्दी के एक अनाम कवि ने रायपुर का परिचय इस प्रकार दिया है–

जहां जग जाहिर विराजे हैं कनकपुर
हाटकपुर कंचनपुर तासु को प्रमानी है।
रायपुर के सूर के समाज ते सुहात भले
प्रबल प्रताप ज्यों सुरेश रजधानी है ।।

इन पंक्तियों का अर्थ है– प्राचीन काल में रायपुर, कंचनपुर, कनकपुर के नाम से प्रसिद्ध था। कंचन और कनक स्वर्ण के पर्यायवाची हैं। स्मरण रहे रावण की लंका को भी हाटकपुर कहा गया है । कवि को रायपुर शूर–वीरों के समाज के कारण सुहावना लगता है। समृद्धि वहीं होती है जहां शांति हो, शांति के लिए राज्य का शक्तिशाली होना भी अनिवार्य है। यह नगर अपने प्रबल, प्रचण्ड प्रताप के कारण इन्द्र की राजधानी के समान है।

रतनपुर के राजा राजसिंह के आश्रित कवि गोपाल मिश्र ने 'जैमिनी अश्वमेध' (1694 ई.) में की कथा लिखी है। इस ग्रंथ में रायपुर का उल्लेख मिलता है। इस कथा के अनुसार मोरध्वज के समय भी रायपुर का अस्तित्व था । मोरध्वज के समय श्रीकृष्ण और अर्जुन उसकी दानवीरता की परीक्षा लेने यहां आए थे और उसके पुत्र ताम्रध्वज को आरे से काट कर दो समान भाग करने को कहा था । जनश्रुति है कि यह स्थान 'आरंग' है।

रतनपुर के इतिहासकार बाबू रेवाराम ने 'तवारीख श्री हैहयवंशी राजाओं की' ग्रंथ में रायपुर का उल्लेख किया है। वे लिखते हैं–'राजा मोहमदेव राज किए वर्ष 56 गत कलियुग 3789 संवत् 745 तक। बाद में अपने खास जिले मणिपुर के अव्वल तख्त मणिपुर याने रतनपुर में तमाम देश हद अपनी मालिकी राजा शूरदेव को किए। दुयम तख्त रायपुर सैन्यपति राजा ब्रह्मदेव को देकर आप काशीवास करके मोक्ष पाए।"

रायपुर जिला गजेटियर ने ब्रिटिश इतिहासकार हंटर के हवाले से शूरदेव के छोटे भाई ब्रह्मदेव को रायपुर की गद्दी पर आसीन होने का उल्लेख करता है।

लोकगीत, लोक कथाओं और जनश्रुतियों में भी इतिहास के कण उपस्थित होते हैं। उन्हें खारिज करना इतिहास को भी खारिज करने की तरह हो सकता है। साहित्यकार, इतिहासविद् हरि ठाकुर का मानना है कि रायपुर एक ऐतिहासिक नगर है उसकी अपनी संस्कृति और सामाजिक परम्पराएं हैं। सुआ छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोकगीत है। उसमें रायपुर का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त 'गोपाल राय के पवारा में रायपुर का नाम आता है। गोपाल रतनपुर नरेश कल्याण सहाय (साय) के साथ जहांगीर के दरबार दिल्ली गया था। कल्याण सहाय का उल्लेख 'तुजके जहांगीरी' में भी है।

नगर की प्राचीनता आंकलन मंदिरों, किले और तालाबों से भी कर सकते हैं। रायपुर की देवी महामाया का मंदिर अत्यंत प्राचीन है। रतनपुर के हैहयवंशियों ने जहां–जहां अपने किले बनवाए, वहां उन्होंने देवी महामाया और वृद्धेश्वर महादेव के मंदिर भी बनवाए। रतनपुर की कनिष्ठ शाखा रायपुर में थी। रायपुर में हैहयवंश की शाखा सन् 993 में स्थापित मानी जाती है। कुछ इतिहासकार यह भी मानते हैं कि सन् 1402 में राय ब्रह्मदेव ने रायपुर नगर

बसाया था। यदि इसे ही आधार बना लें तो रायपुर का महामाया मंदिर सवा छह सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। दूधाधारी मठ को चार 5 सौ वर्ष पुराना माना जाता है।

पुरातात्विक स्रोत भी नगर की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। एक शिलालेख रायपुर के किले से प्राप्त हुआ था, जो संवत् 1458 यानी सन् 1402 का है। इस शिलालेख में रायपुर का तत्कालीन राजा राय ब्रह्मदेव को बताया गया है। किन्तु इस शिलालेख में इसे हैहयवंश का नहीं बताया गया है। इस शिलालेख में प्रशस्तिकार ने यह बताया है कि हाजिराज ने हटकेश्वर महादेव का मंदिर बनवाया। हटकेश्वर महादेव का मंदिर खारून नदी के तट पर रायपुरा में आज भी स्थित है। पुराना किला, जिसे दसवीं शताब्दी में कलचुरि नरेश ब्रह्मदेव ने बनवाया था, नदी तट पर इसी स्थान पर था।

भुवनेश्वर देव (1438 ई.) के शासन काल में नंदपुर (जयपुर, कोरापुट) के राजा विनायक देव के राज्य में विद्रोह फैल गया। उसने भुवनेश्वर देव से सहायता मांगी। विनायक देव मदद मांगने स्वयं रायपुर आया था। उसने रायपुर का वर्णन इस प्रकार किया है– रायपुर समृद्ध व्यापारियों का नगर है। नगर के लोगों ने उसका सौहार्द्रपूर्ण स्वागत किया।श

भुवनेश्वर देव के समय पुराना किला ढह गया था अतः बूढ़ा तालाब के सामने सन् 1460 में नया किला बनवाया गया। किले के आसपास बस्ती बस गई, जो वर्तमान में पुरानी बस्ती है। सन् 1663 में बलदेव सिंहदेव ने 'नया रायपुर' बसाया । यह आज का नयापारा है।

सन् 1790 का रायपुर

18 मई 1790 को अंग्रेज यात्रियों का एक दल रायपुर आया था। इस दल के एक सदस्य लैकी ने तत्कालीन रायपुर का इस तरह वर्णन किया है यह एक बड़ा नगर है। यहां बड़ी संख्या में व्यापारी और धनाढ्य लोग निवास करते हैं। यहां एक किला है। किले में पांच प्रवेश द्वार और अनेक परकोटे हैं। इस दल ने बैजनाथपारा में लेडी तालाब के पास पड़ाव किया था। अब लेडी तालाब का कहीं पता नहीं है।

1795 ब्लंट का वर्णन

31 मार्च 1795 को एक अन्य अंग्रेज दल रायपुर पहुंचा। उसके एक सदस्य ब्लंट ने लिखा है – यह छत्तीसगढ़ का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। किन्तु, जनसंख्या और व्यवसाय की दृष्टि से यह पहला है। मैंने गिना तो नगर में 3000 मकान थे। नगर के उत्तर–पूर्व में बहुत बड़ा किला है, जो ढहने की स्थिति में है, किन्तु खाई अभी भी गहरी और चौड़ी है।

सन् 1893 का रायपुर

सवा सौ वर्ष पूर्व रायपुर कैसा था इसका विवरण देते हुए बाबू साधुचरण लिखते हैं– बिलासपुर से 68 मील

पश्चिम–दक्षिण में रायपुर रेलवे स्टेशन है। मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़ विभाग और रायपुर जिले का सदर स्थान और प्रधान कस्बा रायपुर है। सन् 1891 की मनुष्य गणना के समय फौजी छावनी के साथ रायपुर कस्बे में 23,759 मनुष्य थे। अर्थात् 19,013 हिन्दू, 3623 मुसलमान, 528 एमिनिस्टिक, 300 जैन, 272 क्रिस्तान, 21 यहूदी तथा 2 पारसी मनुष्य गणना के अनुसार यह मध्यप्रदेश में छठवां शहर है। रायपुर में जल–कल (नल) सर्वत्र लगी हैं और प्रधान सड़कों पर लालटेनें जलती हैं। कसबे के चारों ओर अनेक तालाब और बहुतेरे आम आदि वृक्षों के बाग हैं और उसके पास एक पुराना जर्जर किला है। इसके अतिरिक्त रायपुर में कमिश्नर की कचहरी दीवानी और फौजदारी कचहरियां, अस्पताल, एक गिर्जा, सेंट्रल जेल आदि इमारतें हैं। देशी पैदल सेना की एक रेजिमेंट रहती है। गल्ले, कपास, लाह (लाख) और दूसरी पैदावार की सौदागरी बढ़ती पर है। संभवतः साधुचरण ही वह पहले यात्री हैं जिन्होंने रायपुर में रेलवे स्टेशन का उल्लेख किया है। साधुचरण के यात्रा वृतांत से हमें कुछ अन्य आश्चर्यजनक सूचनाएं मिलती हैं। प्रथम, यह कि 1893 में रायपुर में गणपति उत्सव, गणेश मूर्तियां बैठाने और विसर्जन की परम्परा थी। रायपुर की मंडी में कपास का सौदा होता था। इसका अर्थ है रायपुर के आसपास के गांवों में कपास की खेती बड़े पैमाने पर होती थी ।

मराठा आधिपत्य

1741 में छत्तीसगढ़ पर मराठों का आक्रमण हुआ, लगभग एक हजार वर्ष प्राचीन कलचुरि राजवंश का पराभव हो गया। मराठों ने भी अपने अभिलेखों में रायपुर का विवरण विस्तार से दिया है। ये सूचनाएं खरडा 12 में संकलित हैं। कनिंघम ने अपनी रिपोर्ट में रायपुर में 40 से ज्यादा तालाबों का होना बताया है। तालाबों के आसपास इतनी ही संख्या में अमराइयों का होना भी लिखा गया है।

रायपुर के मराठा शासकों की सूची निम्नानुसार है -

1	बिम्बाजी भोंसले	1757–1787
2	चिमना बापू	1787–1789
3	रघुजी (द्वितीय)	1789–1817
4	परसोजी	1816–1817
5	बाजीराव (रघुजी तृतीय)	1817–1830

रायपुर के प्राचीन तालाब

1	बूढ़ा तालाब	सन् 1402
2	गोठाली तथा पाटी तालाब	14वीं शताब्दी
3	कंकाली तालाब	सन् 1660
4	आमा तालाब	सन् 1670
5	राजा तालाब	1705
6	मलसाय तालाब	सन् 1735 अनुमानित
7	महाराज बंध	सन् 1770
8	बैजनाथ तालाब	सन् 1790 से पूर्व का
9	खो–खो तालाब	सन् 1830
10	तेलीबांधा तालाब	सन् 1835

'नरेंद्र का प्रवास'

सन् 1885 में स्वामी विवेकनंद अपने बाल्यकाल में दो वर्षों तक रायपुर में रहे। कहते हैं वे बूढ़ा तालाब में तैरने का अभ्यास करते थे । ऐसे विवरण उपलब्ध हैं कि तालाब के बीच का टापू प्राकृतिक है, बाद में इसे और विस्तृत कर उद्यान का रूप दिया गया।

ब्रिटिश नियंत्रण और स्वाधीनता संग्राम

1854 में मराठों की पराजय के बाद छत्तीसगढ़ पर भी ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया। प्राचीन राजधानी रतनपुर के स्थान पर रायपुर को मुख्यालय बनाया गया। प्रशासन के लिए डेपुटी कमिश्नर की नियुक्ति की गई। प्रथम डेपुटी कमिश्नर चार्ल्स इलियट था ।

1857 में सोनाखान के जमीदार नारायण सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का शंखनाद कर दिया, पर उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्होंने आत्म समर्पण कर दिया। 10 दिसंबर 1857 को फांसी की सजा दी गई।

18 जनवरी 1858 को रायपुर सैन्य छावनी में हनुमान सिंह ने सार्जेंट मेजर सिडवेल की हत्या कर क्रांति का शंखनाद कर दिया, जिसमें 17 सिपाहियों ने बिस्सा लिया। परंतु 6 घंटे के संघ, के बाद वे गिरफ्तार कर लिए गए। परिणाम स्वरूप सभी को फांसी दे दी गई। लेकिन हनुमान सिंह कभी ब्रिटिशों के हाथ नहीं लगे, वे कहां गए कुछ पता नहीं चलता ।

1920 से लेकर 1942 तक रायपुर शहर ने भी स्वतंत्रता संग्राम में कंधे से कंधा मिला कर साथ दिया था। एक तरह से छत्तीसगढ़ में संग्राम का केंद्र रायपुर था। तत्कालीन धमतरी तहसील के कंडेल ग्राम में नहर सत्याग्रह के सिलसिले में 20 दिसंबर 1920 को गांधी जी रायपुर आकर धमतरी गए थे। वे 21 दिसंबर को नागपुर रवाना हुए। 1933 में वे एक हफ्ते रायपुर में पं. रविशंकर शुक्ल के बूढ़ापारा स्थित आवास में रहकर अछूतोद्धार कार्यक्रम का प्रचार किया था। इस बीच उन्होंने बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग आदि स्थानों में सभाएं की।

प्रखर पत्रकार पं. माधवराव सप्रे, सहकारी बैंक के संस्थापक पं. वामन राव लाखे, पं. रविशंकर शुक्ल, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, मौलाना अदुऊफ खां, यति यतनलाल, क्रांतिकुमार भारतीय, डॉ. खूबचंद बघेल और राधा बाई अग्रिम पंक्ति के नेता थे ।

1942 में बिलखनारायण जबलपुर से डायनामाइट लेकर आए। उन्होंने जयनारायण पांडेय, नागरदास, नारायण दास, ईश्वरीचरण शुक्ल और शिवबालकराम गंगेले के साथ जेल की दीवार को उड़ाने का प्रयास किया। उनके के अनुमान के अनुसार डायनामाइट शक्तिशाली नहीं था, पर जेल की दीवार को अवश्य ही क्षति पहुंची। मुखबिरी के कारण काफी दिनों के जयनारायण पांडेय और फिर अन्य साथी पकड़ लिए गए।

1946 में परसराम सोनी को गिरफ्तार किया गया। वे अपने साथियों मंगल मिस्त्री, गिरिलाल, निखिल भूषण सूर, विपिन बिहारी सूर, दशरथलाल चौबे, क्रांतिकुमार भारतीय, कुंजबिहारी चौबे, प्रेम वासनिक, सुधीर मुखर्जी, खेदू पोद्दार, देवीकांत और कृष्णराव थिटे और सीताराम शर्मा के साथ रायपुर में सशस्त्र क्रांति की योजना बना रहे थे। परंतु एक साथी शिवनंदन की गद्दारी के कारण उनकी योजना असफल हो गई। सभी गिरफ्तार कर लिए गए।

राजनीतिक प्रभाव

देश को स्वाधीनता मिलने के बाद 1952 में विधान सभा के प्रथम चुनाव हुए। रायपुर के पं. रविशंकर शुक्ल ने कांग्रेस की टिकट पर सरायपाली सीट से विजय प्राप्त की, ने सीपी एंड बरार एसेंबली में मुख्यमंत्री बने। रायपुर के ही ठाकुर प्यारेलाल सिंह रायपुर सीट से प्रजा मजदूर किसान पार्टी की ओर से निर्वाचित हुए, वे नेता प्रतिपक्ष चुने गए थे। यह उदाहरण पर्याप्त है यह जानने के लिए कि रायपुर सापी एंड बरार के जमाने में भी राजनीतिक रुप से कितना प्रभाव

रखता था।

पं. शुक्ल तो 1936 से 31 दिसंबर 1954 तक मृत्यु पर्यंत मुख्यमंत्री रहे। उनके पुत्र पं. श्यामाचरण शुक्ल 26–3–1969 से 28–1–72, 23–13–75 से 30–4–77 और 9–1–89 से 1– 3–1990 तक मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे । उनका निर्वाचन क्षेत्र भले ही राजिम था पर उनका निवास रायपुर ही रहा।

पं. विद्याचरण शुक्ल भी पं. रविशंकर शुक्ल के पुत्र थे । वे केंद्र की राजनीति में दशकों प्रभावी भूमिका में रहे। वे पहली बार 1957 के आम चुनावों में बलौदाबाजार से लोकसभा सदस्य के रूप में चुने गए। इसके बाद 1962, 1964 (उपचुनाव), 1967, 1980, 1984 और 1989 में महासमुंद से लोकसभा चुनाव जीता, 1971 और 1991 में रायपुर से वे सांसद चुने गए। वे 9 बार लोकसभा के लिए चुने गए। वे 1967 से 1977 तक सूचना और प्रसारण के स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री रहे। पं. शुक्ल राजीव गांधी, वीपी सिंह, चंद्रशेखर और फिर 1991 से 96 तक नरसिम्हा राव सरकार में मंत्री रहे। अपनी राजनीतिक यात्रा में वे कांग्रेस, राष्ट्रीय मोर्चा, जनता दल, कांग्रेस, एनसीपी, भाजपा और फिर कांग्रेस का भ्रमण करते रहे ।

1980 में पुरुषोत्तम कौशिक रायपुर संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित होकर केंद्रीय उड्डयन मंत्री बने ।

महाराष्ट्र के वर्तमान राज्यपाल रमेश बैस ने रायपुर के ब्राह्मणपारा के पार्षद के रूप में अपनी राजनीति का आरंभ किया। वे मंदिरहसौद से विधायक भी रहे। 1989 में रायपुर से सांसद चुने गए और 1996 से 11वीं, 12वीं, 13वीं, 14वीं, 15वीं और 16वीं लोकसभा के लिए लगातार निर्वाचित होते रहे। 1999 में केंद्रीय राज्य मंत्री, इस्पात और खान, 13 अक्टूबर 1999–30 सितंबर 2000 तक केंद्रीय रसायन और उर्वरक राज्य मंत्री, 30 सितंबर 2000–29 जनवरी 2003 तक केंद्रीय सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री, 29 जनवरी 2003 – 8 जनवरी 2004 तक केंद्रीय खान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), 9 जनवरी 2004 – मई 2004 तक केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रहे । जुलाई 2021 में उन्हें त्रिपुरा के राज्यपाल नियुक्त किया गया। 14 जुलाई 2021 से 12 फरवरी 2023 तक श्री बैस झारखंड के राज्यपाल रहे। 12 फरवरी से आज पर्यंत वे महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में दायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं ।

Raipur district occupies the Southeastern part of the upper Mahanadi valley and the bordering hills in the South and the East. A panorama of small rice fields with narrow earthen banks – broken only by the cluster of mud houses. Rice not only forms the staple diet of the majority of people, but also bears a large influence on their life and economic condition. People eat rice morning, noon and night and spend their lives growing rice. Their health, wealth and happiness depend on it. Rice rules their lives. Extract from Gazetteer of India.

PANDIT JAWAHAR LAL NEHRU MEMORIAL MEDICAL COLLEGE, RAIPUR

Our educational Institution was established on September 09, 1963, with one Dean and two teachers. Three rooms and 60 chairs at one corner of the Ayurvedic College Campus, on its inaugural function, the first dean of this Pt. J. N. M. Medical College, Raipur, Late Dr. N. P. Benawari rightly said," One day, this region will be proud of this Medical Institute."

The foundation stone of its building was to be laid down on 16 April 1965 in Pt. Ravishankar University Campus, but the site was transferred to the present Jail Road site. The then Chief Minister of Madhya Pradesh, Pandit Dwarika Prasad Mishra, laid the foundation stone.

M.P. Govt. allotted 92 acres of land area was transferred from the Department of Jail to Medical Education to construct a college building, hospitals, hostel and staff quarters. Chief Minister of M.P. Pandit Shyama Charan Shukla inaugurated the newly formed college building on September 30, 1976, and MBBS admission capacity was increased from 60 to 100. On this campus, an impressive auditorium of 800 capacity was constructed, the best auditorium of the capital city, Raipur. Initially, this medical college was affiliated with Dr. Harisingh Gaud University Sagar. In 1965, when Pandit Ravi Shankar Shukla University came into existence, its affiliation was transferred to it. Presently, it is under Ayush & Health Sciences University Raipur.

As the hospital building was not ready, the medical college was attached to Dau Kalyan Singh Hospital for practical and clinical teaching of medical students. It became a long struggle by citizens of Raipur, teachers and students of medical colleges to build up the proposed 700-bed college hospital. When Dr BR Ambedkar Memorial Hospital existed in 1996, it substantially increased medical care and training facilities. DKS is now successfully working as a super speciality wing. Yet another foundation stone was laid down on college premises to construct a 700-bedded integrated structure on 9 September 2023 to serve the suffering community.

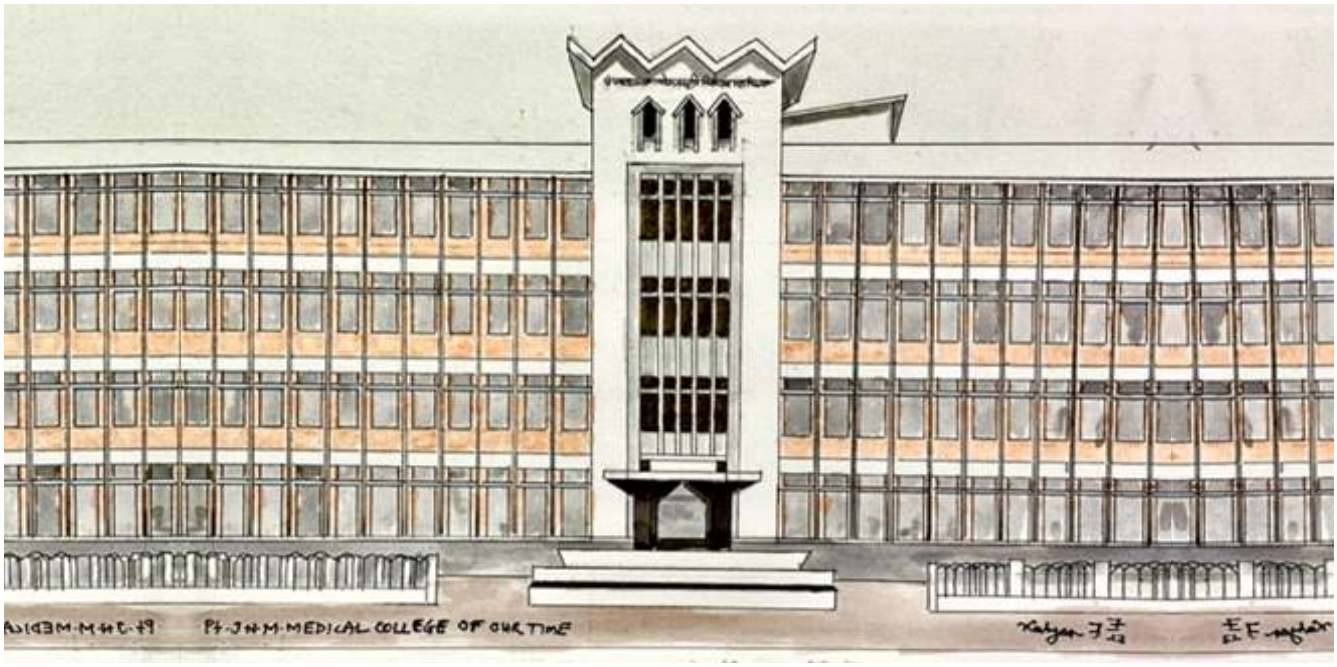

DEAN PT. J.N.M. MEDICAL COLLEGE RAIPUR (C.G.)

S.NO.	NAME OF DEAN	PERIOD
1	Dr. N.P. Benawari	16.08.1963 to 23.12.1967
2	Dr. M.M. Arora	18.01.1968 to 17.08.1971
3	Dr. S.L. Agarwal	18.08.1971 to 22.06.1978
4	Dr. S.S. Gupta	23.06.1978 to 10.07.1981
5	Dr. K.P. Mehra	11.07.1981 to 27.07.1984
6	Dr. S. Agarwal	28.07.1984 to 10.09.1989
7	Dr. I.M. Shukla	11.09.1989 to 31.07.1990
8	Dr. J.S. Saxena	01.08.1990 to 31.10.1991
9	Dr. N.R. Bhandari	01.11.1991 to 12.08.1992
10	Dr. A.K. Govila	19.08.1992 to 16.01.1993
11	Dr. T.N. Mehrotra	17.01.1993 to 30.08.1993
12	Dr. S.C. Saxena	06.09.1993 to 24.04.1994
13	Dr. R.G. Singh	25.04.1994 to 25.06.1995
14	Dr. T.N. Mehrotra	26.06.1995 to 20.09.1995
15	Dr. P.K. Mukherjee	21.09.1995 to 31.08.1997
16	Dr. P.C. Mittal	01.09.1997 to 31.07.1999
17	Dr. R.C. Bhola	01.08.1999 to 16.11.1999
18	Dr. V.K. Joshi	17.11.1999 to 30.09.2000
19	Dr. R.C. Bhola	30.09.2000 to 25.12.2000
20	Dr. Y. Badgaiya	25.12.2000 to 23.02.2001
21	Dr. A. Dabke	23.02.2001 to 27.12.2004
22	Dr. S. Adile	28.12.2004 to 02.01.2005
23	Dr. S.K. Mukherjee	03.01.2005 to 10.07.2005
24	Dr. N.K. Goyal	11.07.2005 to 12.08.2007
25	Dr. S.K. Mukherjee	13.08.2007 to 12.08.2010
26	Dr. C.K. Shukla	13.08.2010 to 30.05.2011
27	Dr. A.K. Sharma	31.05.2011to 30.07.2013
28	Dr. A.K. Chandrakar	31.07.2013 to 31.07.2016
29	Dr. Mrs. Abha Singh	01.08.2016 to 11.05.2020
30	Dr. Vishnu Dutt	12.05.2020 to 16.02.2022
31	Dr. Tripti Nagaria	17.02.2022 to Till Date

N. P. Benawari

M. M. Arora

S. L. Agrawal

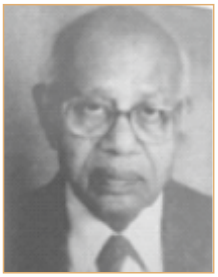
S. S. Gupta

K. P. Mehra

S. Agrawal

I. M. Shukla

J. S. Saxena

N. R. Bhandari

A. K. Govila

T. N. Mehrotra

S. C. Saxena

R. G. Singh

P. K. Mukherjee

P. C. Mittal

R. C. Bhola

V. K. Joshi

Y. Badgaiya

A. T. Dabke

S. L. Adile

Subir Mukherjee

N. K. Goyal

C. K. Shukla

A. K. Sharma

A. K. Chandrakar

Abha Singh

Vishnu Dutt

Tripti Nagaria

अभिव्यक्ति

Dr. Monika Agrawal

दिसम्बर - डॉ. राजेंद्र सिंघानिया 1975

ये आखरी रात दिसम्बर की
समेटूँ इसको कि बिखेर दूँ
पुरानी यादों को साथ लूँ
कि किसी मोड़ पर छोड़ दूँ
नई सुबह में क्या होगा खास
क्या मैं भी करूँ कोई आस
क्या बहुत कुछ बदलेगा
क्या आसमान पिघलेगा
क्या रात की कोख से
कोई ऐसा बीज फूटेगा
क्या परिंदे बेखौफ सोयेंगें
क्या शबनम मोती उगलेगा
तुमको पता हो तो बताओ
कोई तो नया गीत गाओ
वरना शोर मत मचाओ
मैं भी सोऊँ तुम भी सो जाओ

★★★★

पूरा आधा - डॉ. द्रोण शर्मा 1981

जो था ही नहीं वो सिर्फ तुम्हारा था
जो हर पल था
वो सिर्फ मेरा था
आधा तुम्हारा आधा मेरा
आधे आधे की भागीदारी थी
दोनों ने आधा–आधा जोड़ के
पूरा किया था बड़े जतन से
उन्ही जुड़े अधूरे टुकड़ों ने
हमारी पूरी कहानी लिख डाली थी
वो अधूरापन आज भी जिंदा है
अधूरापन अब भी पूरा है !

★★★★

- डॉ. भरत नामदेव 1968

कोई गम नहीं, कोई अजार नहीं
कोई वादा नहीं, इंतजार नहीं
धूल जम आई है खूब यादों पे
दिल को फिर भी कुछ करार नहीं
छोड़ आए जिंदगी को जिस मोड़ पे हम
क्या वो अपना पहला प्यार नहीं।

★★★★

डॉ. वरिंदर नंदा - चार कविताएँ 1972

1. 'याद'
मैं हूं, तेरी याद है रात की तन्हाई है
नींद की आंखों से हो गई रूसवाई है
कब तलक जागूंगा तेरी याद के सहारे
हो रही बोझिल सी आंखें रात भी गहराई है।

नींद के आगोश में समाने से पहले होश,
मदहोश हो जाने से पहले
अपने आंचल की
पनाह दे दे तो अच्छा
ख्वाब में आने का यकीन दिला दे तो अच्छा
जागने की फिर फिक्र किसे
जिंदगी ख्वाब ही में कट जाए तो अच्छा

2. 'सत्य'
सैंकड़ों आंखें हो चश्मदीद
सच कहना मुश्किल कहां
जुबां होकर, इंसा हो बेजुबां
होगी उसकी भी कोई वजह

वहीं रखते हैं माद्दा
सच बयां करने का
जो रखते हैं कलेजा
अंजाम से टकराने का

वे आम नहीं, खास होते हैं
लाखों में एक होते हैं
तारीख उन्हें याद करती है
दुनिया जय जयकार करती है

3. 'जिद'
पुकारूंगा इतनी बार
तुम्हें सुनना होगा
इंकार को इकरार में
बदलना होगा

किसी की नींद चुराकर
चौन से सोने वाले
जागती रातों का एहसास
तुझे भी करना होगौ

4. चांद की गवाही को कैसे झुठलाएगा
जागा है रात भर, कैसे छिपायेगा
तेरे प्यार को समझा है किसने यहां
किस–किस को, कैसे तू समझाएगा

यादें - डॉ. आलोक शुक्ला

विचित्र थी वह सुबह, रायपुर मेडिकल कॉलेज में एडमिशन के बाद मैं पहली बार कॉलेज जा रहा था. मन मे आह्लाद भी था और कुछ डर भी. खुशी डॉक्टर बनने की और डर सीनियर्स का. मेडिकल कॉलेज में रैगिंग के किस्से बहुत सुन रखे थे. पहले दिन की तैयारी में सफेद एप्रन बनवाया था. उस समय रायपुर के छोटापारा में एक ही दर्जी था को डाक्टरों के लिये एप्रन सिलता था. उसके पास बड़ी लंबी वेटिंग लिस्ट थी. सो उसकी खुशामद–दरामत करके किसी तरह कॉलेज के पहले दिन के लिये एप्रन बनवाया. घर से एप्रन पहनकर, अपनी पुरानी सायकिल से कॉलेज के लिये निकला. कॉलेज के गेट पर पहुंचने के पहले ही एक सीनियर से टक्कर हो गई. 'आज पहला दिन है?', उन्होने पूछा. मैने हां कहा, तो पड़ी डांट जोर से. 'मैनर्स नही हैं. सायकिल से उतरो. गेट से पैदल जाना है. सायकिल पर जाने की इजाजत नही है.' मैं चुपचाप सायकिल से उतरकर आगे बढ़ा. आगे देखा, साइकिल स्टैंड पर प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की लाइन लगी थी. 4–5 सीनियर लड़के–लड़कियां किसी फिल्मी हीरो की तरह सायकिल स्टैंड पर मोटरसाइकिल सी सीटों पर बैठे थे. प्रथम वर्ष के एक–दो छात्र उठ्ठक–बैठक कर रहे थे. एक छात्रा बेचारी रुंधे गले से किसी पुरानी फिल्म का गाना सुना रही थी. सीनियर उसे सुनकर हंस रहे थे. मैं वहॉ पहुंचा को दो–चार गालियां पड़ीं और एक रोबदार आवाज आई दृ 'एप्रन पहनने को किसने कहा? आज पहला दिन है, और पूरे डॉक्टर बन गये हो. एप्रन उतारो और लाइन में खड़े हो जाओ.' मैं भी सबके साथ लाइन में खड़ा हो गया. एक सीनियर सभी का निरीक्षण कर रहे थे. 'सीनियर को सीधा देखना नही है. कोई सीनियर सामने आये तो पहले सलाम करना है, और फिर कमीज का तीसरा बटन देखते हुये सर झुकाकर खड़े हो जाना है. सलाम भी ऐसा–वैसा नहीं. बाकायदा मुगले आजम फिल्म की तरह कोर्निश करना है. और कल से सभी कमीज में तीसरा बटन लाल रंग का लगवाकर आयेंगे.' हम सब लगभग एक घंटे तक सीनियर्स से मैनर्स सीखते रहे. कुछ देर में एनॉटामी के लेक्चरर वहां आ गये. उन्हें देखकर सीनियर रफूचक्कर. उनसे दूसरी डांट पड़ी. 'कॉलेज आये हो तो क्लास में नहीं जाना है? एप्रन क्या कंघे पर डालने के लिये है? पहना क्यों नहीं?'

इस तरह बीता कॉलेज में हमारा पहला दिन. होने को तो और भी बहुत कुछ हुआ, पर उसे यहां लिखना शायद मुनासिब नहीं है. पढ़ने वाले साथी जानते ही हैं. इसी तरह की रैगिंग महीनो चलती थी. मैं और मेरा दोस्त प्रवीर रायपुर सेन्ट्रल जेल के पीछे से घूमते हुये कॉलेज आते थे, जिससे कॉलेज पहुंचने के पहले ही धर न लिये जायें. खैर, कुछ महीनों में सब कुछ सामान्य हो गया और रेगिंग करने वाले सीनियर पक्के मित्र और हितैषी बन गये. मेडिकल कॉलेज में बना यह रिश्ता जीवन भर की मित्रता मे तब्दील हो गया. जिन्होने कभी रैगिंग ली और तंग किया वे आज जरूरत पड़ने पर हर प्रकार की मदद के लिये तैयार हैं. मेरा अनुभव तो यह रहा है कि पूरी दुनिया में कहीं भी अगर कोई सीनियर मिल जाये को मजाल है कि आप होटल में रहें. उनका घर आज भी अपना घर ही है. सीनियर के होते हुये होटल का बिल जूनियर नही दे सकता. यह कल्पना की बातें नहीं है. मैंने इन्हें जिया है.

रायपुर मेडिकल कॉलेज का वर्षिकोत्सव हमारी शान था. पूरे शहर में इस उत्सव के प्रवेशपत्र के लिये मारामारी रहती थी. मुझे आज भी इस बात का गर्व है कि हम अपने वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में देश के ख्याति प्राप्त कलाकारों, और साहित्यकारों को ही बुलाते थे. मेरे सामने अमरीश पुरी, दिनेश ठाकुर, बाबा नागार्जुन, शिवमंगल सिंह सुमन, ममता कालिया जैसे लोग हमारे मुख्य अतिथि बने. वार्षिकोत्सव की तैयारी में 2 महीने पढ़ाई न के बराबर

होती थी. उस समय एम.बी.बी.एस. में तीन परीक्षाएं होती थीं, सो तीनों के बीच वार्षिकोत्सव की सारी प्रतियोगितायें भी होती थीं. कार्यक्रम में नाटक हम विद्यार्थी खेलते थे, परन्तु निर्देशक प्रोफेशल होते थे. हमने कई प्रसिध्द नाटक खेले. नाटकों में मुझसे एक साल सीनियर सुदीप सरकार का अभिनय कमाल का था. मुझे 'हानूश' में उनका अभिनय आज भी भुलाये नहीं भूलता. सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ, स्पोर्ट्स, रंगोली, पेंटिंग, और अन्य कलाओं की प्रतियोगितायें भी होती थीं. इसी खेल–कूद के बीच अनेक जोड़ियां भी बन गईं. कुछ जोड़ियां थोड़े समय की थीं, तो कुछ आज भी जीवन साथी हैं.

कॉलेज में हम मौज मस्ती बहुत करते थे. हमारे बैच के लोग कुछ ज्यादा ही. कुछ लड़कों ने मिलकर एक दूसरे पर छींटाकशी करने के लिये एक वॉल जर्नल निकाला. नाम रखा – 'वर्षा की फुहार'. सारे मिलकर इसे हाथ से लिखते थे. इतनी मेहनत तो कोर्स के नोट्स बनाने में भी नही की जाती थी. महीने के पहले दिन, रात के सन्नाटे में 'वर्षा की फुहार' को स्टूडेंट्स के लॉकर पर चिपकाया जाता था. अगले दिन सभी डरते–डरते वहां जाकर पढ़ते थे. न जाने फुहार के छींटे किस पर पड़ जायें.

कुछ का काम तो केवल लड़कियों को तंग करने का था. पर, तंग करते थे सभ्यता से. हमारे क्लास में एक लड़का था. मैं नाम नही लूंगा, पर हम उसे प्यार से चीनी कहते हैं. उसके भाई की नकली शादी का प्लॉन बनाया गया. इस प्लान में उसके परिवार के सभी लोग शामिल थे. उसके एक दोस्त का प्रिंटिंग प्रेस है. तो उसने बाकायदा शादी का कार्ड भी छाप दिया. क्लास की लड़कियों को कार्ड देकर शादी की पार्टी में निमंत्रित किया गया. बेचारी लड़कियां बन–संवर कर पार्टी में शामिल होने के लिये गिफ्ट लेकर पहुंचीं. चीनी का भाई सूट पहनकर बैठा था और उसके साथ साड़ी पहनकर घूंघट लिये हुये बैठी थी उसकी पत्नी. लड़कियों ने घूंघट हटाने के लिये बहुत कहा, पर उसने घूंघट नही हटाया. एक लड़की ने आगे बढ़कर घूंघट में झांका, तो चीख पड़ी. घूंघट के पीछे दाढ़ी–मूछों वाला हमारा एक दोस्त था. बड़ी हंसी हुई. फिर पार्टी भी हुई.

चीनी के पास एक पुरानी विलीज जीप थी, तो सारे साल टायर निकालकर ईंटों पर पर खड़ी रहती थी. हम इसीलिये उसे 'इटालियन' कहते थे. होली के पहले उसे चमकाकर तैयार किया जाता था. फिर होली के दिन सारे दोस्त इस इटालियन जीप पर सवार होकर नगाड़े बजाते हुये पूरे शहर में घूमते थे. सभी दोस्तो के घर जाते थे, खासकर लड़कियो के घर. उनके गोरे गालों पर रंग मलने का मौका जो था.

इन यादों को और इन जैसी और बहुत सी यादों को मैने संभाल कर रखा है. अगर सभी बातें कहूं तो पूरी पुस्तक यादों से ही भर जायेगी. सच तो यह है, कि रायपुर मेडिकल कॉलेज में हमने केवल चिकित्सा करना ही नहीं सीखा, बल्कि जीवन जीना भी सीखा है, और बनाये हैं, उम्र भर के दोस्त.

*****

मेरी आत्मकथा के अंश - डॉ. रघुवर पटवा 1972

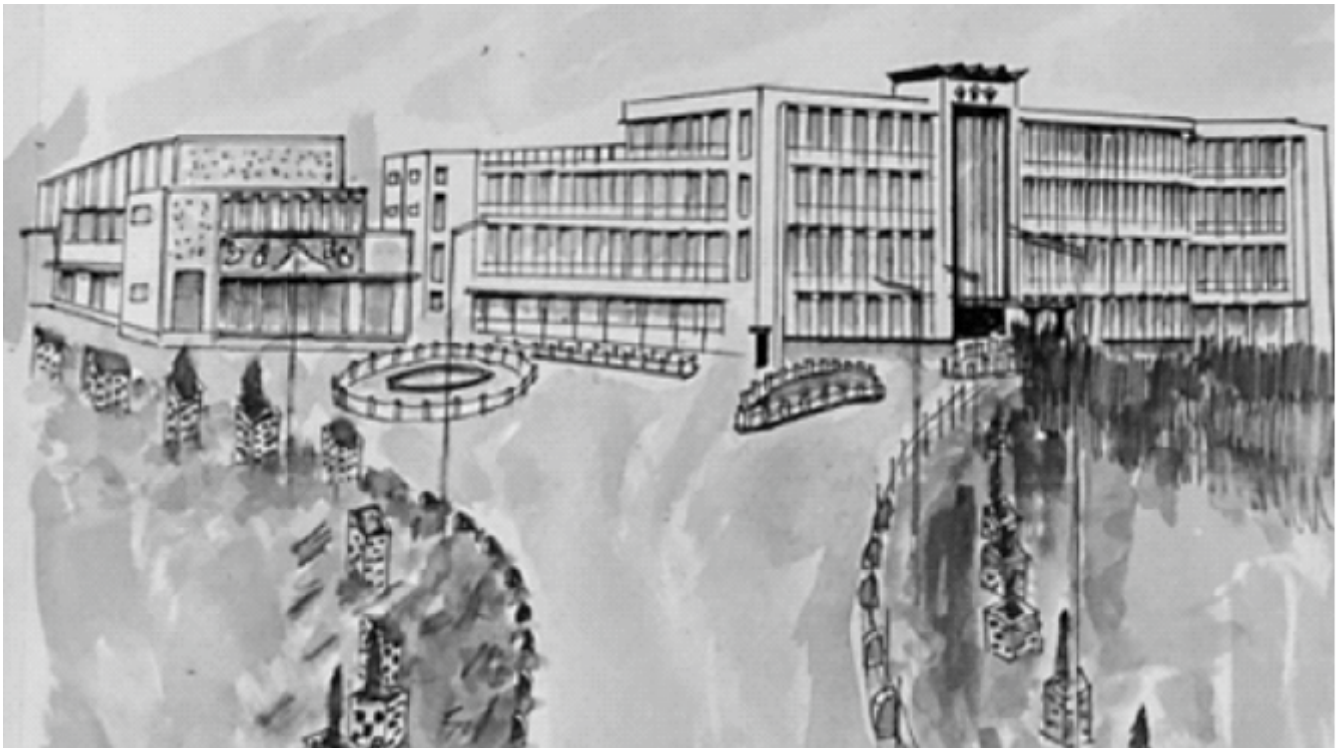

मेडिकल कालेज के दिनों की शुरूआत थी...स्ट्रगल फार सरवाइवल का। बहुत सारे खौफ थे रैगिंग, इंगलिश मीडियम और घर से बाहर रहकर पढ़ने का। और माता–पिता की ऊंची आशाओं पर खरा उतरने का। पी.एम.टी पास करने के बाद मेडिकल कालेज में पढ़ने का जहाँ असीम सम्भावनाओं का आकाश था तो साथ में यथार्थ की कठोर धरती भी सामने थी।

फर्स्ट इयर का पहला दिन अब भी याद है। सहमे–सहमे डिसेक्शन हाल के डिसेक्शन टेबल के आस–पास हम स्टुडेंट्स को पहुंचा दिया गया था। रामसे ब्रइर्स का हारर सीन सामने है। कभी हम डेड बॉडी को देखते हैं तो कभी कनिंघम की मैनुअल ऑफ एनाटामी को तो कभी दूसरे सहपाठियों को। अपने आतंक को छुपाने की कोशिश करते, एक दूसरे को देखकर थोड़ा आत्मविश्वास पैदा करते खड़े रहे। गनीमत है कोई बेहोश नहीं हुआ था। शुरू के दिनों में रैगिंग का इतना आतंक था कि अन्य चीजों पर ध्यान हीं नहीं जा पाता था। कालेज के आसपास सफेद ड्रेस में सजे एप्रन हाथ में लिए स्टुडेंट्स को देखकर उन दिनों कोई भी कह सकता था कि बकरियों का झुंड कसाई खाने की ओर जा रहा है। कालेज, मनी कैंटीन और विरदी कालोनी के आसपास का वातावरण रैगिंगमय होता था। सीनियर्स जब चाहे और जहां जाहे हमें वस्त्रहीन करा देते थे। कमीज के तीसरी बटन को देखते–देखते हमारी मुद्रा प्रार्थनामय हो गई थी जिसे देख कर भगवान भी क्यों नहीं पसीजते समझ नहीं आता था। खैर वे दिन सबके खर्च होते थे हमारे भी हुए। बाद में रैगिंग बहुत तकलीफदेह भी नही रही थी, और हम उसे एन्ज्वाय करने के स्टेज में आ गए थे। उद्देश्य भी तो वही था, हमें बेशर्म और दुनिया में संघर्ष करने के लिए ठोंक–पीट कर लायक बनाने का। पर इंदर वाधवानी और एस.एन. अग्रवाल की याद हमारे दिलो दिमाग पर आज भी ताजा है। विरदी कालोनी में अशोक खरे रूम पार्टनर था। फिर हिमांशु से वहीं मुलाकात हुई। वह तब से ही प्रेक्टिकल आदमी था। और उसकी सलाह से, रैगिंग के डर से होस्टल न ज्वाइन करके अवधिया पारा में एक मकान किराए पर लेकर रहने लगे, जो कि बाद में हमारे बैच की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। वो प्रसंग बाद में । अब लौटें एनाटामी डिसेक्शन

हाल में जो उन दिनों हमारी कर्म भूमि हुआ करती थी, शायद समरभूमि भी । इसी हाल में क्लास गोल कर पिक्चर जाने की और किसे और कैसे परेशान – करें, की रणनीति तैयार की जाती थी। टेबलों में जन्म दिन की पार्टियां भी मनाते थे। डेड बॉडी के साक्षी में कितने ही काम सम्पन्न हुए। शायद कुछ ने साथ–साथ जीने मरने की कसमें भी खाई थी। उन दिनों मैं क्लास के सीधे और सरल लड़कों में गिना जाता था। दूसरे शब्दों में निपट बुद्धू और गंवार था। आत्म विश्वास की भारी कमी थी, इसलिए तो लडकियां भी मुझे छेड़ लेती थी। पहले तो मैं झेंपता था पर बाद में एन्जवाय करने लगा था। अधिकतर सारी गतिविधियों को मैं मूक दर्शक बना देखा करता था। अच्छा लगता था। बाद में थोड़ा खुला और धीरे–धीरे सबके रंग में रंगने लगा था। अपना इंगलिश का हाल तो स्कूल के दिनों से ही माशा अल्लाह था। शुरू के दिनों में समझ नहीं आता था कि पढ़ क्या रहे हैं। टर्मिनल परीक्षाओं में फेल होने के कई कारणों में से एक यह भी था। पर मेरा आत्म विश्वास जगाया डॉ. जरगर एवं डॉ. श्रीमती बेनर्जी ने मेरे मेरिटोरियस बैक ग्राऊंड से वे वाकिफ थे। कालेज के आर्ट्स प्रदर्शनी में मेरी कुछ पेंसिल ड्राईंग ने शायद उनका ध्यान मेरी और आकर्षित कराया हो। मेरी हौसला अफजाई में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। डिसेक्शन कॉम्पिटिशन में पहला आने पर, और हिस्टाजाली के स्पाटिंग के नतीजे ने डॉ. मेहरोत्रा के जो अपने तीखे कटाक्षों के लिए – जाने जाते रहे, मेरी प्रशंसा में, दो बोल 'पटवा, – आजकल तो तुम होशियार होते जा रहे हो'– ने भी मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया, और मैं क्लास के होशियार लोगों में शामिल होने लगा था। कुछ महीनों बाद विदेश प्रवास से "मामा" यानि डॉ. शिन्दे वापस आये। डिपार्टमेंट में उनकी सख्ती और अनुशासन की कहानियां हम सुन ही चुके थे। उनका आतंक देखने और झेलने का अब मौका भी मिला। लगभग सभी उन्हें गालियां भी देते रहे। मैं नहीं देता था, कहूंगा तो आप सब मुझे गाली देंगे, "साले बड़ा शरीफ बनता है।" और वास्तव में मैं गाली नहीं देता था। जाओ कर लो जो भी करना है, डरता हूँ क्या तुमसे। बाद में सब रियलाइज तो करते थे कि उनका यही स्टाइल था । वे नारियल जैसे थे, उपर से कठोर और अन्दर से नरम । एक–एक स्टुडेंट के पीछे पड कर वे उनका बेस्ट सामने लाने की कोशिश करते थे। इस बात की परवाह किये बगैर कि लड़के उन्हें गालियां देते हैं। मुझे तो उनका निकनेम बड़ा सार्थक लगता है– मामा, चन्दा मामा जैसा प्यारा, आदरणीय ।अब फिजियोलोजी की तरफ चढ़ें, जो कि दूसरी मंजिल पर स्थित था। रैगिंग और एनाटॉमी के थकान से पस्त यह विषय हमें माइनर सब्जेक्ट जैसा लगता था । प्रोफेसर माथुर की क्लास में डायट चार्ट बनाना बडा ही सकून देता था । सैमसन राइट और डॉ. माथुर दोनो ही जीनियस थे और वे हमें भी जीनियस समझ कर पढ़ाते रहे। फाइट आर फ्लाइट की कहानियां सुनकर हम रिलेक्स होते रहे। यह तो बहुत बाद में पता चला कि कोर्स का कुछ हिस्सा हमारे सर के उपर से चला गया है। कविश्वर बायोकेमिस्ट्री के विद्वान शिक्षक थे। बहुत सुंदर पढ़ाते थे, और मेरे विचार से वे हमारे सबसे अच्छे शिक्षकों में से एक थे। बायोकेमिस्ट्री को इतना सरल और सरस बना देना उन्ही के बस की बात थी, इस बात से तो शायद ही किसी को इंकार हो। डॉ. पांडे और डॉ. नायडू ने भी विषय को काफी सरल और सरस बनाया। प्रेक्टिकल में डॉ. सेंडेल, डॉ. धर्मेन्द्र और श्रीमती कविश्वर ने भी बहुत सहायता की।

डॉ. माथुर के ट्रांसफर के समय का भावभीनी विदाई समारोह याद आता है, जब भाव–विभोर होकर उनकी आंखें भर आई थीं और हमारे भी गले रूंध गये थे। उनके स्थान पर आए प्रोफेसर चौधरी । उन्होंने रीविजन में इतना अच्छा पढ़ाया कि हमारी सारी कठिनाईया दूर हो गई, और फिजियोलाजी में हमारी पकड़ मजबूत हुई।

*****

REMINISCENCE: 1982 to 1994 -Dr. Sanjay Sharma 1982

My way from the hospital to the hostel was blazed with scarlet Gulmohar and yellow Amaltas, biological markers of the harsh summer ahead at Raipur. PG was no rosy way path like under graduation. A simple life of under graduation was over by miles. Fun those days included sitting in Movie Theatre searching for a Khara, popcorn, cold drink and a dark corner—cups of tea outside Jayram talkies at Bhagwati tea stall. Sharda, Jayram, Babulal, Amardeep, and Prabhat talkies cleared up precious land in a market.

The taste of samosa, anywhere in the country, often reminds me of samosa made by Soni ji in the college canteen. However, I felt he gave us insufficient tea in a smaller cup.

After working three consecutive nights at wards today, I took post-duty off. PG was rewarded based on a demanding job in hospital wards and submitting a thesis. Completion of the thesis demands frequent visits to the library. After screening most journals today, I realised some authors only write to pollute scientific literature. The last time I turned pages of dust and mite-ridden ancient chronicles, I had multiple sneezes and symptoms of rhinitis, so I took sick leave. Thank God new age residents access filtered medical updates on their smartphones and oft-confirm facts on the ward rounds. They will likely invade PubMed and cut and paste literature reviews/projects in a few hours.

Downstairs from the cashier, I have collected my well-earned stipend. I took liberal lunch at Girnar restaurant, which typically happened in the early days of receiving a stipend. I dumped some clothes at Dutta Drycleaners and decided to pick a new sheath for my body from KP, which was too costly. A strike was once organised against Kanhaiya Tailors by students against his higher charges, but he refused to lower stitching charges, saying it was his work of art. I purchased cloth pieces from Mafatlal and asked Stylo Tailors to stitch them after selecting a suitable design from fashion journals. KP has now shifted to new premises. Old Kiran building dusted down some years back, along with it gone Mel Rose bar, a couple of watch shops and memories related to one corner of Jai Stambh Chowk.

At lunch, I took a pair of Idli floating in Dal-soup with hot filter coffee at leisure and chatted with Dilbag and Pappu. It is always good to discuss critical social matters with seniors. Over the years, the Coffee House became a theatre for stimulating discussions and helping build social skills. It was also non-discriminatory for us (Smokers) and provided the proper milieu to gel with those of the non-smoking ilk. If only the Asian Games Organizing Committee had responded positively to our suggestion of including " Machis into Glass" in the games, Raipur would have contributed substantially to the country's gold medal Tally! Indian coffee house workers are irritated in those

long practice sessions. They stopped serving a complete matchbox and helped us with a few matchsticks and broken strips. The coffee house at the DK hospital campus was dismantled long ago. An old Banyan tree witnessed growing traffic on both sides. I spent my lovely evening watching others doing loving evening walks and admiring them.

Last night, they left me sleeping on a charpoy at Dhaba. My scooter failed to restart. I pulled my beast up to the next petrol pump and realised I had spent the last penny in the pocket on fueling myself and others. Cursed but got a lift on a Tata-branded truck to get down at Shastri Chowk. I completed the rest of my morning rituals in the duty room and rushed for rounds. DK was a strange workplace where the gun seller (Bandook- wallah) always arranged blood donations. The science of medicine is based on sound Inspection, palpation, percussion, and auscultation. At better times, I walked down Malviya Road to pursue pleasure and strengthened my power of inspection with a cup of golden tea.

In the clinical setting, there was no difficulty in palpating visible lumps. I enjoyed percussion and learned to differentiate between dull and resonant notes. Regular tutorials of playing the Tabla on the wooden table helped. Some of my senior colleagues are good singers! Auscultation was also not a problem except in rheumatic valve diseases, where my musical brain refuses to identify cacophony from the heart.

The presence of Chai well-marked boundaries of the DK campus with Chai wallah & Pan wallah, almost hanging on the edge of the wall. A shout and wave of the hand were good enough reasons to stop for a chai and some conversations. A discussion, I remember why, was a pan wallah at the DK campus unable to produce quality in Pan-like Banarsi—a review joined by professional blood donors and clouds of nonmusical swarming mosquitoes overhead.

The wall of Berlin broke between the DK campus and the outside world, and Tirath & Pandey disappeared. Many doctors also left Raipur without paying the remaining amount from the friendly tea and pan shop owner; some even took a loan from him and never returned.

We had no clue that everything at Raipur was about to change dramatically. Shastri ji himself is on the run at Shastri Chowk, looking for a proper place for rehabilitation. DK campus was later occupied by much more tea-addicted babus at the secretariat; they also vacated old blocks and moved to the new concrete jungle at new Raipur and left a building for a super speciality hospital but without ever haunting the campus of old memories.

यादें अब भी याद आती है - डॉ. संजय मेहता 1987

पंडित जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल मेडिकल कॉलेज..ये नाम सुनते ही मन मयूर फिर उन्हीं सुनहरी यादों के गलियारों में कुलांचे भरने लगता है जहां जिंदगी के बेहतरीन साल गुजरे थे। आज आंखे बंद कर रहा हूं तो उन पांच सालो के तमाम किस्से किसी फिल्म की मानिंद आंखो के सामने से निकले जा रहे हैं।

तो साहब आपको बताऊं कि 87 हमारा मेडिकल दाखिले का साल था । उस से पहले जब भी रायपुर के मेडिकल कॉलेज के सामने से निकलते थे तब दिल पुकारता था ...यही है मंजिल...

शुभ्र धवल एप्रॉन पहने जब कोई दिख जाता तो बस लगता बस किसी तरह इसे हासिल करना है ..अब ये बात दीगर है कि अब इस की शकल भी पसंद नही आती।तो साहब ...एडमिशन हुवा था जबलपुर में और न पूछिए साहब जो भी आता पीट कर जाता...और सुहाने ख्वाब हवा तब हुवे जब एक मोहतरिमा ने भी हमारे गालों पर हाथ साफ कर लिया।

दर्द की न पूछिए साहब मर्दानगी पर लगी ठेस अब भी दिल पर चस्पा है । खैर साहब रायपुर ट्रांसफर करवाया और मार खा के रवा हो कर ताजे ताजे स्टेशन पहुंचे।

ओल्ड हॉस्टल कुछ अलसाया कुछ उनींदा सा लगा और हम भी जागे जागे से सफेद कपड़ों में खुद को उड़ेल के हॉस्टल के मुख्य द्वार पे पहुंचे।

चटाक....फिर हमारे गालों पर वोही बेरहम हथेली और हमने सोचा ये कहा आ गए हम ?

घर पर कहा गया था अगर सेलेक्ट नही हुए तो एक मॉल नुमा किराना दुकान खोलेंगे। खुद को मैले कुचैले पजामे में आटा तौलते इमेजिन किया तो देखा एक साहब सामने से चले आ रहे थे और काफी सीनियर लग रहे थे...हाथ में

एक बोतल थी ...
क्यू बे... असंसदीय भाषा रु/'...कभी बीयर पी है..
नही सर .. नो सर ..अस्पष्ट प्रस्फुटन मुंह से निकला तब तक हम जमीनदोस्त हो चुके थे ...और बोतल हमारे श्रीमुख के भीतर के ऊतक तर बतर कर रही थी।
उनींदा हॉस्टल जाग चुका था और हमारी हालत पे मुस्करा रहा था।
खैर साहब कई बेहतरीन दोस्त उम्दा गुरु और न भूलने वाली यादों को समेटे हम सीनियर हो चले थे। उस दिन हम अपने खाटी मित्र जो "डूबेंगे सनम तुझको भी ले डूबेंगे "को हर पल सार्थक करते थे ..के संग ENT का इम्तिहान दे कर आए थे और प्रोफेसर साहब ने वार्ड निकाला दिया था कह कर कि तुम लोगो का कुछ नही हो सकता।होता है चलता है देखा जायेगा ..सोचते हुए हीरो होंडा पे दोनों यार हॉस्टल को चले। मगर ये क्या ये जूनियर लड़की इतनी गर्मी में पैदल जा रही थी...दिल में दया के अनेकानेक भाव हिलोरे मारने लगे।
तो साहब उसे बीच में बैठा लिया और अब शहंशाओ और बेगम की सवारी हॉस्टल की ओर चली पर मुसीबत के पेड़ पर आफत के फल लगते है।ठीक गेट पर प्रोफेसर मेहरोत्रा ने पुलिस की अदा से रास्ता रोका। सिटपिटाए खिसियाए से हम तीनो सर झुकाए खड़े रहे....साहब फिर हॉस्पिटल भगाए गए.... सर की शरारती आंखे और रौबदार मूंछें दूर तक हमारा पीछा करती रहीं।अनगिनत किस्से...वो जगती रातें.... वो सोते हुवे दिन...किताबो शिकवो शिकायतो रिश्तो के बीच हिचकोले खाता मन.....आज भी कह उठता है––––– काश कोई फैक्ट्री सेटिंग का बटन मिल जाए––––– कॉलेज की उसी जिंदगी को फिर जीने का दिल करता है।

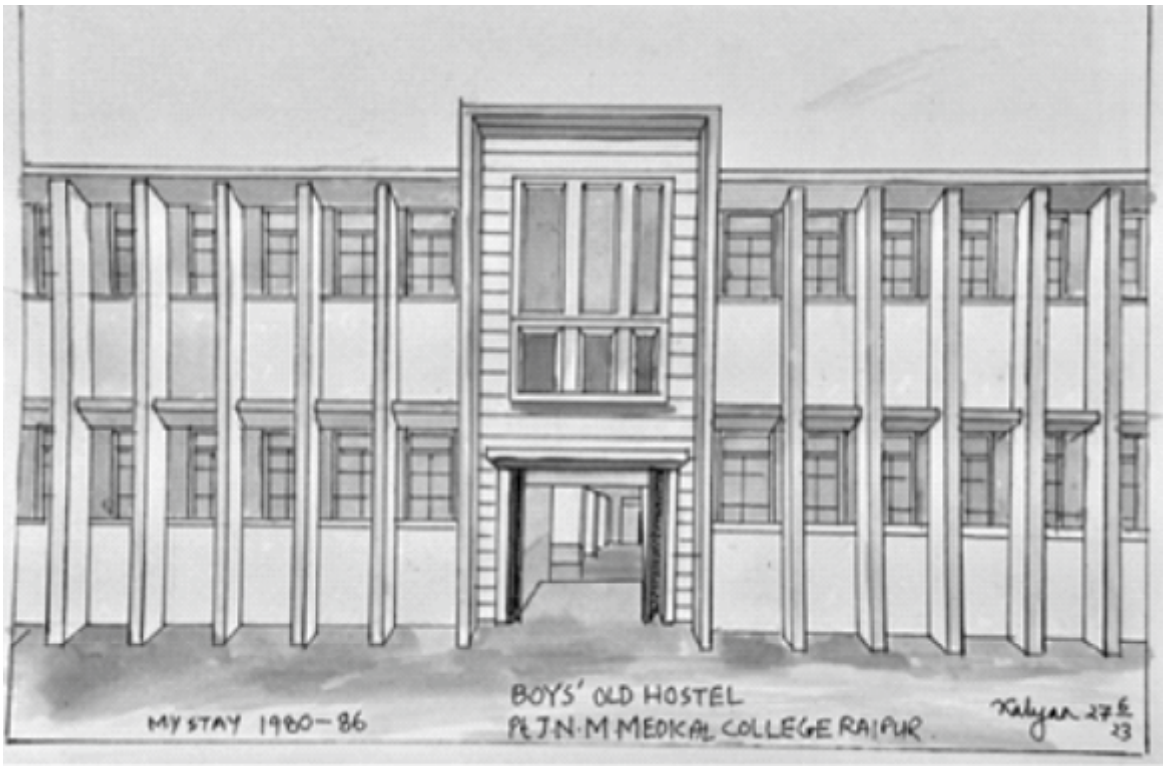

*****

बुलबुले -डॉ. संगीता झा 1980

सचमुच जब भी सुनीति अपने कॉलेज लाइफ के बारे में सोचती है तो उसके पेट में बुलबुले से उठते हैं, कारण वो तो तब दूसरी ही दुनिया की वासी थी। कन्या माध्यमिक शाला की पढ़ी लड़की जब मेडिकल कॉलेज के कॉरिडोर में पहली बार पहुँची तो डर के मारे घिग्घी बंध गई। कहीं से नहीं लगा कि सपनों की मंजिल मिल गई है । उसे तो लगा था कि वो तो तितली है जहां चाहे उड़ेगी भौरों को ललचायेगी लेकिन यहाँ वो एक फ्रेशर जूनियर थी जिसे बहुत सारे नियमों का पालन करना था या कहिए अपनी उड़ान रोकनी थी । सारे जूनियर्स एक टोली में सफेद कपड़ों में सर झुकाए एक साथ चले जा रहे थे । सुनीति को तो अपने चटक सपनों पर गुमान था, अपने स्कूल की टॉपर जो थी । बचपन से ही घर पर उसे अम्मा पापा मेरा डॉक्टर बच्चा कह कर जो पुकारते थे । सुनीति सब से अलगथलक झूमते झूमते दोनों चोटियों का हिलाते हिलाते चल रही थी । अचानक एक सीनियर ने आवाज लगाई –"स्टॉप, स्टॉप हू आर यू ? गिव योर इंट्रोडक्शन ?"

उसकी तो जैसे सिट्टी पिट्टी गुम, पहली बार जिंदगी में अंग्रेजी के इतने शब्दों से पाला पड़ा था । मुँह से आवाज ही नहीं निकली। वाकपटुता, चंचलता को मानो एकाएक पाला मार गया ।
धीरे धीरे उत्तर दिया –"आई एम डॉक्टर सुनीति फ्रॉम रायगढ़ ।" सुनीति का वाक्य भी पूरा नहीं हुआ सारे जोर जोर से ताली पीटकर हंसने लगे और कोरस में चिल्लाए –"डॉक्टर "।

सुनीति को समझ ही नहीं आया कि जब मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया है तो डॉक्टर क्यों नहीं । जबकि यहाँ आने से पहले कितनी बार वो नींद में रात को चीखी थी और हर बार महसूस किया जैसे डॉक्टर शब्द से पूरा वायुमण्डल भरा हुआ है । लगता था मानो सुनीति ही घटना है और सुनीति ही उसका कारण । एडमिशन के दिन पापा के साथ पूरे मेडिकल कॉलेज का इस तरह चक्कर लगाया था मानो ब्रह्मांड की सैर कर रहे हों । कॉलेज बिल्डिंग पर लगे 'सेवा साधना त्याग' के लोगो को पूरी तरह आत्मसात कर लिया । उसके बाद पंद्रह दिनों तक सपनों में कितने मरीजों का इलाज भी किया । ये सब कॉलेज आने से पहले था और यहाँ आने के बाद मानो सब कुछ खत्म सा हो गया ।
कन्या माध्यमिक शाला में पढ़ी सुनीति जहां टेस्ट्यूब को परखनली, मैटल को पदार्थ, केमिस्ट्री को रसायन शास्त्र बोलती थी । यहाँ सब अंग्रेजी में गिटर पीटर करते और अपने स्कूल की बेस्ट स्टूडेंट टाँय टाँय फिस्स। हॉस्टल, कॉलेज में होने वाली रैगिंग, एनाटॉमी हॉल में नंगे शव, फिजियोलॉजी में फिर मेंढक पर एक्सपेरिमेंट, बायोकेमिस्ट्री की क्रेब साइकिल ने सुनीति का मनोबल पूरी तरह से तोड़ दिया । घर और हॉस्टल कहीं भी फुल साइज मिरर ना था इसलिए कभी खुद को भी नग्न ना देखा था और यहाँ मेल और फीमेल बॉडी को ऐसे देखना सुनीति के लिए किसी सदमे से कम ना था । क्लास में सुंदर और सुरीली लड़कियों को सभी तवज्जो देते थे । सुनीति बेचारी दोनों ही श्रेणियों में नहीं थी । एनाटॉमी में मानव शरीर की हड्डियों का अध्ययन भी करना पड़ता था । एक बार बैग से झांकती हुई बोन्स ले वो अपने घर जा रही थी । बस में बैठे एक बुजुर्ग ने समझा एक आदर्श बेटी अपने माँ या बाप की हड्डियाँ नदी में विसर्जित करने जा रही है और बेटियों कि महत्ता पर सहयात्रियों को बड़ा सा व्याख्यान भी दे दिया ।
तभी जीवन थोड़ा लहलहाया जब सेकंड एम बी बी एस में पहुँचे। क्लिनिकल पोस्टिंग में मरीजों की छाती पर

आला यानी स्टेथो रखते ही बचपन के संजोये सपने साकार होते हुए लगे। सुनीति की चंचलता अब किसी को भी अब फूहड़ता नहीं बल्कि सबको उसमें मासूमियत नजर आती थीं और सब उसके फैन बन गए। मेडिसिन में मरीज के दिल की धड़कन, गाइनी पोस्टिंग में गर्भवती माँ के पेट पर आला रख लप डब यानी बच्चे के दिल की धड़कन सुन तो सुनीति दूसरी दुनिया में पहुँच गई । सबसे ज़्यादा शर्म या कहिए झेंप सभी लड़कियों को पहली बार लेबर रूम में पहुँच कर हुई जहाँ दोनों टाँग फैलसये नंगी गर्भवती औरत दर्द से कराह रहीं थी । इसी तरह जब सर्जरी पोस्टिंग में मरीज ने पेंट खोल सभी को अपने अण्डकोष की सूजन यानी हाइड्रोसील दिखाया ।

पहले दिन पैथोलॉजी लैब में खुसते ही सुनीति को फॉर्मलिन की गंध से उबकाई जरूर हुई पर वो अपनी तरह की एक अकेली ही थी सपने देखने की वजह ढूँढ ही लेती थी। नजर नीचे आते 'फाइब्रॉयड यूटरस' वाले स्पेसिमेन पर अटक गई। बाप रे इतनी जतन से छुपाई नारी लज्जा काँच के जार में पड़ी थी । इसी यूटेरस में बच्चा नौ महीने रहता है। एनाटॉमी में नार्मल यूटेरस देखस था, कितना छोटा होता है । वाक्ई ह्यूमन बायलॉजी किसी तिलस्मी रहस्य की तरह है। अचानक यूटरस देखते देखते सुनीति को हिस्टोलॉजी के क्लास की याद आ गईऔर उसकी कल्पनायें स्पर्म और ओवम एक नयी जिंदगी के निर्माता तक पहुँच गयीं । सोच कर ये पगली लड़की बड़ी हंसी –ओवम यानी एक मोटी दुल्हन और उसके छोटे से दूल्हे मियाँ शुक्राणु यानी स्पर्म । विधाता ने भी गजब का स्वयंबर रचस है कि एक ओवम और पचास लाख से ज़्यादा स्पर्म बेचारे ३हाथ में वरमाला लिए हुये । शर्माती दुल्हन ओवरीज से निकल फैलोपियन ट्यूब की तिरछी मिरछी गुफाओ जैसे रास्ते में छुप कर बैठ जाती है । इन लाखों स्पर्म के लिए यूटरस की सिर्फ पाँच इंच की दूरी विश्व की सबसे बड़ी बाधा दौड़ बन जाती है सपहला हर्डल वजाइना का एसिडिक वातावरण आधे दूल्हे तो अपनी वरमाला के साथ वहीं शहीद हो जाते हैं। कमजोरों की तो खैर नहीं। कुछ सिपाहियों की तरह अपनी पूँछ मटकाये आगे चलते जाते हैं। रास्ते में लाखों की संख्या में स्पर्म परवान चढ़ जाते हैं। जो बच जाते हैं उन्हें गर्भाशय की दीवार के दुर्गम मोड़ो को पार कर फेलोपियन ट्यूब में छिपी दुल्हन तक पहुँचना है। बाप रे! वहाँ भी सृष्टि की सबसे बड़ी भूल भूलैया। दो फेलोपियन की गुफाएँ, जायें तो जायें कहाँ ? आधे तो गलत सुरंग यानी गलत फेलोपियन ट्यूब में पहुँच कर मर जाते हैं। एक ही शूरवीर स्पर्म ओवम को भेद आता है। ये सारी कल्पनाओं के बीच पैथोलॉजी की मैडम जो बहुत देर से कलपनाओं में खोयी इस पागल सुनीति को देख रही थी ने सुनीति की ओर इशारा कर गुस्से से पूछा –"टेल मी व्हाट इज दी नार्मल आर. बी. सी. काउंट ?"

सुनीति ने बड़बड़ाते हुये कहा –"एट्टी टू हंड्रेड ट्वेंटी मिलियन "। मैडम गुर्रायी –"आई हैव ऑस्क्ड फॉर आर.बी.सी. काउंट नॉट दी स्पर्म, स्टुपिड गर्ल । "पूरी क्लास ठहाका मार कर हंसने लगी और सुनीति शर्म से लाल। इन सब यादों के साथ सबसे मजेदार थीं जिंदगी की खट्टी मीठी यादें जैसे लड़कों के सपने देखना । क्लास बंक कर पिक्चर जाना । सुनीति को कुछ मित्रों ने होली पर धोखे से भांग वाला पान खिला दिया, फिर सुनीति ने सारा हॉस्टल सिर पर उठा लिया सपूरे हॉस्टल में महीनों सुनीति और होली पर चर्चा चलती रही । राखी पर सुनीति को कक्षा के सारे लड़कों ने एक राखी का पैकेट भेज दिया । बेचारी.....सुनीति महीनों हीन भावना का शिकार बनी रही । आज ये सब लिखना बड़ा आसान लगता है पर उन दिनों ये तो जीने मरने का सबब हुआ करती थीं। लेकिन सुनीति को बड़ी अच्छी सहेलियाँ मिली जो हमेशा उसके कॉन्फिडेंस को बढ़ा इन छोटे मोटे झटकों के दर्द को पूरी तरह से दूर करती

थीं स फाइनल यानी थर्ड एम बी बी एस ने जीवन में पूर्णता का एहसास करा दिया। भाँति–भाँति के मरीज देखना ,उन पर चर्चा करना बहुत अच्छा लगता था । गाइनी पोस्टिंग के दौरान एक वाकये ने सुनीति को पूरी तरह से हिला दिया । एक तीन महीने की गर्भवती महिला एक्टोपिक प्रेगनेंसी रपचर यानी फेलोपियन ट्यूब में में पल रहा बच्चा ट्यूब फाड़ महिला के पेट में आ गया था । मरीज को काफी इंटरनल हेमरेज यानी अंदरूनी रक्तस्राव हो रहा था जिससे उसका ब्लड प्रेशर भी काफी कम हो गया था । उसे कई बोतल खून चढ़ाया गया और सभी डॉक्टरों ने मिल उसका पेट चीर ना केवल रक्त के थक्के निकाले बल्कि एक तरफ की फेलोपियन ट्यूब भी निकाल दी । उसके घर वालों को मरीज की जान से ज्यादा इस बात की चिंता थी कि वो फिर से माँ बन सकती है या नहीं । पहली बार सुनीति को औरत की जिंदगी के दर्द का एहसास हुआ । फिर सुनीति का गुस्सा उस महिला के पति के स्पर्म पर उतरस जिसे वो पृथ्वीराज चौहान की तरह शूरवीर मानती थी, जिसने ठीक पृथ्वी राज चौहान की तरह लाखों स्पर्म के बीच अपने आप को साबित करते हुये ओवम को भेदा थास अब क्या हो गया फुस्स ऐसा चिपका ओवम से कि वापस आकर गर्भाश्य से चिपकना भूल गया । कहाँ गया उसका वो हूणों की तरह पूँछ फटकारना ? यहाँ तो कोई चीन की दीवार नहीं थी और ना ही एवरेस्ट का पर्वतारोहण था । ये छोटे निकम्मे स्पर्म ओवम एसई मिलकर ऐसे खोये कि अपने सारे दुर्लभ गुण भूल गये, जिसका खामियाजा बेचारी औरत भुगत रही थी । उस रात सुनीति ठीक से सो भी नहीं पाई । पूरी रात चीख सुनती रही स अपनी कल्पनाओ में वो ऑपरेशन ब्लू स्टार देखती रही उस महिला का जिसे उसने ठीक से देखस भी ना था, ना उसका नाम वो जानती थी । उसने मृत्यु का उत्सव देखा जहाँ सास ननद और पति मॉनिटर को घेरकर बैठे हुए थे । सबकी आँखो में दुनिया के सारे दुष्टों की क्रूरता लपलपा रही थी । विधाता के हाथों उस महिला के मातृत्व के सारे सपने उजड़ गये थे । सुनीति ने उस दिन तक सिर्फ बाहर की चीख सुनी थी । एक अल्हड़ सुनीति मेडिकल स्टूडेंट से पहले इंटर्न सुनीति फिर जूनियर डॉक्टर सुनीति फिर मिस सुनीति फिर डॉक और आज मैडम सुनीति यानी एक प्रशिष्ठित डॉक्टर बन गई है । मेडिकल साइंस में एक अभूतपूर्व बदलाव किडनी ट्रांस्प्लांट ,लिवर और हार्ट ट्रांस्प्लांट के रूप में आया है । दुनिया भी चाँद पर पहुँच गई है । सुनीति के कॉलेज की बिल्डिंग गलियारे केंटीन सबका आधुनिकरन हो चुका है । लेकिन कॉलेज, बैच मीटिंग ,कॉलेज की डायमंड जुबली नाम सुनते ही सुनीति के पेट में उठने वसले बुलबुले अभी भी यथावत हैं । ये बुलबुले शायद कह रहे हैं "मैडम फिर से वही चुलबुली सुनीति बन जाओ/फिर उन्हीं गलियारों में आओ/ग़र नहीं खोला दिल तुमने/अपने यारों के साथ/सोच लो/फिर ये दिल खुलेगा/औजारों के साथ।

*****

'डाक्टर ड्रैकुला' -डॉ. बालकृष्ण वर्मा 1982

आज से बत्तीस वर्ष पूर्व पैथोलॉजिस्ट की उपाधि लेकर मैं बस्तर संभाग के बीहड़ दूरस्थ क्षेत्र में स्थित एक नवीन प्राथमिक स्वास्थ केंद्र में पदस्थ हुआ। अपनी विशेषज्ञता का भी मरीजों की बेहतर सेवाओं के लिए उपयोग करने की लालसा के साथ उस छोटे से गांव में मैने प्रैक्टिस प्रारंभ किया। स्थानाभाव के चलते एक छोटे कमरे में ही मरीजों का परीक्षण व पैथोलॉजी का कार्य प्रारंभ किया।

एक मरीज को मैने जांच कर रक्त परीक्षण पश्चात इलाज की सलाह देकर ब्लड सैंपल लेकर उसी कमरे में मरीज की उपस्थिति में ही सुविधाओ के अभाव में ई.एस.आर. टेस्ट माउथसक करके लगाया। मरीज अपनी फीस अदा कर कई दिनों तक अपनी रिपोर्ट लेने व इलाज के लिए नही आया।उसकी तबियत और कारण जानने मैने अपने फील्ड स्टाफ को उसके पास भेजा तो उसका जवाब था..सरकार ने अपने गांव में कैसा डाक्टर भेजा है जो 'सूजी–पानी'तो नही लगाता और पैइसा तो लेता ही है साथ ही खून जांच के नाम पर खून निकालकर पीता भी है। तब से मैं उस इलाके में 'खून पिआइया डाक्टर' के रूप में जाना जाने लगा और पढे लिखे लोग साथ ही विभाग के लोग मुझे कहने लगे 'डाक्टर ड्रैकुला'

*****

मेरा पहला डिलीवरी केस - डॉ. प्रशंसा गरेवाल 1978

हम लीबिया से कुछ माह पहले ही भारत आये थे यह 1986 की बात है और जमुना पार दिल्ली की एक नई बस रही कालोनी में एक MIG FLAT खरीदा था उसमें बस डॉ.प्रशंसा गरेवाल का name plate ही लगाया था और एक कमरे को OPD जैसा बना रखा था।

एकाएक रक्षाबंधन के दिन एक 20– 25 साल का युवक अपनी बड़ी बहन को Severe labor pain मे लेकर Clinic में घुसा, मैने कहा भैया अभी यहां डिलीवरी का कोई इंतजाम नहीं है उसने कहा एक बार देख लो मैं भी यहां नया हूँ और मेरी बहन रक्षा बंधन के लिये आई थी एकाएक इसे labor pain उठ गया।

मैने P/V किया तो full dilatation में थी और सेकंड बच्चा था मैने सोचा इसे कहां भेजूं मेरे पास तो अभी पूरा डिलीवरी का सामान भी नहीं है और दूर दूर तक कोई अस्पताल या नर्सिंग होम भी नहीं है मैने कभी भी independent डिलीवरी नहीं कराई थी, मैनें सोचा जब दाइयां घर में लोगों की डिलीवरी करा लेती है तो मैं MBBS DR- क्यो नही करा सकती।

और मैने examination table पर प्लास्टिक कवर बिछाकर उसकी डिलीवरी कराई वाशरुम से बड़ी सी बाल्टी लाकर Placenta डाला। भगवान की दया से उसे episiotomy की जरूरत नहीं पड़ी न ही कोई Tear हुआ। बच्चे का cord भी धागे से बांध दिया। 3–4 घंटे बाद Urine pass कराकर मरीज को छुट्टी दे दी गई। उस पहली डिलीवरी में मरीज ने मुझे डिलीवरी चार्ज 250/– दिये थे।

*****

Birth of a Happy Obstetrician

- Dr Vinaya Maiskar 1986

It has been raining heavily since morning. Dr. Ishita Pandey had not seen the rain pouring. She was in charge of the labour room that day. As the clouds thundered and the heavy downpour started, the labour room hustled and bustled with activity. There is some connection between bad weather and labour room, she muttered to herself. She noted that more complicated and high-risk patients would get transferred in such weather conditions every year. After all, she was working in an apex hospital of the state. And how do patients battle such natural adversities and reach the hospital in time? "Dr. Ishita, you are needed here urgently"," a shrieking call from Sister Beena interrupted her thought process.

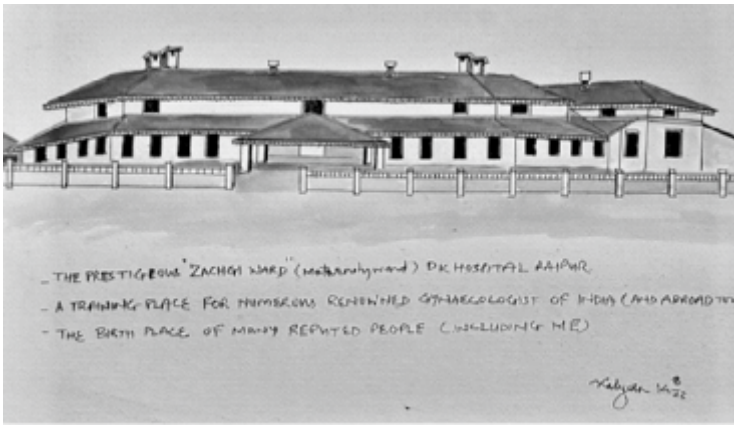

Dr. Ishita rushed to the labour room. The patients in labour were in agony. She immediately ordered pain relief injections. The patient on the last table was uncomfortable feeling nauseous. Her blood pressure was rising to 160/110 mmHg. Her baby's heart rate was also dropping to 100 beats/min. "Sister Beena, this patient needs urgent delivery by Caesarean section. Make the necessary arrangements and shift her to the operation theatre."

As the junior sisters started the Deja Vu of moving the patient to the operation theatre, Dr. Ishita started moving towards the operation theatre. The clouds were still thundering, rain making noise as it poured on the two-wheeler's tin shed parking in front of the Department. It was already 3 p.m., and Dr. Ishita had not taken lunch. This patient needs immediate delivery", she said to herself, "lunch can wait on".

The operation theatre was on the second floor. Anaesthesist Dr. Vedangi was swift in her moves. Everything worked in perfect tandem for the next fifteen minutes. A shrill cry of a baby girl filled the theatre complex. "The baby is absolutely fine'', said Dr. Subodh, the paediatrician on call. Dr Ishita heaved a sigh of relief, finished the surgery, and moved to the resident doctor's rooms. Her lunch was cold by now, but as she swallowed, it seemed to be her most delicious meal!

The evening and the ensuing night were equally hectic. Dr. Ishita was jostling between labour room, ward and operation theatre. By 5 AM, most of the labouring mothers had healthy babies by their sides. Now, the paperwork had to be done! She again buried herself amongst files and started scribbling as fast as possible. The rains had stopped; a fine beam of sunlight entered through the window pane and rested on her fingers. It was dawn now! Dr Ishita, an aspiring obstetriciian and gynaecologist, felt low in the mood by her mundane routine. Is

this what I expected from life: long hours of study, tedious duties, sleepless nights..... with a heavy heart, she started her morning round.

All the patients were waiting for her, their eyes filled with gratitude. The newborn babies expressed their joy by kicking and crying! Dr. Ishita now glowed with joy and satisfaction. Her fatigue vanished, and she started walking fast with a smile. A happy obstetrician was born...

जीत की हार - डॉ. सांवर अग्रवाल 1980

" यह क्या एंटीबायोटिक है?"

पर्चे पर एक अंगुली ठिठकती है, एक प्रश्न दागती है!

" नहीं, यह एंटीबायोटिक नहीं है।"

" पर, मेरा बच्चा बिना एंटीबायोटिक के ठीक नहीं होता, बहुत बार आजमाया हुआ है। आप प्लीज लिख ही दीजिये ।"

" मैं वायरल फीवर के लिये एंटीबायोटिक नहीं लिखता"

" पर बहुत सारे डाक्टर्स तो लिखते है"

" मैं नहीं लिखता।"

" फिर वे क्यों लिखते हैं?"

" इस प्रश्न का जवाब देने के लिये तो वे ही उपयुक्त हैं"

"वैसे तो मैं भी ज्यादा दवाइयों के फेवर में नहीं हूँ, पर हमारे फ्लैट के उपर एक आंटीजी रहती हैं वे हमेशा कहती हैं कि बच्चों को जल्दी ठीक करने के लिये एंटीबायोटिक जरूरी होता है।"

" वो आंटीजी डाक्टर हैं?"

" नहीं है, पर बच्चों का काफी अनुभव है उन्हें, प्लीज लिख दीजिये!"

" मुझे क्षमा करें, मैं नहीं लिख पाउँगा "

" मुझे मेरी किटी पार्टी वाली दोस्तों ने पहले ही आगाह किया था कि आप चाहे जो हो जाए एंटीबायोटिक नहीं लिखेंगे।"

"मैंने एंटीबायोटिक के खिलाफ कोई जिहाद नहीं छेड़ा हुआ कि जो हो जाए पर एंटीबायोटिक नहीं लिखना है, मैं जो कर रहा हूँ उसकी जवाबदेही है मेरी।"

उसने मेरा पर्चा मेरी टेबल पर छोड़ा और "आती हूँ" कहकर बिना फीस दिये निकल कर चली गई! मैं ठगा सा देर तक उस पर्चे को घूरता रहा! याद आया कि आज तो Rational antibiotics पर एक CME में जाना है! फिर स्पीकर का नाम देखा और घर लौट गया।

*****

श्रद्धांजली

मोहन कुमार नागर की याद में

- डॉ. हर्षदेव शरण 1968

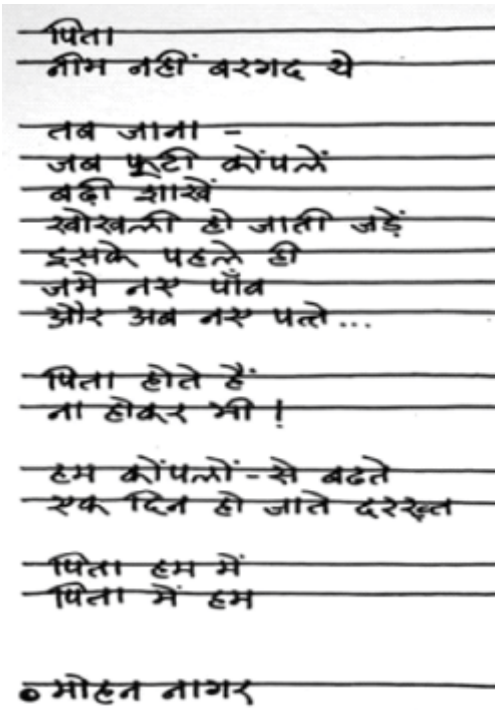
पिता
नीम नहीं बरगद थे

तब जाना -
जब फूटी कोंपलें
बढ़ी शाखें
खोखली हो जाती जड़ें
इसके पहले ही
जमे नए पाँव
और अब नए पत्ते...

पिता होते हैं
ना होकर भी !

हम कोंपलों-से बढ़ते
एक दिन हो जाते दरख्त

पिता हम में
पिता में हम

० मोहन नागर

कोई भी पतझड़ हो
स्थायी नहीं होता
उसके बाद बसंत जरूर आता है
बस इतना होता है कि
कुछ पत्ते झर जाते हैं
क्या पता अगला पत्ता कौन हो?

जब उसने ये पंक्तियां लिखीं थी, उसे क्या पता था कि इस पतझर में गिरने वाला पत्ता वही होगा। कोरोना के मरीजों का इलाज करते करते पति एवं पत्नी दोनों संक्रमित हो गये, एक नहीं दो बार। और दूसरे पतझड़ में... साहित्य की यह प्रबल संभावना, मेडिकल कॉलेज रायपुर का गौरव, मेरे अनुज जैसा डॉक्टर मोहन नागर आखिर झर ही गया।

सात माह का था, जब पिता चले गये। रिश्तेदार मुंह मोड़ गये। तब गरीब नानी और मामा ने छांव दी। मुफलिसी और अभाव को उसने बड़े करीब और बड़ी शिद्दत से महसूस किया और उसकी प्रारंभिक कविताएं नानी, मां, टपकते छत, खाने के खाली बर्तन के इर्द–गिर्द घूमती रहीं।

ऐसी परिस्थितियों से गुजर कर वह चिकित्सक बना, फिर भोपाल से एनेस्थिसिया में डिप्लोमा लिया और एक ग्रामीण क्षेत्र में एक अस्पताल खोला। जीवन संगिनी निष्ठा स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। दोनों ने मिल कर असंख्य रोगियों का उपचार किया। मरीज जो दे जाये, उसी में संतुष्ट।

कलम ऐसी कि चाहे तो तलवार सा वार करे और चाहे तो रोमांस से आपको गुदगुदा जाये। स्वयं के लिए उसने लिखा है,

आंधी जिसे उखाड़ चुका था
मौसम जिसे सुखा ही देता
कि धांस दी नई जड़
और अब नई कौंपल।
ये पेड़ मैं हूं।।

अपने अंतिम क्षणों में जब वह वेंटिलेटर के जरिये अपनी अंतिम सांसे ले रहा था, एक
कागज पे आड़ी तिरछी पंक्तियों मे ये पंक्तियां लिखी थी उसने,
अभी आखिरी पत्ता झरा नहीं, बाकी हैं...
अभी बसंत की उम्मीद बाकी है।।

ये पंक्तियां जब मुझ तक पहुंचीं, तब तक आखिरी पत्ता झर चुका था। मोहन की मृत्यु के बाद उसका तीसरा संकलन प्रकाशित हुआ है। आज उसकी प्रति मिली तो कुछ घाव फिर रिस पड़े। मेडिकल कालेज रायपुर को अपने रत्नों पर गर्व है, या ये कहें कि मुझे इस बात पे गर्व है कि मैं उसी कालेज में पढ़ा हूं, जिसने ऐसे हीरे समाज को दिये।

मगर शर्म मुझे क्यों नही आती हैं - डॉ. सी एस चतुरमोहता 1966

मेरे आस–पास समाज एवं देश में इतना कुछ घटित हो रहा है और उसको जानते पढ़ते और समझते हुए भी मैं इतने निर्विकार भाव से चुप्पी साधकर बैठा हूँ क्यों मेरी चैतन्यता मर गई है या मैं इतना कायर हो गया हूँ की मैं अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा नहीं बोल पा रहा हूँ क्यों मेरी नैतिकता एवं तार्किकता का इतना पतन हो गया है इस देश में नारी की देवी स्वरूप में पुजा की जाती है और उसी देश में जाति, क्षेत्र व धर्म के नाम पर महिलाओं का सामुहिक बलात्कार कर उन्हें नग्न कर गांव की गलियों में घुमाया जाता है और ऐसी 1–2 नहीं सैकड़ों वारदातें हुई । यह सब जानने व पढ़ने के बाद भी मेरे मुंह से एक बार भी धिक्कार नही निकला। सैंकड़ो घर जला दिए गए हजारों लोग शरणार्थी कैंपो में शरण लिए हुए हैं। मैंने इस विषय पर किसी परिचीत से चर्चा भी नही की इस पर आज नहीं तो कल मेरे अन्तरमन का कोई कोना मुझे धिक्कारेगा जरूर।

यह कोई अकेली घटना नहीं है जिसपर मैं मुंह पर फेविकॉल चिपका कर बैठा रहा हूँ बेजुबा गवाह की तरह बैठा रहा किसान आंदोलन के समय भी जब लाखों किसान आंदोलन पर बैठे थे और इस दौरान सैंकड़ो किसानों कि मृत्यू हो गई परन्तु क्या मजाल है कि मेरे मुँह से उनके समर्थन या सहानुभुति में एक भी शब्द निकला हो । कहने को तो यह देश एक कृषि प्रधान देश है और इस देश की आत्मा गांव में बसती है किसान इस देश का अन्नदाता हैं। ऐसी भाषा भाषण देने में व सुनने में बहुत अच्छी लगती है परन्तु उस किसान की पीड़ा सुनने और सहानुभुति पुर्ण बयान करने का समय मेरे पास नही है ।

चिकित्सा पेशे से जुड़े होकर अपने डॉक्टर होने पर में बहुत गौरवान्वित महसुस करता हूँ और समाज में अपने आप को बहुत विशिष्ट दर्जा प्राप्त महसुस करता हूँ परन्तु जब किसी डॉक्टर के साथ कोई अमानवीय घटना घटित होती हैं और विरोध स्वरूप जब हमारा संगठन मुझे काली पट्टी लगाकर विरोध दर्ज करने को कहता है या एक दिन के लिए कलबंद हड़ताल करने को कहता है मैंने कितनी बार काली पट्टी लगाकर काम किया हैं या एक दिन के लिए अस्पताल बंद रखा है? ऐसे समय में मेरी नैतिकता पता नही कहीं चली जाती है सरकार जब मेडिकल प्रोफेशनल को डीग्रेड करने के लिए कानून बनाती है तो कितनी बार मैं इसके विरोध में खड़ा हुआ हूँ या बोला हूँ क्यों ऐसे मौके पर मेरी नैतिकता और डॉक्टर होने का अहंकार भाव पता नही कहाँ चला जाता है।

यह मेरा एक आत्मप्रलाप है और इसी के बहकावे में आकर यह सब लिख रहा हूँ मेरा आप सब से करबद्ध निवेदन है कि कृपया इस लेख को न पढ़े क्योंकि पढ़ने के बाद आपको भी लग सकता है "मगर मुझे शर्म क्यों नही आती।"
माफी सहित

*****

डॉ. राजेंद्र सिंघानिया 1975

चुरा के कुछ लम्हें हम सब जो आज मिले हैं
परत दर परत खुल रहे यादों के सिलसिले हैं

एप्रेन पहन घर से जब निकलते थे शान से
माँ बाप के चेहरे भी दमकते थे मुस्कान से

गली मोहल्ले सब जगह अलग पहचान होती थी
डेविडसन से सुबह और लव एंड बेली से शाम होती थी
याद आ रहीं हैं वो क्लास रूम की बातें
दोस्तों के साथ गुजरी हुई होस्टल की रातें

अलग अलग जगह से आकर यहाँ मिले थे
भविष्य के सफर में हम सब साथ चले थे

अपना मुकाम बनाने सबने देखे सपने नये
मुकद्दर जहां ले गया सब जुदा जुदा हो गये

नये मिलेंगे कुछ बिछड़ेंगे यही जिंदगी का शगल है
हर एक के सीने में बसा यादों का एक महल है

जुदा होकर भी दोस्ती के धागे में बंधे रहे
जब हो सका एक दूसरे की खैरियत लेते रहे

जिंदगी के चंद हसीन पलों को फिर जी जायेंगे
फिर किसी शाम मिलेंगे ये वादा करके जायेंगे

***** कभी अलविदा न कहना *****

दिल ढूंढता है फिर वो ही...

डॉ. हेमंत कुमार (एलकुंचवार) 1979

वो अपने, आंखों में संजोये कितने सपने,
अपने मेडिकल कॉलेज की इमारत पर
गर्व करना,
वो लिफ्ट से पहली बार छत पर जाकर,
पूरे रायपुर का नजारा देखना,
कैंटीन में चाय की चुस्कीयां लेते हुए
मैदान में खेलते साथियों को देखना,
वो हॉस्टल की रसोई से उठती पराठो
की महक,
एप्रोन की तीसरी बटन को देखते हुये
सफाई कर्मी को भी विश करते जाना
वो प्रोफेसरो के मन्त्रमुग्ध कर देने
वाले लेक्चर, ऐसी संस्था हमारा
पंडित जवाहर लाल चिकित्सा महाविद्यालय,
जहाँ सिर्फ डॉक्टरी की पढ़ाई ही नहीं होती है,
जिंदगी का फलसफा भी सिखाया जाता है,
दिल ढूंढता है फिर वो ही....

मेरे कालेज की आत्मकथा - डॉ. कमलेश श्रीवास्तव 1971

हाँ, आज में साठ की हो चली हूँ,
1963 से 2023 का सफर पूरा हुआ,
आज देख रही हूँ
मेरे आंगन में पढ़े, खेले और बढ़े, किशोर,
अब हो चुके युवा, जवान और प्रौढ़,
इकट्ठे हैं मेरे हीरक जयन्ती पर,
तो यादों का समुन्दर हिलोरे लेने लगा है,
बीते पल आँखो मे आंसू ले आए हैं,
साठ साल का किस्सा सुनाने को जी कर रहा है,
हाँ ये सही लम्हा हैं.....
खूबसूरत यादों की तस्वीर दिखाने का,
अपनी विकास गाथा सुनाने का,
स्वर्णिम इतिहास और उपलब्धियों पर गर्व करने का ..... ।

तो सुनों मेरी कहानी, मेरी ही जुबानी.....
जन्म हुआ 1963 साल में, 09 सितम्बर थी तारीख,
आयुर्वेदिक कालेज के आधे हिस्से में,
अवतरित हुई मैं साठ किशोर बच्चों के साथ,
तब डी. के. अस्पताल का साथ मिला, मित्र की तरह
सेवा – साधना त्याग के मूल मन्त्र से,
विज्ञ गुरुजनों के साये मे सीमित साधनों के साथ,
शिक्षण–प्रशिक्षण का आगाज हुआ.....
डेढ़ दशक का सुनहरा दौर चला,
तब पूरे शहर और छत्तीसगढ़ में मेरा मान था,
चिकित्सा क्षेत्र में मेरा इकलौता साम्राज्य था ..... ।

फिर आया, 1976 का साल, मेरी किशोरावस्था का साल,
नई इमारत, नए कलेवर लिए नवयौवना–सी,
जेल रोड में स्थापित हो गई.....
नये आडिटोरियम, लेक्चर हाल्स, डिसेक्शन हाल, वृहद लाइब्रेरी, स्पोर्ट्स ग्राऊंड से सुसज्जित, शिक्षण कार्य परवान चढ़ा.....
सेवा – साधना–त्याग का मूलमंत्र मानों फलित होने लगा ..... ।

मेडिकल संगीत -डॉ. गणेश प्रसाद जैन 1969

मेडिकल की शिक्षा थी,
कभी साइकल कभी रिक्शा थी.
'साइकल का जमाना था,डी.के. तक तो जाना था,
आठ बजे की क्लास थी,सुबह भागम भाग थी..
'शिंदे सर का खौफ था, माथुर सर से मौज था,
डीन एस एल की क्लास में हर कोई मुस्तैद था..
'फारमैक का लेक्चर जो था, उसका सिल्की टेक्सचर था,
मन से डर निकाला था, डीन सर का फार्मूला था..
'अगरवाल सर की सिगरेट कार में भी ना बुझती थी,
पैथालॉजी में सबको नानी याद आती थी..
'मेहता सर की क्लास में सारे प्रेजेंट रहते थे,
गुप्ता सर के पेशेंट की मजे से हिस्ट्री सुनते थे..
'कोशल सर के राउंड का ,गजब का जलवा रहता था,
कोई पेशेंट गोरा था ,कोई पेशेंट कलुवा था..
'शुक्ला सर का शांत मन ,भारी माहौल बनाता था,
मुखर्जी सर के कमेंट्स फ्रेंडली खुशियां लाता था..
'प्रसन्ना सर की हाइट और पीडियाट्रिक्स का मेल था,
बच्चों की किलकारी ही वार्ड का डेली खेल था..
'दवे मैंडम ,डमी पेल्विस पहला पाठ सिखाती थी,
अगरवाल मैंडम की बातें पेशेंट को सहलाती थी..
ये सफर हम दोस्तों का अपने अपने ग्रुप्स थे ,लड़के लड़कियां दूर थे,
अक्सर हम सब चुप चुप थे...
ये वीडियो है...

https://youtube.com/watch?v=v8rDZB6Z8Dk&feature=shared

*****

भूली बिसरी कॉलेज की यादें

- डॉ. संध्या नगरिया 1983

गुजर रही थी कॉलेज के सामने से
मैं बहुत दिनों बाद
आने लगी मुझे अपने
कॉलेज के दिनों की याद
यादों में खो गई मैं
कॉलेज के दिनों में पहुच गई मैं
देखने लगी मैं उन दिनों का सपना
वो कॉलेज तो था मेरा अपना
कॉलेज की मस्ती मुझे आने लगी याद
उस मस्ती की थी कुछ अलग ही बात
सीनियर्स का भी होता था साथ
रैगिंग का भी हमने चख लिया था स्वाद
कभी–कभी क्लासेस बंक कर पिक्चर जाते
वो सारे दिन याद हैं, आते
टीचर्स को निक नेम से बुलाते
घोड़ा, मुर्गी और सनम सर सब याद हैं आते
कभी–कभार होटल भी जाते
होटल जाकर फूले नहीं थे समाते
सब मिलजुल कर खाने का लुत्फ़ उठाते
पैसे कंट्रीब्यूट कर, फिर होटल का बिल चुकाते
हास्टल लाइफ भी अलग ही थी यार
वो दिन याद आते हैं बार–बार
हास्टल में सब रहते थे ऐसे
एक परिवार के सदस्य हो जैसे
हो गई फिर डायमण्ड जुबली की घोषणा
सच हो गया मेरा सपना
खुशी मिलेगी, सबको अपार
कुछ कॉलेज के दिन जी लेंगे यार
कर लेंगे फिर कुछ कॉलेज की मस्ती
सभी दोस्त हैं आज उँची हस्ती
महफिल जमेगी, टीचर्स और सीनियर्स के संग
हम सब पर चढ़ जाएगा फिर से कॉलेज का रंग

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ

- डॉ. विनोद पालीवाल 1979

कल पूरे देश ने किया था शंखनाद
हममें भी छाया था उन्माद.
खूब बजाई तालियाँ,
टनटनाई थालियां.
गगन से की फूलों की बौछार,
गर्व की अनुभूति से दिल हुआ गुलज़ार.
कल ही कहा ,हो ईश्वर का अवतार
फिर आज क्यों पत्थरों की बौछार.
कभी गालियाँ, कभी लात घूँसों की मार
आत्मसम्मान किया तार तार.
हम तो खुश थे कहलाते जो आम
कभी ना चाहा मिले खास नाम.
क्यों भरमाया कि हम हैं दूसरे भगवान,
अच्छा ही होता गर रहने ही देते इंसान.
ना पदक, ना पुरस्कार,
ना है सम्मान की आस.
गर दे सको तो,
दो थोड़ा स्नेह थोड़ी सबुरी
और थोड़ा विश्वास.

*****

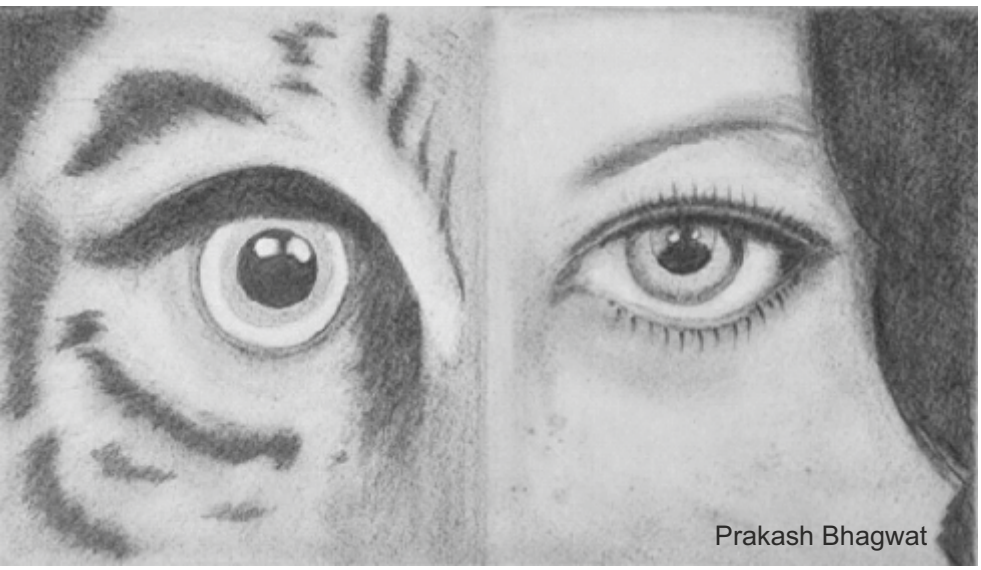
Prakash Bhagwat

एक अनुत्तरित प्रश्न

एक सहज सा किशोर छात्र जब,
मेडिकल कॉलेज में प्रवेश करता है,
आंखो में अनदेखे सपने और,
मन में निश्चय पक्का होता है ।
——
हर चुनौती से लडने का,
हौसला बुलंद होता है,
सफेद कोट में हर रंग का,
बलिदान छिपा होता है।
——
स्वार्थ को भुलाकर वह,
परमार्थ में आनंद पाता है,
अग्निपरिक्षा देकर सबका,
विश्वास जो जीतना होता है।
——
ष्भयष्और ष्असंभव ष्जैसे शब्दों को
शब्दकोश से मिटाना होता है,
आशावाद और अथक प्रयत्न को,
नितदिन दोहराना पडता है।

किसी का कष्ट अनुभव करना ,
उतना भी आसान नही होता है,
जुगनू के सहारे से अंधेरे में ,
गोता लगाना होता है ।
——
कच्चा घडा धीरे –धीरे पक कर,
अपने कथित आकार को पाता है,
बाहर से भले ही कठोर लगे ,
अंदर से नाजुक होता है ।
——
गले में लिपटा शेष नाग सदैव,
ली ,शपथ को स्मरण कराता है ,
अपनी ष्सफेदीष्निष्कलंक रखना
प्राणो से भी प्रिय होता है।
——
प्रश्न कौंधता है एक ,मस्तिष्क में,
जो उत्तर की आशा रखता है ,
क्या एक डाक्टर कभी ,
साधारण मानव हो सकता है?

- डॉ. उर्मिला केसकर 1981

एक आभास - डॉ. आलोक चन्द्र अग्रवाल 1984

वो नहीं थी ,फिर भी थी
मेरे ख़यालों में
मेरे निकायों में
मेरे अहसासों में ।१
वो दर्द मुझे देती थी
एक चुभन सी देती थी
मैं सो नहीं पाता था
पर छू नहीं पाता था
वह कहीं भी नहीं थी
फिर भी थी
मेरे ख्यालों में
निकायों में
अहसासों में।२

मैं उसे छूना चाहता था ,
देखना चाहता था ,
अस्तित्व का उसके
एहसास करना चाहता था
सहलाने की कोशिश की पर 'कमी'
उसकी खल जाती थी
वो नहीं थी
फिर भी थी
मेरे ख्यालों में
मेरे निकायों में
मेरे एहसासों में ।३

बार बार जागकर मैं उसे देखने की
कोशिश करता
उसे अपनी और खींच लूँ या बाँध लूँ
यह चाहत करता
नींद से जाग कर अपनाने की राहत करता
मैं उसे अपना हमसफ़र समझता था पर–
वो नहीं दिखती, नहीं मिलती थी
वो नहीं थी फिर भी थी
"मेरी टाँग कटी हुई थी" ।४

"व्हाइट कोट"... (White Coat) डॉ. सुरेंद्र के. शुक्ला (1985)

हम डॉक्टर इतने भी कमजोर नहीं, की आवाज उठाना ना जाने ?
हम मरीजों का दर्द दफन करके, मुस्कुराते कुछ ज्यादा है!
हम डॉक्टर बोलते कम हैं, समझते कुछ ज्यादा है ।
गणित में हम कच्चे नहीं, गणित हमें भी आता है।
राजनीति हम करते नहीं,लेकिन राजनीति समझते, हम सबसे ज्यादा है ।
कर्तव्य की बात, हमसे करना नहीं ! कर्तव्य निभाना भी, हमें आता है!
कई बार मिल पाते नहीं हैं ,हम अपने और अपनों से!
फिर भी अकसर मुस्कुराते हुए, एक खामोशी में डूब से जाते हैं।
सौदा हमारा भी होता है,लेकिन हम बाजार में, कभी बिकते नहीं।
जिंदगी के हर आंसू, पलक पर छलकने से पहले, गले में हम पी जाते हैं।
जात पात का कोई भेद नहीं ! हिंदू हो या मुस्लिम हो,या फिर सिक्ख ईसाई हो ?
हर कोई हमसे मिलने आता है !
जो दर्द वो किसी को बता ना पाए ? हर वो दर्द हमें बता जाता है।
हमारी सांसे भी टूटती है, अंतिम सांस तक....
कोई गम हमें होता नहीं, की क्या खोया और क्या हमने ! इस जीवन में पाया है..
कॉलर हमारी पकड़ कर ! तुम क्या हमारा कर्ज उतारोगे ?
व्हाइट कोट ही शान है हमारी, तिरंगा हमें नसीब नहीं !
व्हाइट कोट में लिपट कर ही, हम एक दिन फिर मर जाते हैं!
व्हाइट कोट का कोई दाम नहीं है, ये ना तो सड़क पर बिकता है,ना ही कभी ये मैला होता है।
इसे पहन कर डॉक्टर, अपना सुख चैन सब खोता है।
फिर भी कभी, कभी तुम, हमारी कॉलर पकड़ कर ! अक्सर ये भूल जाते हो ?
इसमें तिरंगे का रंग नहीं, लेकिन फिर भी ये तिरंगे जैसा है !
जब जब epidemic का भय आता है....हम सीना तान खड़े होते हैं !
और epidemic में, कई बार घर के अंदर, हमारे अपने भी मारे जाते हैं !
और हम खुद भी मर जाते हैं!
फर्क इतना सा ही है ! हम बॉर्डर पर नहीं ,
देश के अंदर लोगों, की जाने बचाते हैं !
और कई बार इस जंग में, हम भी मारे जाते हैं !
हमारी गुजारिश इतनी सी है, जब हम मरे देश के लिए,
तो हमें भी तिरंगे में लपेट कर, दफन कर आना !
तब शायद कर्ज उतर जाएगा.....
हम डॉक्टर इतने कमजोर नहीं, की हम आवाज उठाना ना जाने???
हमारी कॉलर पकड़ कर, तुम क्या कर्ज उतारोगे .....
व्हाइट कोट ही शान है हमारी, तुम क्या इसे पहचानोगे ?

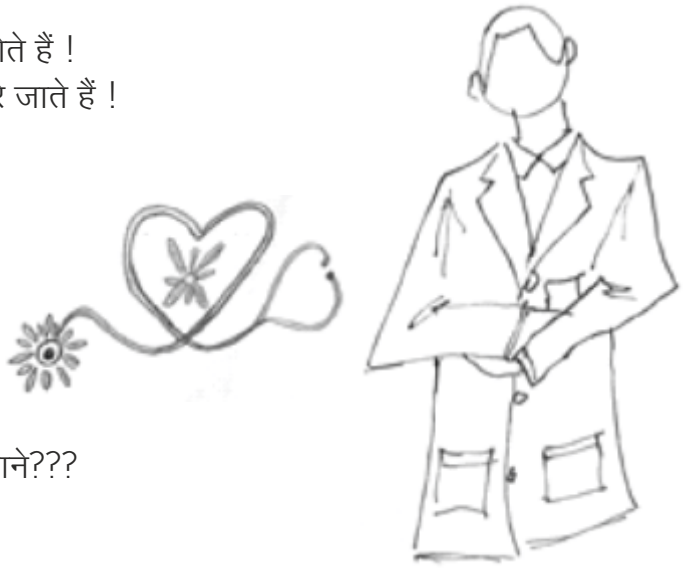

*****

नींव का पहला पत्थर - डॉ. पुष्पलता साहू 1981

यह स्वतंत्रता से पहले के समय की कहानी है जब मेरे पूर्वज सेंट्रल प्रोविंस (Central Province) में रहते थे। इसमें बसे एक गाँव की छोटी सी पगडंडी उधर जाती थी जहां अब पाटन का ग्राम पंचायत स्थित है। कुछेक तीस–चालीस घरों की आबादी थी जिसमें एक–दो पक्के मकान और ज्यादातर मिट्टी की झोपड़ियों वाले थे। यहाँ लोग खेती करके गुजर बसर करते थे. इन गिने–चुने सीमित संसाधनों के बीच भी मेरे पुरखे खुश थे। लेकिन तब स्वतंत्रता आंदोलनों ने ज़ोर लेना शुरू किया। मेरी दादी बताती थीं कि नेता लोग रेडियो पर कुछ ऐलान कर तो देते थे मगर उन तक खबर पहुँचते कई दिन लग जाते । ऐसे ही दिनों में एक खबर इस गाँव के लोगों तक पहुँची – "अब हमारा देश स्वतंत्र हो चुका है. अब सरकार हमारी और क़ानून हमारा होगा। अब हमें उन्नति करने से कोई नहीं रोक सकता" दादी कहती थीं कि कोई यह ढंग से नहीं बताता था कि इन सब बातों का आम लोगों पर क्या असर पड़ेगा। तभी एक और खबर इस गाँव के लोगों तक पहुँची जिसने उन्हें झकझोर कर रख दिया, "सरकार ने यहाँ पर एक बड़ा कारख़ाना बनाने की मंजूरी दे दी है और अब आप लोगों को अपनी ज़मीन सरकार को सौपनी होगी । इसके बदले में जो मुआवज़ा मिले उसे स्वीकार करें और परिवार और मवेशियों को लेकर ज़मीन छोड़ कर यहाँ से चलें जायें । और ऐसा ही किया मेरे दादा जी ने। वह अपनी ज़मीन, खेत और घर छोड़कर परिवार के साथ वहाँ से चल दिए । इस तरह विलुप्त हुए गाँव का नाम नेवई था और इस तरह के कितने ही गाँव विलुप्त हुए, लोग विस्थापित किए गए ताकि एक भव्य कारख़ाना बनाने में कोई अड़चन ना आए. गाँव का नाम भिलई था जो उच्चारण– रूपांतरण के कारण बाद में भिलाई हो गया. मेरे पूर्वज अब दुर्ग ज़िले बस चुके थे। एक अच्छी बात हुई कि दादाजी ज़िला कचहरी में मुंशी बन गए। दादी को इस नयी जगह में अपना नया परिचय बहुत पसंद आया जब लोग उन्हें मुंशिन कह कर बुलाने लगे।

बताने को तो ढेरों बातें है । लेकिन कुछ चुनिंदा बातों में से एक यह है कि मेरी दादी गणित या विज्ञान तो नहीं जानतीं थीं लेकिन इतना बहुत खूब जानती थीं कि रोज़मर्रा की चीजों का प्रबंध सीमित आमदनी में कैसे करें। हमारे दो मंज़िले घर में ऊपर का कमरा अक्सर ख़ाली रह जाता था तो वह कमरा दादी ने एक किराएदार को दे दिया। सुबह–सुबह उनका गाना सबका मन मोह लेता था । हम उनका गाना सुनने के लिए खिड़कियों के पास चले आते थे जब वो गाते थे, "जब जब बहार आयी और फूल मुस्कुराए..मुझे तुम..."

मुझे अभी भी स्मरण है जब बारिश घनघोर हो, काले बादल उमड़ उमड़ के गरज रहे हों तब मेरी दादी कोई लोहे का टुकड़ा आँगन में फेंक देती थीं यह कहके कि इससे बिजली आसपास नहीं गिरेगी । यह आत्मनिर्भर परिवारों का ज़माना था और हमारे घर में कुछ गायें भी थीं। रात में ठंड बढ़ने का अंदेशा हो तो गायों को कम्बल ऊढ़ा देतीं थी, और हमारी उस गाय को तो जरूर जो बछड़ा जनमने वाली होती थी। ग्वाले को भी वह बड़ी हिदायत देती थीं कि इस गाय को क़तार में चलाने के लिए वह अपनी छड़ी का उपयोग कतई ना करे।

मेरी दादी को इस बात का भी अफ़सोस था कि गाँव का एक बैद्य उनके कान का इलाज करने की बजाय गरम सूजा डाल दिया और वो ज़िंदगी भर के लिए एक कान से ठीक से सुन नहीं सकीं उस बैद्य के लिए दादी के मुँह से जो गालियों की बखान शुरू होती तो घंटो ख़त्म नहीं होती। तब दादी ने क़सम खाई मेरे घर में एक बच्चा डॉक्टर हो जो घर के लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों को सम्भाल ले। इस शहर में स्कूल कॉलेज पास– पास में ही स्थित थे। उससे भी बढ़ी बात ये थी कि कारख़ाने वाले शहर के पास स्थित होने के कारण लोगों में जागरूकता एवं पढ़ाई के प्रति रुझान था जिसने मेरे इरादे बुलंद किये कि हाई स्कूल के बाद मैं डॉक्टर बनने वाली शैक्षिक शृंखला वाले कॉलेज में दाखिला लूँ । और मैंने यही किया। एक बार जब दादी के मोतियाबिंद का ऑपरेशन हुआ तो उन्होंने ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर को आग़ाज़ कर दिया था, मेरी पोती भी आप लोगों के जैसी ही एक डॉक्टर बन रही है।

वह रायपुर के बड़े कॉलेज में पढ़ रही है और ये उसकी पढ़ाई का आख़री साल है।

और उस दिन जब डाकिये ने घर के सामने दस्तक दी और एक ट्यूब के जैसी दिखने वाली डाक लेकर आया तो मेरी दादी फूली नहीं समाईं। वह डाक की लिखाई और स्वरूप देख कर जान गयीं कि इसमें कुछ महत्वपूर्ण काग़ज़ात हैं। डाक मेरे नाम से थी और मैंने तुरंत उसे खोला। देखा तो वह मेरी डिग्री थी। दादी ने डाकिये की हथेली में एक रुपया का सिक्का देते हुए वह खनकतीं आवाज़ में बोली– "रख ले। यह मेरी तरफ़ से मेरी पोती के डॉक्टर बनने की खुषी में है।

अब इतने सालों के बाद जब मैं याद करती हूँ तो पाती हूँ कि दादी अपने आप में कितनी सही थीं। वह नीव का पहला पत्थर हैं जो एक बड़ी और ऊँची इमारत खड़ी करने के लिए ज़रूरी है क्योंकि बाक़ी सारे पत्थर इसी को ध्यान में रखकर लगाए जाते हैं। दादी ने हमें व्यावहारिक और साहसी होना सिखाया जो कि एक असरदार व्यक्तित्व की बुनियाद है।

एक पूरी, अधूरी प्रेम कथा - डॉ. भरत नामदेव 1968

चढ़ती जवानी के दिन थे उसके। लक्ष की मसें भींगनी शुरु हो गई थीं और शारीरिक विकास के साथ साथ मन भी तरह तरह के विचारों से तरंगित होने लगा था। घर वालों की नज़र बचा कर फिल्में देख आना और दो आने वाली फिल्मी गीतों की क़िताब खरीद मोहम्मद रफ़ी, मुकेश बनने का उसका रियाज़ ज़ोरो से चल पड़ा था, पर घर वालों के कानों से दूर। बुद्धि की तीव्रता और पढ़ाई ,खेलकूद में अव्वल रहना परिवार और बाहर भी उसे एक सभ्य , आदर्श किशोर की मान्यता दिलाए हुए थे।

उसी काल में घर से थोड़ी दूर एक भरे पूरे परिवार का एक किराये के मकान में आगमन हुआ। वयस्क सदस्यों के अतिरिक्त तीन – चार बच्चे जिनमें एक अत्यंत सुंदर ,गौरवर्णी किशोरी कन्या भी थी सोमी । गली में आते जाते किशोर बालक ने किशोरी को देखा।और पूर्व से ही जवानी की तरंगे उठा रहे मन में जैसे सुनामी आ गई हो ,जो सारे सामाजिक बंधनों को तोड़ उसके प्रति सब तटबंधों को ध्वस्त करता आकर्षित हो चला था।यह प्रथम दर्शन का आकर्षण जैसे प्रेम का सुप्त बीज था जो अनुकूल वातावरण पा प्रस्फुटित होने को मचल उठा था।यद्यपि कन्या ने अपनी कन्योचित संस्कार से उसे एक नज़र देख आंखें फेर ली थी ।

अब लक्ष को न दिन का चौन न रातों की नींद ।वह उसके घर के सामने से दिन भर में बीसियों बार फेरे डालने लगा। लड़की ने भी ध्यान देना शुरू किया और सारे घरेलू काम बाहर घर की डेहरी पर बैठ निपटाने लगी । स्कूलमें पढ़ाई का समय ही एक व्यवधान था उनके नैन मटक्के के कार्यक्रम में । धीरे धीरे प्रेम का अंकुर सर उठाने लगा था । निगाहों से बात होती थी पर प्रत्यक्ष मिलने या इज़हारे – मोहब्बत का कोई साहस दोनों में नहीं था।

दोनों एक ही वक्त पर पास के ही तालाब पर नहाने जाते और घंटो एक दूसरे को देखते, तैरते रहते और नहाते। पास पड़ोस के लोग भी होते और उनकी संशयी जासूस नज़रे उन्हें ज्यादा हिम्मत करने से रोके रखतीं। फिर लड़की ने ही जुगाड़ पैदा किया।वह घर से पूजा का ताम्र लोटा लेकर आने लगी । पास ही मंदिर था ,नहा कर लोटे में जल लेकर शिवलिंग पर अर्पण करती और आंखें मूंद जाने होठों में बुदबुदा कर क्या मांगा करती थी वह। लक्ष में भी शिव भक्ति ने ज़ोर मारना शुरू किया और हिम्मत कर वह भी जा पहुंचा मंदिर में। अब प्रेमिका मंदिर के भीतर और प्रेमी ईश्वर की चौखट पर। दोनों के मन में प्रेम का ज्वार पर दोनों में बोलने और कुछ व्यक्त करने का साहस नहीं।
लक्ष एक संस्कारी ,धार्मिक प्रतिष्ठित परिवार का धर्मभीरु, कुलदीपक था।मंदिर में प्रेम प्रदर्शन और उससे संबंधित क्रिया–कलाप उसे अनुचित और अनैतिक जान पड़ते थे और सोमी भी धार्मिक और कन्योचित गुणों के कारण मौन रहने पर मजबूर थी ।इस तरह यह प्रतिदिन का कार्यक्रम कई दिवस चला जब तक कि द्वेषी,विघ्न–संतोषी लोगों की तांका–झांकी दोनों को मान– भंग की आशंका से डराने न लगी।
गली का फेरा भी कम हो गया उन दुष्टों की वज़ह से। पर जब भी सामना होता एक गिला ,एक शिकायत ,एक मजबूरी चेहरे की मायूसी से बयां होने लगती।

समय यूं ही भागता रहा और नये सत्र में कहानी का नायक मेडिकल की पढ़ाई के लिए शहर की ओर कूच कर गया । याद तो दोनों को तड़पाती रही, पर क्या हो सकता था।छुट्टियों में लक्ष घर आता और जब तक सोमी को देख न लेता चैन न पाता। पर प्रेम यथास्थिति को ही पकड़ा हुआ था।

ठंड के दिन आ गए थे । शादी – ब्याह का मौसम चल रहा था । सोमी के घर पर भी कुछ गहमागहमी दिख पड़ती थी। लक्ष और सोमी की प्रेम अगन नज़रों से दूरी के कारण कुछ दब सी गई थी, पर राख के नीचे दबे शोले की तरह ज़िंदा भी थी। अब सोमी बाहर कम दिखती थी ,पर दिखाई पड़ने पर दर्द ,निराशा के बादल उसके गोरे चांद से मुख पर घिरे रहते।लक्ष व्याकुल होता पर समझ न पाता क्या करे।क्या उसका यह मूक ,बधिर प्रेम यूं ही शब्दों की तलाश में दम तोड़ देगा। दोपहर को लक्ष बाहर कमरे में तख़्त पर लेटा था कि पत्रवाहक ने एक निमंत्रण पत्र अंदर फेंका। उसने खोल कर देखा और मां से पूछा ..मां ये सुमित्रा कौन है ,इसकी शादी का कार्ड है ।मां ने भीतर से कहा अरे वही पड़ोस वाली सोमी , चंदू मिठाई वाले की लड़की। लक्ष जैसे गिरते से बचा।लगा सीने से कुछ बाहर निकल गया हो ।आंखों के आगे बादल से छा गए और कोर से बरसने लगी आंखें।

अचानक लक्ष को ध्यान आया कि सोमी का असली नाम तो सुमित्रा है और खुद उसका लक्ष्मण और घर में सब उसे लक्ष कहते थे।शिवजी नहीं चाहते थे कि उन दोनों का संबंध आगे बढ़े और सुमित्रा – लक्ष्मण का मां बेटे का रिश्ता उन दोनों को हंसी का पात्र बनाए। और हमारे धर्म भीरु नायक लक्ष्मण ने शिवजी को प्रणाम कर सुमित्रा माता से क्षमा मांगी। हे ईश्वर तुमने पाप से दोनों को बचा लिया । लक्ष्मण ने सूटकेश बांधा और शाम को ही अपने मेडिकल कालेज वाले शहर को कूच कर गया,इश्क़ की अधूरी जंग हार, अपने को जीता समझ कर।

*****

तीन टांगों का घोड़ा -डॉ. संजय दानी 1974

पिछले तीन दिनों से मेरी बेटी जिद कर रही थी कि मुझे भी घोड़ा वाला खिलौना चाहिए जैसे की पड़ोसी गुप्ता जी की बेटी रितु के पास है । पड़ोसी राजू गुप्ता जी बैंक अधिकारी थे और उनके घर में सब प्रकार की सुविधाएं नज़र आती थीं । रितु और मेरी बेटी हम उम्र हैं और सहेली भी । बेटी की ज़िद को देखते हुए आज मैं बाज़ार निकला था पचास रुपिये रखकर खिलौना खरीदने अगर वह पचास रूपये के अंदर आ जाये तो। इससे ज्यादा पैसा मेरे पास था ही नहीं कि खिलौने के लिए ख़र्च कर दूं। खिलौने वाले ने मुझे झिड़क दिया कि इतने पैसों में तुम्हें किसी कबाड़ी के पास ही ऐसा कोई खिलौना मिल सकता है अगर तुम्हारी क़िस्मत होगी तो। मैं उदासी के आलम में वापस घर जा रहाथा कि बाजार के बाहर एक घूरे के ढेर पर मुझे मनमाफ़िक चीज़ दिखाई दी । एक गुलाबी रंग का चमक दार घोड़े का खिलौना ही था । पर गौर से देखने से पता चला कि उस घोड़े की एक टांग टूटी हुई थी और घुटने के नीचे लटकी हुई थी । घर आकर मैं अपने कमरे में जाकर उस घोड़े में चाबी भरकर उसे चलाया तो दिखा वह घोड़ा चल तो रहा था पर लंगड़ा लंगड़ा कर चल रहा था । मुझे विश्वास था कि मेरी बेटी उस खिलौने को देखकर खुश होगी । मेरी उम्मीद के अनुरुप मेरी बेटी उस घोड़े को देखकर बहुत खुश हुई और उसे चाबी से चला कर भी देखने लगी । फिर बेटी ने बोला कि पापा खिलौना तो बहुत ही अच्छा है पर यह घोड़ा भी आपकी साइकिल की तरह लहरा लहरा कर क्यूं चलता है ? क्या इस तरह लहरा लहरा कर चलना ही हमारी पहचान है ? बेटी की बातें सुनकर मैं भी सोचने पर मजबूर हो गया कि हमने कोई पाप किया है कि जीवन भर हमें गरीबी का दंश झेलना पड़ेगा ।

इसके बाद बेटी ने जो कुछ कहा उससे मुझे बड़ा सुकून मिला । बेटी ने कहा पापा यह घोड़ा मुझे बेहद पसंद है ।। इसकी लहरा लहरा कर चलना देख कर मुझे बहुत ही अच्छा लगता है । मुझे भरोसा है कि यह घोड़ा रितु को भी बेहद पसंद आयेगी । मैंने तब बेटी से कहा कि बेटी उपर वाले की तराजू सबके लिए बराबर होता है । सुख दुख का बंटवारा वह सबके लिए बराबर करता है । इसके बाद बेटी पड़ोसी के घर अपनी सहेली के साथ खेलने चली गई । आधा घंटे के बाद वह लौटी और कहने लगी कि पापा रितु को यह घोड़ा बेहद पसंद है । वह मुझको अपना नया सीधी चाल चलने वाला घोड़ा देना चाहती है और मेरा घोड़ वह लेना चाहती है । घोड़ों को आपस में वह बदलना चाहती है । जवाब में मैंने कहा कि बेटी ये तुम बच्चों के बीच की बात है । इसमें मैं क्या बोलूं ? अगले दिन शाम को मैं काम से वापस घर लौटा तो देखा कि मेरी बेटी के संग उसकी सहेली रितु बैठी है और वे घोड़े को दौड़ाने का खेल खेल रहीं थी । रितु का घोड़ा बहुत ही बुलंद तरीके से दौड़ता था । वहीं बेटी ने जब अपना घोड़ा दौड़ाया तो वह लहरा लहरा कर दौड़ने लगा । उसे देखकर रितु बहुत खुश हुई और उसे पकड़ने वह दौड़ी । उस समय उसकी दौड़ देखकर मुझे पता चला कि आखिर रितु को वह घोड़ा क्यूं पसंद है । वास्तव में रितु का एक पैर पोलियो से ग्रस्त था और वह भी लंगड़ा लंगड़ा कर चलती थी ।

*****

भार्या शरणम् गच्छामि - डॉ. हर्षदेव शरण 1968

पति और पत्नी के बीच की बहस किसी कव्वाली से कम नहीं होती। और खुदा ना खास्ता अगर आपकी पत्नी उस खूंखार कबीले की हों जिसे शिक्षक कहते हैं तो मान लीजिए कि इस कव्वाली का आखिरी शेर वही पढ़ेंगी। और बकौल बॉलीवुड आप गश खा कर स्टेज पर गिर पड़ेंगे। हर कव्वाली का अंत बस कुछ इसी तरह।

कुछ दिन पहले की ही तो बात है। ढेर सारे शेर लिखे और उतर गया मैदान में कि सारी मर्द जात की इज्जत आज मैं बहाल करुंगा। अभी मतला खत्म ही हुआ था कि वे गरजीं। पहले व्याकरण सही करो फिर बात करना। सिखा कर थक गई। " तुम मुझे बहुत परेशान की हो यह गलत है। कहो कि तुमने मुझे बहुत परेशान किया है। ये सही है। उर्दू आती नहीं जनाब शायरी करने चले हैं।"
मेरी पूंछ टांगों के बीच में और मर्द जात की भैंस पानी में।

खैर एक बार और किसी बात पर वाद विवाद चल रहा था। शायद हमारी और उनकी याददाश्त का तुलनात्मक अध्ययन। एकाएक बड़ी मोहब्बत से बोलीं, तुम ना एकदम हाथी हो। ये हुई ना बात, मैने मन ही मन सोचा। तो आखिर तुम मान ही गयीं ना कि मेरी याददाश्त हाथी के जैसी है। बोलीं, जी नहीं खाने के और दिखाने के और। पूंछ फिर वहीं।

एक दिन बात कुछ आगे ही बढ़ गई। बाल सफेद हो रहे हैं लेकिन आदत नहीं गई। शर्मा जी के यहां डिनर में आंखें नचा नचा कर उस शर्माईन से क्या इशारेबाजी हो रही थी, मैं सब देख रही थी। अरे भागवान उन्होने पूछा कि खाना लगाऊं और मैंने कहा हां ठीक है। बस इतना ही तो। तुम्हें कैसे समझाऊं कि एक कुत्ते से ज्यादा वफादार हूं मैं। पलट कर बोलीं कि धोबी का कुत्ता बना कर छोड़ूंगी, याद रखना। ना तो घर के ही रहोगे और ना ही घाट के। पूंछ फिर अन्दर।

कहा कसम ले लो अपनी। बोलीं, मुझे मरना है जो अपनी कसम दिलाऊं।
शमा ने आग रखी सर पे कसम खाने को।
या खुदा मैंने जलाया नहीं परवाने को।
लोग तो बात का अफसाना बना देते हैं
अच्छे अच्छों को ये दीवाना बना देते हैं।
दो सेकंड नहीं लगे वहां से जवाब आने में
ये ना समझना कि इन शेरों से बहल जाऊंगी,
गर इस पार नहीं तो अबकी उस पार तलक जाऊंगी।
कह कर पलटीं और निकल गई अपनी कई मीटिंग में से एक मीटिंग में।
और हम दबे दबे, पूंछ अन्दर किये हुए
शाम के भोजन का अंजाम सोचते रहे।
कारवां गुजर गया,
साड़ी की मैचिंग देखते रहे।

परदे के पीछे की हकीकत - डॉ. भागवत देशलहरा 1980

बुढ़ापा और बीमारी किसी को भी नहीं छोड़ती चाहे अमीर हो या गरीब बच्चे हो महिला या आप जितने भी जीवधारी जो पैदा हुआ है। चिकित्सकीय कार्य बहुत ही अनिवार्य एवं अद्वितीय कार्य है। जिसको कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता लेकिन यही जब व्यवसायिक रूप धारण कर लेता है तो किसी का घर द्वार जमीन जायदाद पूरा परिवार को बिखरा के रख देता है। आखिर आत्मिक शांति कहीं नजर नहीं आती क्योंकि कल जो अमीर थे अब दूसरी पीढ़ी से पूरी सुविधा उपलब्ध दिन और रात की तरह करवटे बदलते रहती है धन अर्जित करने का कोई मतलब नही चूंकि यदि आप का संतान अच्छा है तो स्वयं धन कमा लेगा यदि अच्छे रहे तो कितना भी धन कमा लो पूरा बरबाद कर देगा और तो और प्रधान मंत्री मोदी जी के नोट बंदी प्रथा मे तो पूरे अमीर लोगों को रास्ते में खड़ा कर दिया है।

एक और बात है जिस रंग का पेड़ हो, उसी रंग का फूल नहीं खिलता आप स्वयं गुड़हल का ले लीजिये उसका फूल लाल रंग का होता है बेसरम पेड़ का फूल हलका गुलाबी होता है पेड़ हरा रंग है उसी प्रकार आपका ही संतान आपके के समान का आपके जैसा नही हो सकता कभी एकाद को छोड़कर इसलिए आप संतान की चिंता करने से आपको कुछ नहीं मिलेगा ।

आम के पेड़ का फल रास्ते चलते लोग गरीब अमीर सब खा सकते हैं लेकिन उसका फल स्वयं नही खा सकते यदि कोशिश करेगा तो कमर टूट जायेगा इसलिए आप अपने संतान से कुछ भी अपेक्षा मत करिए आपको तकलीफ ही होगा कुछ नहीं मिलेगा

गाँव मे कुत्ता आवारा घूमता है और गाय बकरी को चराने जाते है वही शहर के कुत्ता पूरा शौकत कार के साथ मालिक के साथ बिस्तर में सोता है ना जाने कितनी देख भाल किया जाता है वही शहर में गाय बैल आवारा पशु की तरह घूमते रहता है। यदि आप अपनी पत्नी को बोलो बच्चे स्कूल जायेंगें टिफिन बना दो तो नही बनायेगी और कुत्ते का एक नंबर दो नंबर तथा घुमाने मीलों तक चली जायेगी। अब शादी कोई कार्यक्रम की बात करे तो पहले घर की महिलाएं खाना बनाती थीं नाचने गाने वाले बाहर से आते थे अब खाना बाहर वाले बनाते है और घर वाले नाचते हैं।

कितना बदल गया है जमाना सतयुग द्वापर युग त्रेता और कलयुग में चारो युग में कलयुग सर्वश्रेष्ठ हो गया है चूंकि पहले के लोग इतने बलशाली धनाड्य थे लेकिन दिमाग का उपयोग नहीं करते थे । स्वयं भगवान से भिड़ जाते थे और मारा जाता था। अभी कलयुग के उम्र 100 मात्र की है आज का व्यक्ति पशु पक्षी जानवर एक निर्जीव को भी अपने कब्जे में कर लिया है। ट्रेन प्लेन हाथी शेर सभी को अपने कब्जे में लेकर बिना जीन वाले ट्रेन प्लेन को भी हवा एवं पानी में चला कर व्यापार कर लेते है दिमाग का उपयोग कर सभी को अपने बंधक बना लिया है जहाँ तक अपनी मर्जी से हर घर में अपने पास देवी देवता को रखकर पूजा करते हैं।

सिनेमा के क्षेत्र में भी पहले के गायक आशा भोसले लता मंगेश्कर सुरेश वाडकर को भी अब पीछे छोड़ दिया है आज के युवक युवती बच्चे किसी का भी आवाज निकालकर नये अंदाज में गा लेते हैं तथा एक आम युवती बिना कोरियो ग्राफर बहुत ही अच्छी तरह एक्सन एवं हिरोइन से ज्यादा अच्छा परफारमेंस कर लेती है। चूंकि दिमाग का उपयोग लेते है इसलिए मानसिक तनाव ब्लड प्रेशर शुगर मानसिक रोगों की संख्या बड़ गई है।

"GOLD" - Dr Farwa Fairy Niyaz 2011

Do you know that all the gold on Earth formed in supernovae and neutron star collisions before the solar system formed? You cannot create gold in a factory. Even for the universe, it took almost 20 years to create it.
Do you know that gold is extremely malleable, you can create layers thinner than paper, is highly reflective and is an excellent conductor?
But it is also the heaviest "STABLE" atom, which is inert to any reaction and thus immune to decay..!
This is what makes it the most beautiful and precious thing on earth..!
For a Doctor, it takes almost 15 years of constant studies, pressure, (almost total) youth and sacrifices to reach that point in life where we become inert to our own emotions to treat you, to be malleable enough to fit your bills, to be conductive enough to suit your needs and then stable enough to take it all happily with a smiling face and a satisfied heart at the end of the day..!
And so today I can proudly say, "I am Gold, I am a Doctor."

Problems or opportunities - Dr. Vijay Makhija 1976

"There is no problem if you are dead". This was the title of a Novel by Author James Hadley Chase. It is the profound truth of life. One who is dead has no problems, but those who are left behind face many issues. But simultaneously, one who is dead can't enjoy many small things.

Thus, joys, pleasures & problems & pain are two facets of our lives. We can either have or be devoid of both of them. We cannot have or avoid one or another in isolation. It is simply not possible.

Nevertheless, many of us are scared of problems & want to avoid them somehow. As we avoid or ignore them, they don't disappear. Rather, they become larger and more frightening. It is a simple truth that a small fire can be put out quickly by a water jug. If ignored, many fire tankers are not enough to put it out.

Similarly, most problems are best managed in the early stages when they are small. Furthermore, many issues can be avoided by taking proper preventive steps. Our deep & long-term vision can help us in this context.

To solve a problem, we have to observe and understand it deeply. Usually, the solution to a problem is hidden in it. Only that becomes obvious if we stay patient with the problem, understand it & persistently try to find a way to come out of it. Sooner or later, we find it.

Furthermore, actual problems are nothing but another face of opportunities. If we observe deeply, we will find that many beautiful opportunities to grow, develop & prosper often come disguised as problems. These opportunities help us to grow much beyond our present state & capabilities.

Thus, problems are not knocks of trouble but opportunities to grow & become better. They usually don't come into our lives to damage & destroy us but to arouse our hidden capabilities and make us tougher and better. The bigger the crisis, the higher we grow and become better. We can find truth in this statement by observing anyone who has done wonderfully & achieved something worthwhile in life. Our evolution wouldn't happen without problems or challenges in our lives.
This is another way to perceive any problems, challenges or crises. This change of perception can change our lives.

*****

Talent vs. sincerity & positive attitude

- Dr. Vijay Makhija 1976

Many erroneously feel, especially in our early years, that having high talent is a must for achieving success & doing well in life. As we mature & go through various phases of life, we realise that talent alone is not enough to achieve success or do well in life.

Talent requires the combination of a few other admirable qualities to give beautiful results. Talent without a good temperament and application is simply worthless. Excellent results are possible only when talent is coupled with sincerity, hard work and a positive attitude. This combination brings exceptional results in one's life.

We can test this statement's truth by observing many highly talented people who are utter failures. They live an impoverished and miserable life if they lack these essential qualities.

It is simply not enough to occasionally do well in life. One morsel doesn't make a meal. Instead, we have to do well to excel in life consistently. The same applies to these talented people. Many of them think that their talent will take them to great heights. It can help them only if they are sincere in their craft & practice it sincerely & persistently.

In contrast, we find many relatively less talented people who are very sincere, dedicated, hard-working & have a great attitude and do wonderfully than their highly gifted counterparts. They use their capabilities in the best possible ways while their capable counterparts let them dissipate in useless directions carelessly.

We must realise deeply that we create our luck through our ongoing efforts and attitude. So, let us consistently do well to excel in life.

तुम खड़े रहो गांधी

(संकलन- गांधीजी चरखा कात रहे हैं)

- डॉ. रमेश अग्रवाल 1963

पत्थर के बुत बने रहो गांधी
तुम खड़े रहो गांधी"
देश के हर शहर हर मुंशीपैल्टी में
जब कोई मूर्ति लगाने का फैसला होता है।
तो करीब पच्चीस परसेंट के कमीशन पर
सबसे पहले तुम्हारा ध्यान आता है।
फिर किसी तिराहे या चौराहे पर
तुम्हे स्थापित कर. हम ससम्मान कहते हैं
"पत्थर के बुत बने रहो गांधी
तुम खड़े रहो गांधी"

कौओं के सिर पर बैठकर करनेवाली बीट से
गाड़ियों के धूल और धुएं से
धीरे धीरे तुम्हारी संगमरमर की मूर्ति धुंधलाने लगती है
गन्दी हो जाती है
तुम्हारा मिलावटी चांदी का चश्मा
तो कब से चुरा लिया गया है

लेकिन बिना चश्में के
ताकि तुम साफ साफ देख न सको
उस "गोल बिल्डिंग" में होते गोलमाल को
और अगर संसद देश का आईना है।
तो तुम उस आईने में
अपना काला धुंधला चेहरा देखते हुए
"पत्थर के बुत बने रहो गांधी
तुम खड़े रहो गांधी"

*****

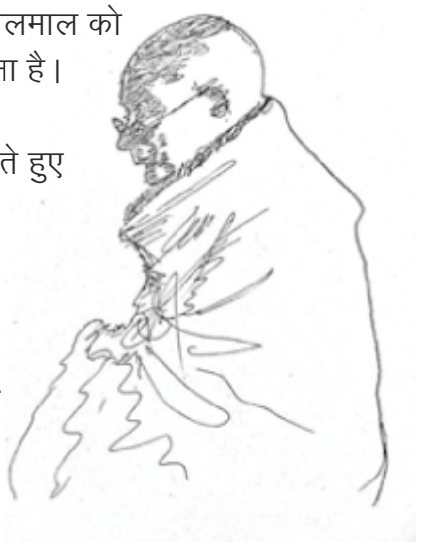

बापू

परे हैं यह, मेरे विश्वास के,

महानता से विस्मित, जन दूर के, क्या पास के

नत हुये तुम्हारे चरणों में देश प्रवास के

स्वयं की बुझा जीवन ज्योत, तुमने जलाये दिये आस के

धन्य है यह धरा, बाग में "स्मित" तुम्हारी सुवास से
कौन समर्थ इतना, पा सके तुम्हारे गुण दृढ़ प्रयास के

बापू, तुम भी बने हो, क्या मेरी तरह हाड़ मांस के

अहंकार सदा दूर रहा, तुम्हारे वास के

त्याग दिये सब सुख साधन और साधन रास के

महलों का सुख त्याग, रहे सदा कुटियों में घास के

प्राण फूंके तुमने दलित–दरिद्र–निःश्वास के

नमक दिया तुमने आन्दोलनों को, जन निराश के

निजात दिलायी तुमने अपमान विदेशी फांस के

बापू, तुम भी बने हो क्या मेरी तरह हाड़ मांस के
थी तुम्हारी युक्तियां कारण, पराधीनता के ह्रास के

विजय पायी बिना वरे रक्त, समय की प्यास के

ऋणी है हम, स्वतंत्रता में ली, हर सांस के

तुम्हारे मूल्यों पर देश सशक्त है समक्ष रिपु विनाश के

ख्याल जीवन पर्यन्त रहा, दरिद्र–दलित का खास के
थे तुम तो बापु, हर प्रदेश, हर जात, हर भाष के

रहोगे विश्व के प्रणेता, हर काल, कल्प, मांस के

मानने से करते इन्कार, ये नक्षत्र भी आकाश के
बापू, तुम भी बने हो, क्या मेरी तरह हाड़ मांस के

- डॉ. स्मित श्रीवास्तव 1992

*****

Future is here - Dr. Pushpalata Sahu 1981

Mix of hope, surprise, thrill, gratitude, all crushed into one— unequal to whole life experience

Thrilled like how you feel during family vacation, birthdays,
Christmas, Diwali or Holi

Old-time friends..shake hands and laugh
No room for disbelief or things forgotten long-past

Only smile and joy
Take all you can, good spirit for your heart and soul

Med school or Gurukul
Both teach how to set the aim
Focused and determined
Shaped our young mind to face the ruthless world

Ponder why...nothing I would want to change even if got a
chance to go back in time

It's an occasion, full of cheers, enthusiasm
And it's time to say out loud
"Cheers!" Wine of life is served!

*****

बजता हूं उसकी वीणा पर - डॉ. सुरेन्द्र अहलुवालिया 1963

पल–पल,
छिनछिन
रूप बदलता
हर मौसम का
हर जीवन का।
अभी धूप थी
बादल छाए
व्याकुल था
अब मौसम भाए,
सुबह अभी थी
शाम हुई अब
व्यथा छलकती
आंखों की
मुस्कान हो गई।
रंग बदलते
हैं मन के भी
था कलुषित कल
संत हो गया
रंग उड़ गया
रूप खो गया
शैशव था कल
उम्र ढल गई,
कहे कोई गर
बुरा हुआ पर
जो होना था
वही हो गया।
किस तिल में
था ताड़ छिपा
और किस बिन्दू में
सिंधू समाया
किसने देखा
किसने जाना ?
ना जानू प्रभु
रूप तुम्हारा
ना पहचानूं
तेरी माया
खेल–खेल में
जाने कब
मन आकुल था
अब तृप्त हो गया।
हास्य रुदन
उसकी ही सरगम
बजता हूं
उसकी वीणा पर
कैसे आंसू
कैसी पीड़ा
जब मुरली
घनश्याम हो गई

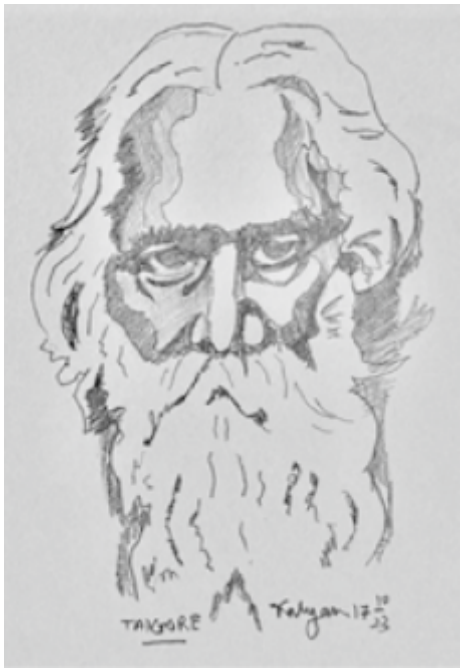

SLUMBER

(With due apology to noble laureate Tagore)

Where the head does not hang in shame,
Where there is no fear of the law,
Where the largesse doled out to sycophants,
Where personality cult is the order of the day,
Where ignorance is purported for gains,
Where engineered casteism is a political game,
Where outlaws sit in law-making houses,
Where murderers are in charge of security,
Where class subserves populistic gimmicks,
in that oblivion,
O, my lord! Let my country sleep!!

'नशीली आँखें'

-डॉ. बलराम टहिलियानी "सचदेव" 1965

बहुत हसीन हैं सनम ये
तुम्हारी काली कजरारी आँखें,
मय का छलकता जाम हों जैसे ये
तुम्हारी मद भरी शराबी आँखें.

कभी प्यार से तो कभी हसरत से
निहारती हैं तुम्हारी शरारती आँखें,
चुप रहकर भी बहुत सारी बातें
कह जाती हैं तुम्हारी बोलती आंखें.

पल में दूर तो पल में पास बुलाती हैं
तुम्हारी हिरनी सी चपल आंखें,
डरता हूँ मैं डूब न जाऊँ कहीं
गहरी झील सी हैं तुम्हारी नीली आँखें.

कभी हाँ तो कभी ना जताती हैं
तुम्हारी शोख और चंचल आंखें,
दिल मेरा मिठास से भर देती हैं
तुम्हारी हँसती गाती ये मधुर आँखें.

जी चाहता है भीगता ही रहूँ मैं
देखकर तुम्हारी रस बरसाती आँखें,
दोष न देना मुझे गर होश खो दूँ मैं
देखकर तुम्हारी मदमस्त नशीली आँखें.

दोस्ती की मिठास

- डॉ. संध्या दुबे 1982

कौन कहता है गुजरा वक्त लौट कर नहीं आता
पुराने दोस्तों से मिलकर तो देखो जरा,
उन्हें अपने आस पास महसूस करके तो देखो जरा,
उन पलों में बेसुध होकर सिंहरो तो जरा,
बीते हुए उन्माद को अतरंग में उतार कर देखो तो जरा।
और जब हम उनसे मिलेंगे तो.....
यादों के बदल छा जाएंगे,
खुशियों की बारिश होगी।
उत्साह का समंदर बन जायेगा,
मधुदिन के स्वर्णाभ पलों में मन खो जायेगा।
जब हम उनके साथ वक्त गुजरेंगे तो.....
वही प्रतिबिंब वही अंदाज दिखेगा,
ठहाको की गूंज, बेमतलब की बातें,
वही चहकते अल्फाज,
मस्ती की फुहारें गीतों का सिलसिला
और अंतहीन बातें।
इन अनमोल पलों के साथ ही.....
मन इंद्रधनुषी हो जायेगा,
धुंधली रेखाएं उजली हो जायेगी,
विस्मृति के वन में फूल मुस्कुराएंगे,
अंतःकरण के कण कण में लय तरंगित हो जायेगा।
जब वो हमसे जुदा होंगे तो.....
''''

गजल - डॉ. संजय दानी 1974

दोस्तों पर जिन्दगी कुर्बान है,
दोस्त बिन संसार इक शमशान है।
दोस्त बनना सबके बूते का नहीं,
दुश्मनी करना बहुत आसान है।

दोस्त चंगा होगा तब ही होगी ईद,
हक में तब तक बस महे रमजान है।
क्या हुआ गर बेवफा है अपना दोस्त,
दोस्ती का अर्थ ही बलिदान है।

चांदनी का जुल्म क्यूँ सहता रहूं,
जुगनुओं से जब मेरी पहचान है ।
माना बरसों दोस्त से मैं मिल न सका,
आज भी वो दोस्त मेरी जान है।

खत - डॉ. द्रोण शर्मा 1981

तमाम मसोसे खयालों
और पिघले जज़्बातों की
रोशनाई में डुबो के
समय की पैनी कलम से
लिखे वो तमाम खत
सिर्फ आने वाले घाव से कतराते
मासूम सफेद कागज के
घुटने टेक देने का सबूत थे
घुटे जज़्बात, और कटे–छंटे,
कतरे खयालों के कसीदे
करीने से सहेजे पुलिंदे
सिर्फ यही तो हैं खत
कागज की कटती छाती पे
निचुड़े खयालों का मवाद !
सौतेला और दूर का रिश्ता बनाते हैं खत !
उन अनलिखे खतों के बारे में कौन बात करेगा
जो सोच, कुसूर, हिचक और खौफ के बीच कहीं खो गए
पर सिर्फ खोए हैं। खत्म नहीं हुए
पर सिर्फ खोए हैं
खत्म नहीं हुए
अब भी भटक रहे हैं
दिमाग और दिल के बीच की भूलभुलाइया में
फंसे रह गए हैं आँखों के कांटों में
शीशे की किरचियाँ बन
आँखों में धँस गए हैं
पोंछे आँसू, आँसू नहीं
दिल की रौशनाई है
जिसे शऊर और रिवायत के सोख्ते ने जज्ब कर लिया
झूठ थे सब खत लिखे, अनलिखेय
झूठ थे सब खत लिखे, अनलिखेय
जो लिखा
वो सिर्फ एक गूंज की चाह थी
कि कोई वो सब कहे मुझसे
जो मैं उस खत में लिख रहा हूँ किसी के लिए
और किसी से इजहार करने से हिचकता हूँ
सारे खत उन तमाम खयालों, जज़्बातों, लव्जों के ढेर हैं
जिन्हें नकारा, नजरअंदाज किया, दबाया,
छिपाया, दुत्कारा, झुठलाया
और दरकिनार किया
और फिर ऐंठ और मरोड़ कर
कलम में ठूस कर
कागज के सीने पर
दाग दिया–
सच का एक पहलू!
आज तक सारे खत दिल और दिमाग कि जद्दो–जहद में
दिमाग की जीत के सबूत थे
एक दिन एक दिन
किसी वीराने में
जब दिमाग अपने गुरूर के सुरूर और खुमारी में होगा
तब जज्बात बगावत करेंगे
उस दिन उन सारे
लताड़े, झुठलाए, दबाए, शर्मीले, दुत्कारे,
नकारे, कड़वे, हिचकिचाते
लफ्जों से एक खत जरूर लिखा जाएगा।
उसकी धार खूनी होगी
पर उसकी तासीर में सुकून होगा
वो ही पहला और
शायद आखरी
सच्चा खत होगा

मृग-तृष्णा - डॉ. श्रीकांत इंगले 1970

मरूस्थल के रेत के टिले,
और बीच बीच में,
रेत की खाई
उसमें सफर करते,
लोगों के काफिले.
दूर जल की जगमगाहट देख,
जल के होने का आभास देती है,
नजदीक जाने पर,
जल तो नहीं मिलता,
पर वही जल का आभास
और कुछ दूरी पर,
दिखाई देता है,
यह मृग–तृष्णा का खेल
यूहीं चलता रहता है,
साथ साथ काफिलों का सफर भी,
यूहीं चलता रहता है,
कुछ लोग हारकर, थककर,
रुक जाते हैं,
पर कुछ लोग,
बिना कोई आशा, अपेक्षा किए,
यहीं सफर जारी रखते हैं,
क्योंकि क्या पता,
कब, यह मृग–तृष्णा
जल का झरना हो,
और आस–पास,
खजुरों के पेड़ों का डेरा हो,
इसलिए, बिना कोई,
आशा अपेक्षा के,
इस जीवन सफर में
यूहीं चलते रहो
अपेक्षा नहीं होगी
तो दुख भी नहीं होगा
और ये जीवन सफर
यूहीं चलता रहेगा
शायद, जीवन सफर के
किसी मोड़ पर,
जल और खजुर भी मिल जाएं
और ये जीवन सफर,
आराम से कट जाएँ।

एक रिले कविता - डॉ. रघुवर पटवा 1972

रीती पिचकारियां,
अबीर सारा बिखर गया
बसंत चुपके से आकर
पलाश पर ठहर गया।

फिर आम के बौरों से
उतरा महक कर
और अलसाई, लजाई
पलकों पर आकर ठिठक गया।

सारा यौवन धरा की
समेट कर,आवारा बादल
आकाश पर
कहीं ठहर गया,कहीं बरस गया।

इंद्र धनुष आखों आंखों में
कई कई जन्मे
बसंत बयार का स्वप्निल झोंका
मन खंगाल गया ।

चली फगुनहट, चली फगुनहट
पुलकित मन आंगन के बासंती सपनों से सट
दृश्य पटल के ऋतु निर्देशक ने
तभी अचानक कह दिया कट–कट–कट ।

कविगण (क्रमश)रू
डॉ. नीरद कांत दत्त,
डॉ रघुवर पटवा,
डॉ. चन्द्रशेखर नायक,
श्रीमती प्रतिमा दत्ता,
डॉ. शरद अवस्थी

*****

My emotional journey

- Dr. Jaya Ramteke 1989

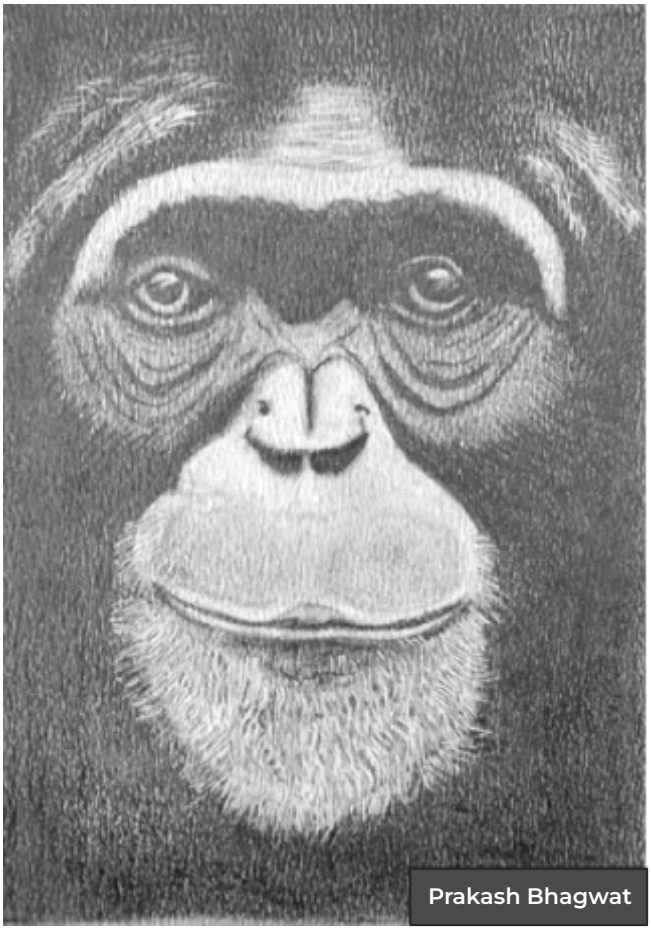
Prakash Bhagwat

In the vast realm of medical knowledge and care,
We stand united, a family beyond compare.
With utmost gratitude, i express my deepest awe,
For our medical teachers, seniors and juniors so raw.

To our teachers, the guiding light of our path,
Who selflessly impart their wisdom with unwavering faith,
You mold our minds, shape our skills with care,
For your dedication, we are forever grateful and aware.

To our seniors, the pillars of strength and support,
Who pave the way and inspire us with every effort,
Your knowledge, experience and guidance we hild dear.
For your presence, we cherish and cheer.

To our junior doctors, the future of this noble profession,
Whose enthusiasm and passion fuel our progression,
We learn from you, as you learn from us,
Together we grow, evolving without fuss.

In the corridors of PT JNM Medical college, we stand,
A collective force, bound by the healing hand,
For the lessons learned and bonds we've formed
We thank you, for getting us transformed.

Gratitude fills our hearts, like the beats of drum,
For the endless support, in both small and immense sum,
To our medical teachers, seniors and juniors alike,
our gratitude knows no bounds, it forever strikes.

So, let us come together, hand in hand,
Celebrating the joueney, the moments so grand,
In this family of healers, our love remains true,
For PT JNM Medical college , we owe it all to you.

*****

ये बारिश का कहर... -डॉ. संजय जिंदल 1982

हाय कैसा ये मौसम
दिन रात, भरी दोपहर
हर पल, हर प्रहर
प्यासों की आस
दिलों की आग
सरहदों को तोड़ता
मजहबों को जोड़ता
बचपन में कागज की कश्ती
किशोर की मस्ती
चढ़ते यौवन का जुनून
सठियाती उमर में सुकून
जीवन का सहर
ये बारिश का कहर ...

स्कूल में छुट्टी
घर की पकौड़ी
दफ्तर में चाय
ठेलों का भुट्टा
सैलानी को भाता
जीवन को आता रास
नाचता मोर, चहकता चकोर
हरियाले खेतों का भोर
नभमंडल पे परिंदों का शोर
जीवन का संगीत हर ओर
ये बारिश का कहर...

कड़कती बिजली
गरजते बादल
टपकते ओले
छपकता पानी
उफनते समंदर
अंगड़ाती नदियां
लबलब तालाब
टर्राते नाले , हर नहर
टपरी और मकानों में
छपरी में , आशियानों में
बाजारों में , मैखानों में
जिधर जाती नजर
ये बारिश का कहर...
ऊंचे पर्वतों पर गरजता
बीहड़ जंगलों पर बरसता
खेतों में, खलिहानों में
बागों में, बागानों में
कम हो तो अकाल है
मद्धम है तो सवाल है
अति हो जाए तो भूचाल है
हर बात पर मचाए बवाल है
रिसती दीवारें, टपकती छानी
बुझते चौके, नमती ढाणी
तन भीगा , आंचल सीला
कच्चे चावल, आटा गीला
जीवन को करता उदास
ये बारिश का कहर ...

धसकती सड़कें, दरकते पुल
उखड़ते खंबे, बिजली गुल
खिसकती जमीं, रस्ते जाम,
डूबती नैया , फूटते बांध
मंझाधार में जीवन की डगर
उड़ती छतरी, फटती बरसाती
उखड़ती पटरी, पलटती गाड़ी,
गिरते दरख्त, उजड़ता जीवन
थमती सांसों का मंजर
ये बारिश का कहर...
इंद्रदेव ! जरा ठहर
थोड़ा रुक, बस कर
अब और नहीं,
ये बारिश का कहर ...

*****

कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन - कल्याण सेन गुप्ता 1982

लिए गाल पे सीनियरों के पांच उँगलियों के निशान और लाल रंग ,
दाढ़ी मूंछे त्याग कर , सफ़ेद वस्त्रों के संग ,
फिर फोर्मलिन के तीव्र गंध लिए मुर्दों से सत्संग ,
ऐसी शुरुआत हुई थी हमारी डाक्टर बनने की जंग।।

पहले खटारे साइकिल पर सवार होकर कालेज पहुंचना,
फिर BIOCHEMISTRY में रोज कोई न कोई नया साइकिल चलाना,
कभी क्रेब्स ,कभी ग्लायकोलिसिस तो कभी ग्लुकोनिओजीनेसीस,
लाख कोशिश की याद करने की, पर हर बार टांय –टांय फिस्स ।।

PATHOLOGY की थी अलग ही विडम्बना,
सूक्ष्मदर्शी में पहचाननी पड़ती थी ऊतकों की संरचना,
स्पुटम और स्टूल में ढूँढना पड़ता था A FB और H Nana,
याद आ जाती थी नानी, पर न मिलते थे नाना ।।

किसी जासूसी किताब सी मनोरंजक लगती थी JURISPRUDENCE
पर परीक्षा में याद नहीं आते थे जैन सर के फॉर्मूलों का SEQUENCE ।।

PHARMACO में एसीटाईल– कोलीन, और एड्रेनेलिन के हाई डोज़ से आता था चक्कर,
SPM में हर मर्ज़ की एक दवा "GREEN LEAFY VEGETABLE" बताते थे डाक्टर ठक्कर।।
क्लिनिकल पोस्टिंग में थी INSPECTION, PALPATION, PERCUSSION और AUSCULTATION की कलाकारी,
फिर PV,PR, PS और Fundus झाँकने की लाचारी,
कभी कॉर्निया, कभी हर्निया, कभी एनीमिया, कभी निमोनिआ,
कोर्स के बोझ से हो गया था DEPRESSION और INSOMNIA-

जैसे –तैसे पास हुए तो लगा कि जान बची और लाखों पाए,
एक MBBS डिग्री के लिए इस कालेज ने खूब सताये,
अब सहन न हो प्रभु, चलो यहाँ से भागा जाये,
सर पे पैर रखकर यूँ भागे कि लौट के फिर अब कभी न आये।।

पर न जाने क्यों आज चार दशक बाद भी .....
वक्त को रोकने को जी चाहता है।
डिसेक्शन हॉल में CADAVER के साथ डीसेक्टर पढ़ने को जी चाहता है।
Nerve Muscle Preparation के लिए मेंढक पकड़ने को जी चाहता है।
कवीश्वर, श्रीधर, हर्षवर्धन, जैन SRG, SKT, DST, PSD
के लेक्चर सुनने को जी चाहता है।
Annual function, Sports meet, Fine arts में
Participate करने को जी चाहता है।

कहा करते थे बड़ी मुश्किल से पांच साल सह गए.....
पर आज न जाने क्यों ऐसा लगता है .....
जिंदगी के सबसे अच्छे पल तो .....
दशकों पीछे रह गए .....

DEPARTMENT OF ANATOMY
MUSEUM

DISSECTION HALL

Teacher's Café

Dr. Kalyan Swaroop Mishra

Our Mentor

Vimla Dave

Sheela Pahlajani

Shobha Sharma

Abha Singh

Tripti Nagaria

B. Sarkar

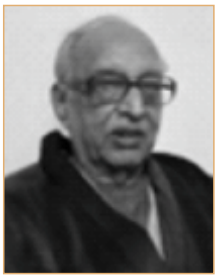
R. S. Mehta

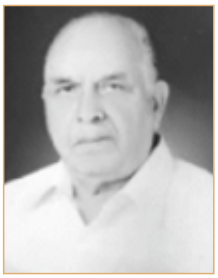
S. R. Gupta

S. K. Tiwari

I. M. Sethi

S. N. Mishra

P. S. Deshpande

G. B. Gupta

Shashank Gupta

V. N. Mishra

H. S. D. Sharma

D. S. Tiwari

R. S. Sharma

Anil Verma

A. K. Sharma

Pradeep Pandey

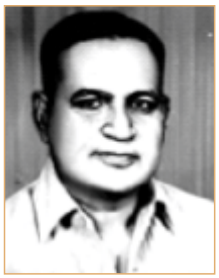
T. C. Choudhary

K. P. Dubey

V. K. Joshi

R. C. Bhola

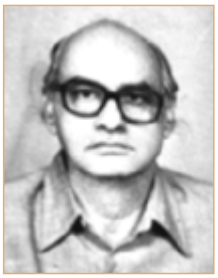
D. S. Dave

A. T. Dabke

N. G. Prasanna

N. L. Phuljhele

S. Phuljhele

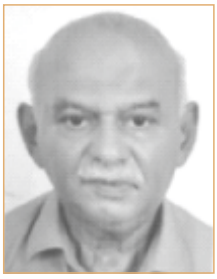
K. Sudarshan

Subir Mukherjee

M. P. Pujari

A. A. Saify

J. S. Saxena

P. K. Mukherjee

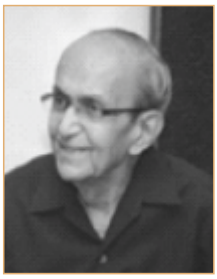
I. M. Shukla

Sushma Verma

Ashok Chandrakar

S. L. Adile

R. L. Gupta

J. P. Nigam

J. K. Sharma

N. K. Goyal

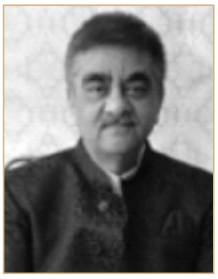
Anup Verma

Harshwardhan

Suparna Shastri

Rajesh Hrishikar

Sanat Sharma

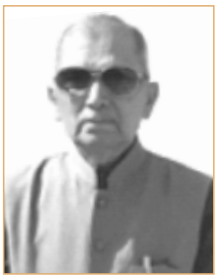
A. K. Rawat

Shridhar Agrawal

B. S. Darbari

R. Vishnoi

Vijaya Sudarshan

D. C. Jain

V. B. Saxena

N. N. Thakkar

N. Gandhi

Department of Anatomy since September 1963

Dr. T.M. Garg
Dr. V. A. Shinde
Dr. K. P. Mehra
Dr. R. K. Zargar
Dr. T. N. Mehrotra
Mrs. K. Pandher
Dr. Manik Chatterjee
Mrs. C Banerjee
Dr S K Das
Dr Mrs. S. Deshpande
Dr D K Sharma
Mrs. M Goyal
Dr. S K Sharma
Dr. H L Kaul
Dr.Ku. Deshmukh
Dr Ku Aruna Thakur
Dr. C M Verma
Dr. Balbir Singh
Dr. H Krishna rao
Dr. R. B. Rathod

Current Faculty

Dr. Jagriti Agrawal
Dr. Praveen Kurrey
Dr. Diwakar Dhurandhar
Dr. Praveen Banjare
Dr. Sangeeta Khare
Dr. Deepti Chandrakar
Dr. Kushal Chakraborty
Dr. Rajni Thakur
Dr. Jitendra Tiwari
Dr. Praveen Katariya
Dr. Pawan Kumar Mourya
Dr. Nandini Shukla
Dr. Kiran Kommuri

Department of Physiology September 1963

Prof. N P Benawari
Prof Dr. R B Mathur
Prof. Dr. M S Chowdhary
Prof. Dr. K S Sharma
Dr. R P Pandey
Dr. K Shandel
Dr. Mrs. Kiran Dukhu
Dr. Mrs. S Verma
Dr. Mrs. D Sarkar
Dr. Mrs K Gupta
Dr. S V Rao
Dr. M G Naidu
Dr. D K Sharma
Dr. B P Tikariha
Dr. Shehnaz Niazi
Dr. Mrs. Veena Goel

Current Faculty

Dr. Sumeet Tripathi
Dr. Namita Shrivastava
Dr. Dipti Bhatt
Dr. Kavita S. Gupta
Dr. Nilabh Gritlahre
Dr. Kosaru Leena
Dr. Kavita Dalpati
Dr. Ankit Sharma
Dr. Nutan Dhabre
Dr. Archana Dekate

Department of Biochemistry Sep 1963

Dr W K Kawishwar
Mrs. V Kawishwar

Current Faculty

Dr. P.K. Khodiar
Dr. Debapriya Rath
Dr. Piyush Bhargava
Dr. Robby
Dr. Neha Sarjal
Dr. Prabha Thakur
Dr. Shikha Banchhor
Dr. Razia Khatoon Khan

Department of Pathology 1965

Dr. I K Somani
Dr. K K Shrivastav
Dr. S Agrawal
Dr. P K Panda
Mrs. V Sudarshan
Dr. Mrs. V Bhola
Mrs. V Panda
Mrs. H L Tiwari
Dr. H K Dua
Mrs. S Raje
Mrs. S Das
Dr. P C Agrawal
Dr. R Gour
Dr. M. M. Arora
Dr. J C Gupta
Dr. S N Phadke
Mrs S Sharma
Mrs. Namita Gupta
Dr. Anil Dave
Dr. K D Ajwani
Mrs. S Diwan
Mrs. Vasundhara Dabke
Dr. Vinod Tiwari
Dr. Manju Sharan
Dr. Gurmukh Meghani
Mrs. S Degwekar
Dr. C M Verma
Dr. Daya Saxena

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 1966

Charles B. Huggings
Discoveries concerning hormonal treatment of prostate cancer.

Peyton Rous
Discovery of tumour inducing viruses.

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 1968

Hargobind Khorana
Robert William Holley
Marshall warren nirenberg
Deciphering the genetic code & it's functioning in protein synthesis.

Mrs. Maleka Hussain
Dr. Suchirita Das Gupta
Dr. Jayshree Padraha
Dr. V Kapse
Kumari Vithila Gupta
Dr. C S Mishra
Dr. B. S Darbari
Dr. R. Vishnoi
Dr. S. S Chouhan
Dr. P K Pradhan

Current Faculty
Dr. Arvind Neralwar
Dr. R. Praveen Siddiqui
Dr. C.K. Joshi
Dr. V. Kapse
Dr. Versha Pandey
Dr. Amit Kumar Bhardwaj
Dr. Vikas Bombeshwar
Dr. Riti Sharma
Dr. Ruchi Verma
Dr. Anubhav Chandrakar
Dr. Vanita Bhaskar
Dr. Kasturi Mangulkar
Dr. Sarita Thakur
Dr. Soodit Pal
Dr. Saroj Kumari
Dr. Pushkar Chaudhary
Dr. Megha Verma
Dr. Aviral Mishra

Department of Pharmacology 1965
Dr. C B Seth
Dr. A Q Saifi
Dr. S L Agrawal
Dr. S S Gupta
Dr. A W Bhagwat
Dr. Mrs. S Shinde
Dr. S P Saxena
Dr. A P Saraf
Dr. M U Natu
Dr. V G Parmanand
Dr. S Gajria
Dr. A Shukla
Dr. Harshwardhan
Dr. Mrs. S Shastri
Dr. A K Bhoite
Dr. Hrishikar
Dr. S K Sharma
Dr. Suraj Agrawal

Current Faculty
Dr. Usha Joshi
Dr. Ajay Halwai
Dr. Shikha Jaiswal
Dr. Manju Agrawal
Dr. Jharna Sahu
Dr. Maya Ramteke
Dr. Kiran Dhurw
Dr. Vijay Babu Verma
Dr. Shephali Singh
Dr. Ajitesh Kumar Mishra
Dr. Geetika Nayak

Department of forensic medicine 1968
Dr. A K Bansal
Dr. D. C. Jain

Current Faculty
Dr. Snigdha Jain
Dr. Nagendra Singh Sonwani
Dr. Shivnarayan Majhi
Dr. Pradeep Kumar
Dr. Aashish Nagdev
Dr. Puran Singh
Dr. Kritika Thakur

Department of community medicine 1965
Dr. I. C. Tiwari
Dr. B. Dubey
Dr. M. P. Dwivedi
Dr. V B Saxena
Dr. N N Thakkar
Dr. Mrs. N Gandhi
Shree R C Ram
Dr. A K Bansal

Current Faculty
Dr. Nirmal Verma
Dr. Kamlesh Jain
Dr. Shubhra A. Gupta
Dr. Ashish Sinha
Dr. Mini Sharma
Dr. Tripti Dhurandhar
Dr. Prashant Jaiswal
Dr. Shailendra Agrawal
Dr. Sandeep Agrawal
Dr. Monika Dengani
Dr. Manu Apurb
Dr. Shelly Sharma
Dr. Deepa Thakur
Dr. Sukriti Thakur

Department of Ophthalmology 1963
Dr. B S Bhatnagar
Dr. S C Jain
Dr. R C Dongre
Dr. Suvarna Bisaria
Dr I M Shukla
Dr. P K Mukherjee
Dr. S N Adile
Dr. A K Chandrakar

Current Faculty
Dr Nidhi Pandey
Dr Swati Kujur
Dr Santosh Singh Patel
Dr Reshu Malhotra
Dr Jayshree Salam
Dr Amrita Verma
Anju Bhaskar
Dr Sangeeta Thakur
Dr Monika Singh Thakur
Dr Vinanti Kangale
Dr Smriti Gupta

Department of ENT December 1967
Dr. R.K. Mehta
Dr. B. S. Mehta
Dr. R L Gupta
Dr. J P Nigam
Dr. J K sharma
Dr. A. K. Jain
Dr. A.K. Verma
Dr. M L Gulati
Dr. N. K. Goel

Current Faculty
Dr. Hansa Banjara
Dr. Varsha Mungutwar
Dr. Manya Thakur
Dr. Durgesh Gajendra
Dr. Ankur Chandrakar
Dr. Pranob Roy
Dr. Hemant Parewa

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 1979
Allan Macleod Cormack
Sir Godfrey Newbold Hounsfield
Development of computer assisted tomography (CAT scan)

Department of Medicine
Dr. Mrs. S Sachdev
Dr. R S Mehta
Dr. G. C. Sipaha
Dr. D Singh
Dr. S R Jain
Dr. S R Gupta
Dr. S.K. Tiwari
Dr. J P Vasavda
Dr. I M Sethi
Dr. S N Mishra
Mrs. B Sarkar
Dr. P S Deshpandey
Dr. G B Gupta
Dr. Shashank Gupta
Dr. V.N. Mishra
Dr. S C Kapoor
Dr. S C Jain
Dr. M K Jain
Ms. Minal
Dr. V K Mehta
Dr. A K Bordia
Dr. B M Tripathi
Dr. P V Acharya
Dr. K L Simlaut
Dr. R Gulam
Dr. P K Nigam

Current Faculty
Dr. D.P Lakra
Dr. Venugopal
Dr. H. Verma
Dr. R. L. Khare
Dr. P. Dubey
Dr. Y. Malhotra
Dr. M. Patil
Dr. S Chandravanshi
Dr. N. Sahu
Dr. A. Toppo
Dr. P. Gupta
Dr. R. K. Patel
Dr. A. Sharma

Department of Cardiology 1 Nov 2017

Current Faculty
Dr. Smit Shrivastava

Department of Surgery 1963
Dr. Chaman Lal Nagrath
Dr. Sikdar
Dr. P C Sogani
Dr. R C Agrawal
Dr. C P tiwari
Dr. K K TrivediDr. A H memon
Dr. K. D. Kaushal
Dr. R P Saggar
Dr. H S D Sharma
Dr D S Tiwari
Dr. B L Jain
Dr. R S Sharma
Dr. A K Verma
Dr. A K Sharma
Dr. P K Pandey
Dr. P L Yadu
Dr. R K Choubey
Dr. V K Agrawal
Dr. JP Kapoor
Dr. V M Bhatnagar
Dr. S C Sinha
Dr. N K Shukla
Dr. A K Goswami

Current Faculty
Dr. Manju Singh
Dr. Sandeep Chandrakar
Dr. Santosh Sonkar
Dr. S N Gole
Dr. Amit Agrawal
Dr. Sarita Das
Dr. Rajendra Ratre
Dr. S L Nirala
Dr. Soumitra Dube
Dr. Manish Sahu
Dr. Singh

Department of Obstetrics & gynecology 1965
Dr. Jangalwala
Dr. Janki
Dr. Benawari
Dr. Subbalaxmi
Dr. Kamla Tiwari
Dr. K Gupta
Dr. Lele
Dr. Bhargav
Dr. V Dave
Dr. S Pehla Jani
DR. Shobha Sharma
Dr. S C Saxena
Dr. Abha Singh

Current Faculty
Dr. Tripti Nagaria
Dr. Jyoti Jaiswal
Dr Ruchi Kishore
Dr Abha Daharwal
Dr Smrity Naik
Dr. Anchala Mahilange
Dr. Anjum
Dr. Suma Velgin Ekka
Dr. Shweta Singh Dhruw
Dr. Supriya Gupta
Dr. Vijeta Lilhare
Dr. Nisha Watti
Dr. Arpana Verma
Dr. Dhawal Shawant
Dr. Neelam Singh
Dr. Madhuri Thakur
Dr. Shiva Sinha

Department of Orthopedics (Aug 1968)
Dr. H D Siddiqui
Dr. R C Ralan
Dr. S Mukherjee
Dr. K Sudarshan
Dr. S Jakharia
Dr. S K Mukherjee
Dr. A. S. Dau
Dr. S. Phuljhele

Current Faculty
Dr. Vinit Jain
Dr. Rajendra Shire
Dr. Atin Kundu
Dr. Pranay Shrivastav
Dr. Saurabh jindal
Dr. Sanjay Jain
Dr. Purshottam baghel

Department of Anaesthesia (10 September 1964)
Dr. T C Chowdhary
Dr. R C Bhola
Dr. M. Singh
Dr. K P Dubey
Dr. DM Raje

Current Faculty
Dr. Pratibha Jain Shah
Dr. Jaya Lalwani
Dr. Rashmi Naik
Dr. Pratiksha Agrawal
Dr. Manjulata Tandan
Dr. A. Sashank
Dr. Sonali Sahu
Dr. Amrita Jain
Dr. Shahida Khatoon
Dr. Sanjay Kant
Dr. Abhishek Bisen
Dr. Piyush Shrivas

Department of Radiology
Dr. S V Thakur
Dr. J Vale

Dr. B M Arora
Dr. M K Gupta
Dr. J S Saxena
Dr. K L Gupta
Dr S C Bishnoi
Dr T K Banerjee
Mr R N Chandela

Current Faculty

Dr. S.B.S. Netam
Vivek Patre
Dr. Rajesh K. Singh
Dr. C.D. Sahu
Dr. Vishal K. Jain
Dr. Subhkirti Agrawal
Dr. Savitri Thakur

Department of Pediatrics 1965

Dr. N G Prasanna
Dr. B C Chaparwal
Dr. R K Mansharamani
Dr. Mrs. R Prassan
Dr. Ms. Bansal
Dr. A T Dabke
Dr. D S Dave
Dr. N L Phuljhele
Dr. Mrs. S. Phuljhele

Current Faculty
Dr Onkar Khandwal
Dr Dheeraj Solanki
Dr Pratima Beck
Dr Virendra Kurrey
Dr Kanak Ramnani
Dr Prankur Pandey
Dr shinjini Shubdha
Dr Sneha Dhruv
Dr Rolly Jain
Dr Madhvi Sao
Dr Poornima Margeka
Dr Akash Lalwani
Dr Shilpa Bhargava

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 1990

Joseph E. Murray
E. Donnall Thomas

Development of kidney & bone marrow transplants.

Love your patient, love your subject. In depth follow up and analysis of data later, will be a big Contribution for improving health care. Molecular genetic analysis of tribals of Chhattisgarh by all of us will Play a big role in management of their non-communicable and communicable diseases.

Dr. A.T. Dabke receiving Padma Shri Award from Honoury President Dr. APJ Abdul Kalam

30 June 2004

MERIT SCHOLARS

First In Aggregate of All University Exams

1968	DR. MISS G.K. BATRA
1969	DR. RAMESHCHANDRA PAHUJA
1970	DR. ARVIND KOSHAL
1971	DR. SURESH CHANDRA TIWARI
1972	DR. MISS. RATNA KRIPLANI
1973	DR. MISS. V. ARORA
1974	DR. MISS DHAN DOONGAJI
1975	DR. NOOTAN KUMAR SHUKLA
1976	DR. LALIT KUMAR SHAH
1977	DR. MISS. ALKA MALHOTRA
1978	DR. MISS. A. KHANDEKAR
1979	DR. RAKESH AGRAWAL
1980	DR. RAKSHA GUPTA
1981	DR. MISS. KALPANA MALHOTRA
1982	DR. ALOK SHUKLA
1983	DR. MISS. ANITA KRIPLANI
1984	DR. G.P. SARNA
1985	DR. MISS TRIPTI NAGARIA
1986	DR. NARESH UTMANI
1987	DR. RAMESHCHANDRA JOSHI
1988	DR. MISS. APARANA JAIN
1989	DR. MISS. NEERJA AGRAWAL
1990	DR. AJAY KUMAR PARASHAR
1991	DR. MISS. GAZALA SIDDIQUI
1992	DR. MISS. SONALI GUPTA
1993	DR. JITENDRA KUMAR JAIN

1994	DR. MILIND P. HOTE
1995	DR. PAVAN SUDARSHAN
1996	DR. MISS. DIPTI DABKE
1997	DR. RAJESH SETHI
1998	DR. DHIRAJ KUMAR SOLANKI
1999	DR. MISS. DEEPI GUPTA
2000	DR. MISS. DINESH MAGU
2001	DR. SANDEEP JAIN
2002	DR. VIKRAM CHATRATH
2003	DR. MISS. NAMRATA AHUJA
2004	DR. MISS NAMRATA CHHABRA
2005	DR. MISS. FATIMA MUNSHI
2006	DR. ANIKET THOKE
2007	DR. RAHUL SHAH
2008	DR. ARTI GUPTA
2009	DR. ANURADHA DAWANI
2010	DR. GAGAN PREET KAUR
2011	DR. SONAL DUBEY
2012	DR. PARIDHI JAIN
2013	DR. GUNJAN SALUJA
2014	DR. GAGANDEEP SINGH SALUJA
2016	DR. DEEPIKA PANDEY
2017	DR. VINAYA CHOUDHARY
2018	DR. NITIN KUMAR KATURIYA
2019	DR. SHIMALI PATLE
2022	DR. TRISHA DUA

Formation of separate state of Chhattisgarh from Madhya Pradesh
1st November, 2000

Ms. G. K. Batra

Ramesh C. Pahuja

Arvind Koshal

Suresh C. Tiwari

Ratna Kriplani

Ms. Veena Arora

Ms. Dhan Doongaji

Nootan K. Shukla

Lalit K. Shah

Alka Malhotra

Ms. A. Khandekar

Rakesh Agrawal

Raksha Gupta

Kalpana Malhotra

Alok Shukla

Anita Kriplani

G. P. Sarna

Tripti Nagaria

Naresh Utmani

Ramesh C. Joshi

Aparana Jain

Neerja Agrawal

Ajay K. Parashar

Gazala Siddiqui

Sonali Gupta

Jitendra K. Jain

Milind P. Hote

Pavan Sudarshan

Dipti Dabke

Rajesh Sethi

Dhiraj K. Solanki

Deepi Gupta

Ms. Dinesh Magu

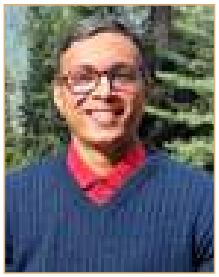
Sandeep Jain

Vikram Chatrath

Namrata Ahuja

Namrata Chhabra

Fatima Munshi

Aniket Thoke

Rahul Shah

Arti Gupta

Anuradha Dawani

Gagan Preet Kaur

Sonal Dubey

Paridhi Jain

Gunjan Saluja

Gagandeep S. Saluja

Deepika Pandey

Vinaya Choudhary

Nitin K. Katuriya

Shimali Patle

Trisha Dua

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2003

Paul Lauterbur
Sir Peter Mansfield
Development of magnetic resonance imaging (MRI)

PRESIDENT
Students Association

1967	MR. RAMESH AGRAWAL
1968	MR. C.P. SHUKLA
1969	MR. A.K. TIWARI
1970	MR.V.K. MITTAL
1971	MR. E.E. SAHNI
1972	MR.D.K. MISHRA
1973	MR. G.R. LOHANA
1974	MR. SAPAN DAS
1975	MISS. A. MALHOTRA
1976	MISS. GURJEET KUKREJA
1977	MR. VIJAY KAPSE
1978	MR. S.L. ADILE
1979	MR. ASHOK AGRAWAL
1980	MR. P.S. SISODIA
1981	MR. SHAUKAT ALAM
1982	MR. S.K. PAMBHOI
1983	MR. RAKESH GUPTA
1984	MR. RAJEEV NARANG
1985	MR. SANJAY BANGAD
1986	MISS. ALKA KANDA
1988	MR. ALOKCHAND AGRAWAL
1989	MR. ABBAS WASI NAQVI
1990	MR. PRASHANT HEGDE
1991	MR. MAINAK DEBSIKDAR
1992	MR. KOSHAL GOYAL

1993	MR. NITIN GOEL
1994	MR. RAJKUMAR GAKKYAR
1995	MR. DEVENDRA KUMAR NAYAK
1996	MR. RISHI AGRAWAL
1997	MR. PUNIT GUPTA
1998	MR. CHANDRAPAL ADWANI
1999	MISS. UZMA ALI
2000	MR. SANDEEP JAIN
2001	MR. ELESH JAIN
2002	MR. GIRISH AGRAWAL
2003	MR. ANISH SIDDIQUI
2004	MR.TIKAM SINGH DHRUW
2005	MR. AMIT JAIN
2006	MR. ABHISHEK MISHRA
2007	MR. SHAILESH JHA
2008	MISS. AAKANKSHA SHARMA
2009	MR. MOHASIN KHAN
2010	MR. DEEPAK JAIN
2011	MR. SAURABH PANDEY
2012	MR. AJAY BHAGAT
2013	MISS. SOUMYA AGRAWAL
2014	MR. BHARAT SAHU
2015	MR. PRIYANKAR MISHRA
2016	MISS. VIDUSHEE SHARMA
2017	MISS. PRAGYA SHARMA

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2005

Barry J. Marshall
J. Robin Warren
Discovery of helicobacter pylori & it's role in gastritis & peptic ulcer.

Ramesh Agrawal

C. P. Shukla

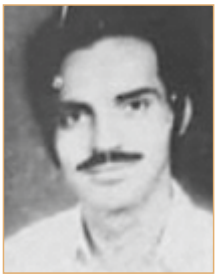
A. K. Tiwari

V. K. Mittal

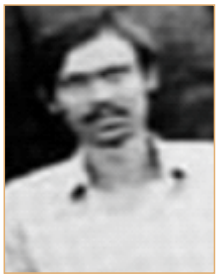
E. E. Sahni

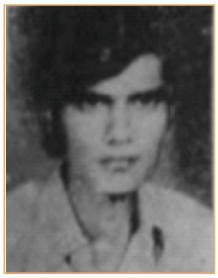
D. K. Mishra

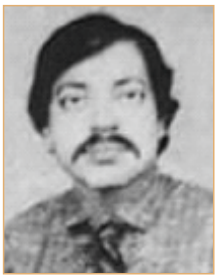
G. R. Lohana

Sapan Das

Ms. A. Malhotra

Gurjeet Kukreja

Vijay Kapse

S. L. Adile

Ashok Agrawal

P. S. Sisodia

Shaukat Alam

S. K. Pambhoi

Rakesh Gupta

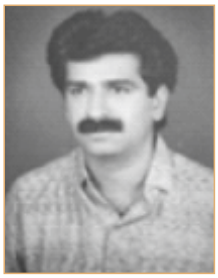
Rajeev Narang

Sanjay Bangad

Alka Kanda

Alok C. Agrawal

Abbas W. Naqvi

Prashant Hegde

Mainak Debsikdar

Koshal Goyal

Nitin Goel

Rajkumar Gakkyar

Devendra K. Nayak

Rishi Agrawal

Punit Gupta

Chandrapal Adwani

Uzma Ali

Sandeep Jain

Elesh Jain

Girish Agrawal

Anish Siddiqui

Tikam S. Dhruw

Amit Jain

Abhishek Mishra

Shailesh Jha

Aakanksha Sharma

Mohasin Khan

Deepak Jain

Saurabh pandey

Ajay Bhagat

Soumya Agrawal

Bharat Sahu

Priyankar Mishra

Vidushee Sharma

Pragya Sharma

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2008

Francoise Barre- Sinoussi
Luc Montagnier
Discovery of human immunodeficiency virus (HIV)

Harald Zur Hausen
Discovery of human papilloma virus causing cervical cancer.

COLLEGE BLUE

Glorious achievements at the inter-university and national level. extracurricular fields

Suraj Agrawal

Represented University
in Cricket 66-67, 67-68, 68-69
Vizzy Trophy 66-67, 67-68, 68-69
Ranji Trophy 68-69, 71- 72

Manik Chatterjee

Represented University
In Extempore story
Writing & Drama Competition 1975.
First Prize in Extempore story Writing & Drama Comp. in
inter-university Youth Festival 1975.

Subir Mukherji

Represented University in Cricket
66-67, 68-69
Football 67-68, 69 – 70
Santosh Trophy 68-69, 69-70, 70-71

Ajay Pathak

Represented University in Cricket
77-78, 78-79, 79-80
80-81, 81-82, 82-83,
Vizzy Trophy 77-78, 78-79, 81- 82
Ranji Trophy 82-83

Neela Tare

Represented University
in Table Tennis 69- 70
Badminton 66-67, 69-70
Winner East Zone inter-university
69-70 Capt. University Winner Table Tennis Team 69- 70

Pankaj Dhabalia

Represented University
in Table Tennis 82-83, 83-84, 84-85
Represented M.P.
in Intab Cup 83-84
State Championship T.T. Doubles
85- 86

Lucy D'souza

Represented University
in Badminton 66-67,69-70
Winner
East Zone inter-university 1969

Alka Kanda

Represented University in
Badminton 85 -86, 86-87
Winner East Zone inter
university 85-86, 86-87

Harish Rathore

Represented University in
Cricket 70-71, 72-73, 73-74
Vizzy Trophy 72-73

Bharati Srinivasan

Represented University in
Badminton 86-87
Winner East Zone inter-
university 86-87

MP Football team for IFA Shield Calcutta Nowgong (Assam) 1969
Dr. Subir in a center with dark jersey

Ravishankar University football team for the East zone Patna 1968
Dr. Subir sitting third from right in white jersey (goal keeper)

Winner of all MP Inter Medical Hockey tournament
at Jabalpur 1972-73 Captain A.K. Saxena

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2010

Robert G.Edwards
Development of in vitro fertilization

Colnel Nat memorial Inter Medical college hockey tournament Amritsar
Captain Anup Verma

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2020

Harvey J.Alter
Michael Houghton
Charles M.Rice
Discovery of Hepatitis C virus

All India Inter Medical college cricket tournament in Pune 1985
Captain Ajay Pathak

Receiving college blue award
Dr. Ajay Pathak and Dr. Pankaj Dhabalia

Winners All M.P. Intermedical Cricket Tournament, Bhopal 83

Winners All M.P. Intermedical Table Tennis Tournament, Raipur 83

Glimpses of Annual sports meet 67-68, 82-83

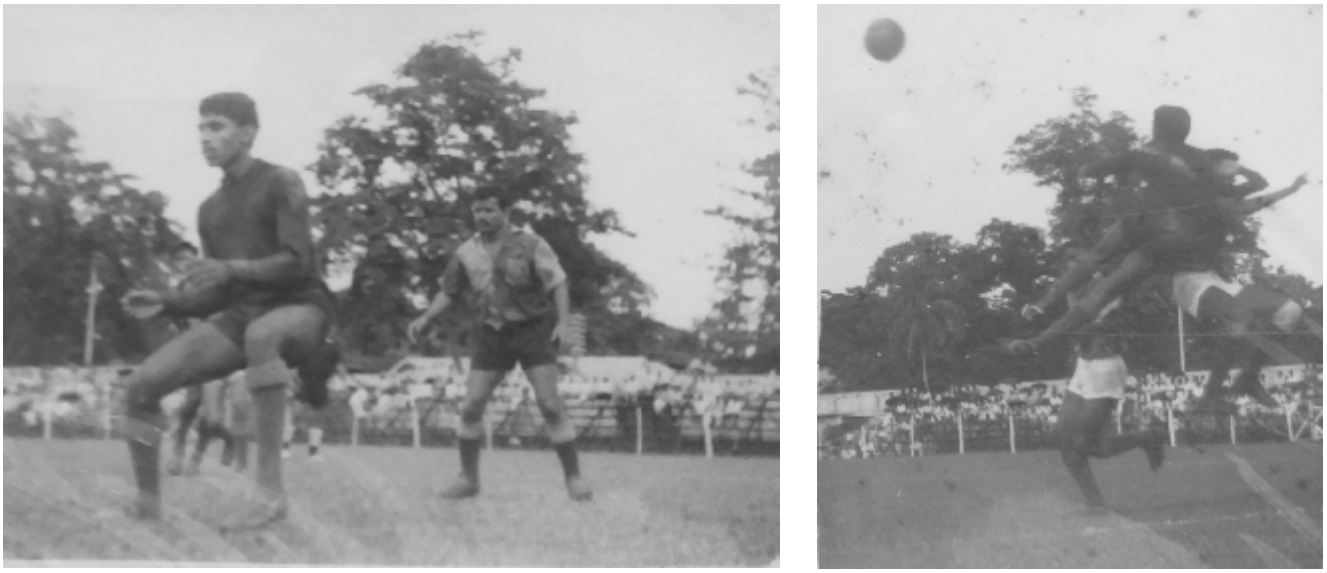

Subir Mukherjee defending goal.

Suraj Agrawal wicket keeper batsman

Represented University In Sports and Other Extra Curricular Activity

S.R. Kulkarni
Cricket 65-66

S.S. Thakur
Cricket 65-66

R.K. Zargar
Cricket 65-66, 66-67

R.K. Thakar
Hockey 66-67

V.M. Roy
Hockey 66-67

K. Hari
Table Tennis 68-69, 69-70, 70-71
Cricket 68-69, 69-70

Ku. R.K. Garcha
Kho- Kho 69-70, 70-71

Ku. S Hussain
Kho-Kho 69-70, 70-71

Ku. A. Tamaskar
Kho-Kho 70-71

Mukti Nandi
Kho-Kho 70-71

A. Hamdani
Cricket 71-72
Captain university winner cricket team 71-72

A. Farishta
Badminton 70-71, 71-72
Cricket 70-71
All round sportsman 72-73

Praveer Banerjee
Cricket 70-71, 71-72, 72-73

R. Ruprela
Badminton 73-74

Sarita Dubey
Table Tennis 70-71, 71-72, 73-74, 74-75 Captain university winner
Table Tennis Team 74-75

Devansh Sharma
Badminton 75-76

Ku. Viraj Sharma
Badminton 76-77

Sanjay Tiwari
Table Tennis 73-74, 74-75, 75-76
Winner all M.P. Intermedical Men's Singles 75-76, 76-77, 77-78

Ram Pandey
Table Tennis 77-78, 78-79, 81-82
Captain All M.P. Intermedical Winner Team

S. Dhabalia
Table Tennis 78-79, 82-83

Inamur Rahman
Hockey 82-83, 83-84

A. Verma
Hockey 83-84

S. Yadu
Hockey 83-84

K. Ravi
Cricket 84-85

A. Singh
Cricket 85-86

S. Laxman
Table Tennis 85-86

S. Parate
Cricket 85-86, 86-87

J. Shinde
Cricket

A. Ali
Badminton

Ku. M. Naidu
Table Tennis 86-87

Rohit Mishra
Athletic 86-87

Sushma Verma
Represented University in Debate

Anil Verma
Represented University in Debate

H. D. Saran
Represented University in Debate

NOBEL PRIZE IN MEDICINE 2023

Katalin Kariko
Drew Weissman
Discoveries concerning development of effective mRNA vaccines against Covid-19

Dr. Shivmangal Singh Suman, voice chancellor, Vikram University giving first prize for best drama to Manik Chatterjee in Inter University youth festival Ujjain 1975.

सात सौं बिस्तरों का अस्पताल

नेताओ जागो होश में आओ
नया अस्पताल जल्दी खुलवाओ

700 बिस्तर अस्पताल

Department of Anatomy

Department of Medicine farewell of Prof. S.K. Tiwari 88-89

U.H.M. MEDICAL COLLEGE

GOLDEN JUBILEE CELEBRATION
50
Golden Jubilee

नेशनल

नेशनल

CHANDRAYAAN-3
Successful soft landing on the south pole of moon on 23rd August, 2023.

Contributors

Kamlesh Shrivastava

Sandhya Nagaria

Rajendra Singhania

Prasansa Garewal

C. S. Chaturmohta

Varinder Nanda

Sanjay Dani

Sanwar Agrawal

Alok Shukla

Harsh D Sharan

Ganesh P. Jain

Vijay P. Makhija

Balram Tahiliani

Shrikant Ingle

Bhagwat Deshlahra

Surendra Ahluwaliya

Raghuwar Patwa

Urmila Keskar

Pushpalata Sahu

Drona Sharma

Sandhya Dubey

Sanjay Jindal

Sanjay Sharma

Kalyan S. Gupta

Sanjay Mehta

Alok C. Agrawal

Jaya Ramteke

Vinaya Maiskar

Fairy Farwa

Balkrishna Verma

Vinod Paliwal

Sangeeta Jha

Bharat Namdeo

Smit Shrivastava

Surendra K. Shukla

Hemant Kumar

LT. Ramesh K. Agrawal

LT. Gurmeet Kaur Chaddha

Kalyan S. Mishra

Praveena Kher

Monika Agrawal

Prakash Bhagwat

Anumeha Nanda

Graphics & Paintings

Acknowledge: Ashish Singh (Journalist), Gokul Soni (Photo Journalist)

Editorial Board Members

अब दुआएं हैं हम सबकी,
अपने साथियों के लिए,
भगवान से शिक्षकों के लिए,
मंदिर से संस्थान के लिए,
और जीवन के उस मधुर गान के लिए,
जिसकी मीठी धुन पर
हम थिरकेंगे मिलजुलकर,
जीवन भर जीवन भर...

दुआएं – स्व.गुरमीत कौर चड्ढा (छाबड़ा)

मित्तल हॉस्पिटल
रायपुर–भिलाई
NABH
से मान्यता प्राप्त
छत्तीसगढ़ के 2 प्रमुख शहरों में अत्याधुनिक तकनीकी सेवाओं के साथ
कैंसर उपचार हेतु समर्पित हास्पिटल
रेडियोथैरेपी
कीमोथैरेपी
मेडिकल एवं हेमेटो ऑन्कोलॉजी
कैंसर सर्जरी
आधुनिक उपचार विधियाँ
कीमोथेरेपी
डे केयर कीमोथेरेपी टारगेटेड कीमोथेरेपी हार्मोनल थेरेपी
रेडियोथैरेपी
RADIO THERAPY, IMRT, IGRT, Linear Accelerator
आयुष्मान कार्ड से इलाज की सुविधा
हमारे कुशल, अनुभवी एवं समर्पित चिकित्सक
डॉ. सुमन मित्तल
MBBS, MD, DM
कीमोथैरेपी विशेषज्ञ
डॉ. स्नेहा चोथरा जैन
MBBS, MD, DNB
कीमोथेरेपी विशेषज्ञ
डॉ. अरविन्द कुमार
कीमोथैरेपी विशेषज्ञ
डॉ. पुनीत सेठ
रेडिएशन आंकोलॉजिस्ट
डॉ. जसवंत जैन
MBBS, MS, MCH
कैंसर सर्जन
डॉ. नवीन वर्मा
कैंसर सर्जन
डॉ. अंबर गर्ग
हेमेटोलॉजिस्ट एवं BMT विशेषज्ञ
डॉ. निहार गुप्ता
रक्त रोग विशेषज्ञ
रायपुर: होली क्रॉस स्कूल के पास, अवंति बाई चौक, पंडरी, फोन: 91313 99570, 93430 79151, 0711 4014442, 4094443
भिलाई: जुनवानी रोड, सूर्या टी.आई.मॉल के पास, फोन: 0788 2294440, 2294443, 7722880844

SHRI RAM IMAGING
& DIAGNOSTIC CENTER
Ground Floor, Raheja Towers, Jail Road, Raipur
Mo. : 9294870000
Triveni
Diagnostics
Near Telibandha Express Way, Behind Bank of India,
Beside Sky Automobile, Telibandha, Raipur, 492001
OUR SERVICES
1.5 T MRI
50 SLICE CT
5D USG
X-RAY
MAMMOGRAPHY
PATHOLOGY
ECG
ECHO
TMT
PFT
AUDIOMETRY
EYE TEST
BIOPSY
INTERVENTION
Dr. Anand Bansal
DIRECTOR
MBBS MD DNB
CONSULTANT RADIOLOGIST

BAL GOPAL CHILDREN HOSPITAL

NABH Accredited

KEY FEATURES

- **188** BEDDED HOSPITAL
- **24x7** OPD, IPD & SURGERY
- **26** SPECIALIST DOCTORS
- **30** VENTILATORS
- AMBULANCE ICU ON WHEELS
- DAY & NIGHT PHARMACY

Healthcare is as important as Mother's love..

We offer a complete range of healthcare services for children from birth, supported all through their childhood and growing years.

ALLIED

- Ped Cardiology
- Ped Orthopedics
- Ped Endocrinologist
- Skin
- Occupational Therapy
- Ped Dentistry
- Physiotherapy
- Child Psychology
- Speech Therapy
- Dietician

SMART CARD

- Dr. Khoobchand Baghel Swasthya Sahayata Yojana (DKBSSY)/ Ayushman Bharat Yojana
- Biju Swasthya Kalyan Yojana(BSKY), Odisha Govt.

CASHLESS FACILITY from various Insurance/TPA and also empanelled with Chhattisgarh State Electricity Board for their employees.

FACILITIES & SERVICES

- Neonatal Intensive Care Unit (NICU)
- Pediatric Intensive Care Unit (PICU)
- Pediatric Surgery (Neonatal & Pediatric)
- Pediatric Emergency
- Dedicated Helpline
- Diagnostic Facilities

EMPANELED with Govt. of Chhattisgarh and Central Govt. for their employees.

BAL GOPAL CHILDREN HOSPITAL

Opposite Aashirwad Bhawan, Near mahila Poilce Station, Byron Bazar, Raipur (C.G.)

Call : 78699 20001, 94242 23927, 0771 4225600

balgopalhospital@gmail.com | www.balgopalhospital.com | Bal Gopal Hospital

---

Suyash Hospital

MEDICAL & HEALTH CARE INSTITUTE

(A Unit of Suyash Institute of Medical Science Pvt. Ltd.)

NABH

सुयश हॉस्पिटल

की ओर से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

24/7 EMERGENCY +91 99263 86660

KOTA GUDHIYARI ROAD RAIPUR (C.G)

PH : +91771 2575275, 2572222

www.suyashhospitalraipur.com | suyashhospitalraipur@gmail.com

Follow us on:

संजीवनी कैंसर हॉस्पिटल
यूनिट 1
यूनिट 2
यूनिट 3
छत्तीसगढ़ का एकमात्र अस्पताल जहां कैंसर ट्रीटमेंट हेतु
एक ही छत के नीचे निम्नलिखित सबसे एडवांस्ड सुविधाएं उपलब्ध
रोबोटिक कैंसर सर्जरी
रैपिड आर्क रेडियोथेरेपी
पेट स्कैन
स्पेक्ट (गामा कैमेरा)
बोन मैरो ट्रांसप्लांट
हमारे विशेषज्ञों की टीम
डॉ. यूसुफ़ मेमन
MBBS, MS, FSOG, FIAGES, FMAS
डायरेक्टर एवं सीनियर कैंसर सर्जन
डॉ विकास गोयल
MD, DM (HAEMATOLOGY)
रक्त रोग एवं ब्लड कैंसर विशेषज्ञ
डॉ अर्पण चतुर्मोहता
MS, MCh, FIAGES
सीनियर कैंसर सर्जन
डॉ अनिकेत ठोके
MD, DNB, ESMO
कीमोथेरेपी विशेषज्ञ
डॉ दिवाकर पांडेय
MS, MCh, DNB, FACS
सीनियर कैंसर सर्जन
डॉ राकेश मिश्रा
MBBS, MD, DM
मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट
डॉ. विवेक पटेल
MBBS, MS, MCh
कैंसर सर्जन
डॉ. हितेन मिस्त्री
MBBS, MD (ANAESTHESIA)
एनेस्थीसियोलॉजिस्ट
डॉ रुद्र प्रताप सिंह
MS, DNB (ORTHOPEDICS)
ऑर्थोपेडिक कैंसर सर्जन
डॉ. अभिराम जी ए
MD (NUCLEAR MEDICINE)
कंसल्टेंट, न्यूक्लियर मेडिसिन
डॉ. अविनाश तिवारी
MD (Palliative Medicine)
पेन व पैलिएटिव मेडिसिन विशेषज्ञ
डॉ कल्याण पांडेय
MBBS, MS, MCh
कैंसर सर्जन
डॉ रमेश कोठारी
MBBS, MD, DMRT
रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट
डॉ सतीष देवांगन
MBBS, MD
रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट
डॉ. राहुल गोयल
MD(ANAESTHESIA) FNB
क्रिटिकल केयर स्पेशलिस्ट (ICU)
डॉ. फिरोज मेमन
MD (MEDICINE), इकोकार्डियोलॉजिस्ट
एवं नॉन इनवेसिव कार्डियोलॉजिस्ट
डॉ शुभम असरानी
MBBS, MD (Radiology)
रेडियोलॉजिस्ट
डॉ पार्वती जोशी
MD (Path), PGI Chandigarh
हिस्टोपैथोलॉजिस्ट
डॉ योशिता मूलचंदानी
MD (ANAESTHESIOLOGY)
क्रिटिकल केयर एवं एनेस्थिसिया
डॉ सरीन कृष्णा
MD (NUCLEAR MEDICINE)
कंसल्टेंट, न्यूक्लियर मेडिसिन
डॉ. नलनेश शर्मा
BPT, MS (CLINICAL REHABILITATION)
फिजियोथेरेपिस्ट
NABH, छत्तीसगढ़ शासन, FCI, NMDC, SECL, CSEB, NTPC, रेलवे, SAIL, BSP, ESIC, BSKY (बीजू स्वास्थ्य कल्याण योजना, ओडिशा), आयुष्मान भारत, खूबचंद बघेल एवं सभी इंश्योरेन्स संस्थाओं से मान्यता प्राप्त ।
संजीवनी कैंसर हॉस्पिटल, दावड़ा कॉलोनी, पचपेड़ी नाका, रायपुर (छ.ग.)
0771-4081010, 7389905010
scch.co.in

जीवन के कठिनतम पलों में आपके साथ..
देते खुशियों की सौगात.

RAMKRISHNA CARE HOSPITALS

मध्यभारत में सबसे अग्रणी,
सबसे सफल...
150+
अत्याधुनिक रोबोटिक सर्जरीज़

Da Vinci 4th Gen
ULTRA-ADVANCED ROBOTIC SURGERY

रोबोटिक सर्जरी के फायदे

- विशेषज्ञ द्वारा पूर्णत: नियंत्रित
- छोटा चीरा
- न्यूनतम जटिलताएं
- न्यूनतम रक्तस्त्राव
- शीघ्र स्वास्थ्य लाभ

डॉ. संदीप दवे
Senior laparoscopic & Robotic Surgeon

डॉ. जवाद नकवी
MS (Lap. Surgeon)

डॉ. सिद्धार्थ तामस्कर
MS (Lap. Surgeon)

डॉ. विक्रम शर्मा
MS (Lap. Surgeon)

श्रेष्ठता, विश्वसनीयता और भरोसे का प्रतीक

रामकृष्ण केयर अस्पताल

पचपेड़ी नाका, धमतरी रोड, रायपुर

• अपॉइंटमेंट: 07716165656

• इमरजेंसी : 1800 843 0000